सत्यकथा

अगस्त 2019
₹ 40.00

Vikas Bha

सीकर (राजस्थान)
एक धूर्त का
बैंड, बाजा, बारात

मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)
शक का खूनी
जलजला

हावड़ा (पश्चिम बंगाल)
जादूगर का
आखिरी जादू

हल्द्वानी (उत्तराखंड)
दलदल में
डूबी जन्नत

लुधियाना (पंजाब)
वासना का पानी
पी कर बनी पतिहंता

सत्यकथा

अगस्त 2019

सब्सक्रिप्शन और सर्कुलेशन के लिए संपर्क करें : दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा.लि. ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055 फोन : 91-11-41398888 Extn. No. 119, 221, 264 **टोल फ्री नं.** 18001038880 (सोमवार से शनिवार 10 बजे से शाम 6 बजे तक) **मोबाइल/एसएमएस/व्हाट्सऐप नंबर :** 08588843408. **मुंबई कार्यालय :** बी-3, वडाला उद्योग भवन, नायगांव क्रौस रोड, वडाला, मुंबई. फोन : 91-22-24122661/43473050

Vikas Prabhu

- इस अंक में -

एक धूर्त का बैंड, बाजा, बारात

शादीशुदा इमरान महाधूर्त इंसान था. 2 बच्चों और पत्नी के होते हुए भी उस ने फेसबुक के माध्यम से सुमन से दोस्ती की और फिर ब्राह्मण बन कर उस से ऐसी शादी की, जिस में मातापिता, घर वाले और बाराती सभी किराए के थे. लेकिन पुलिस ने...

06. **एक धूर्त का बैंड, बाजा, बारात**
प्रतिनिधि

24. **शक का खूनी जलजला**
प्रकाश पुंज

42. **जादूगर का आखिरी जादू**
निखिल अग्रवाल

50. **8 हजार करोड़ का आदर्श फ्राड**
निखिल अग्रवाल

62. **दलदल में डूबी जन्नत**
प्रकाश पुंज

70. **साली की चाल में जीजा हलाल**
सुरेशचंद्र मिश्र

82. **साजिश पड़ी भारी**
अशोक शर्मा

88. **खूनी नशा**
हरमिंदर खोजी

96. **हवस का शिकार पति**
सुरेशचंद्र मिश्र

108. **बेरहम बदला**
विजय माथुर

'सत्यकथा' में प्रकाशित कहानियों में कुछ कथा पात्रों तथा स्थानों के नाम काल्पनिक होते हैं. जिन कथाओं में काल्पनिक नाम-स्थान हैं, उन का उल्लेख कथा के साथ होगा. —संपादक

वार्षिक ग्राहक : subscription@delhipress.in टिप्पणी, सूचना, समाचार, रिपोर्ट, जौब्स : manoharkahaniyanmonthly@gmail.com

Vikas Bhadu

42

जादूगर का आखिरी जादू

मशहूर जादूगर चंचल लाहिड़ी उर्फ मैंड्रेक अपने जादू से जादूगरी की दुनिया में मशहूर हो गए थे. उन का अंतिम खेल भी चौंका देने वाला था. उन्हें हाथपैर बंधवा कर एक बौक्स में हुगली नदी में उतरना था. लेकिन इस में कोई चूक हो गई और...

62

दलदल में डूबी जन्नत

सोनू पर्यटकों के लिए लड़कियों की दलाली करता था, उस ने जिस से भी शादी की, इसी मकसद से की. जन्नत की बहन रुखसार से भी सोनू ने इसीलिए शादी की थी. बाद में रुखसार रामनगर में अलग मकान ले कर रहने लगी थी. लेकिन जन्नत...

118. **वासना का पानी पी कर बनी पतिहंता**
साहिल कपूर

126. **जुए का जहर**
वेणीशंकर पटेल 'ब्रज'

134. **जाकिर मूसा : एक रक्तबीज का अंत**
शैलेंद्र कुमार 'शैल'

142. **नशेड़ी बेटे की करतूत**
शैलेंद्र सिंह

स्थाई स्तंभ

20. अंतरराष्ट्रीय खबरें
36. सितारों की हलचल

जानकारी

61. मुंह ताकते रह गए हैकर

आवश्यकता है: राजधानियों और बड़े शहरों में 'मनोहर कहानियां/सत्यकथा' के लिए फ्रीलांस संवाददाताओं की. संपर्क करें: editor@delhipress.biz

शोभिका मीडिया प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेशनाथ द्वारा ई-8 झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीएसपीसी प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, फरीदाबाद, हरियाणा-121003 से मुद्रित. संपादक : परेशनाथ (वौ-4, अंक-9)
संपादकीय कार्यालय : ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055
संपादकीय विभाग : पुष्कर पुष्प. फोन : 08527750077, 08527666775

एक धूर्त का बैंड, बाजा, बारात

प्रतिनिधि

Vikas Bhadu

धूर्त किस्म के इमरान ने फेसबुक पर खुद को ब्राह्मण बता कर सीकर की युवती सुमन से न केवल दोस्ती की, बल्कि उस के घर वालों की मरजी से शादी भी कर ली. इस के लिए उस ने रिश्तेदार, बाराती सभी किराए पर एकत्र किए, जिन की कीमत चुकाई सुमन के पिता ने. आखिर...

25 मई, 2019 की बात है. राजस्थान के जिला सीकर के एसपी डा. अमनदीप सिंह कपूर से मिलने के लिए एक अधेड़ उम्र का आदमी उन के औफिस पहुंचा. उस आदमी ने अपना नाम सुशील कुमार शर्मा निवासी सीकर शहर बताया. सुशील ने करीब आधे घंटे तक एसपी को अपनी दास्तान सुनाई.

सुशील की बातें सुन कर एसपी डा. कपूर हैरान रह गए. उन्होंने कहा कि मेरी पुलिस की अब तक की नौकरी में पहली बार इस तरह का अनोखा मामला सामने आया है. आप पुलिस थाने जा कर रिपोर्ट दर्ज करवा दीजिए. हम उस धोखेबाज और उस के साथियों का पता लगा कर कानून के मुताबिक सजा दिलवाएंगे.

सुशील को आश्वासन देने के बाद एसपी डा. कपूर ने उसी समय कोतवाली प्रभारी को फोन कर कहा कि आप के पास सुशील कुमार जी आएंगे. उन की रिपोर्ट दर्ज कर किसी होशियार अधिकारी से पूरे मामले की जांच कराइए और इस मामले में जो भी प्रोग्रेस हो, मुझे बताते रहिए.

एसपी की बातें सुन कर सुशील कुमार को कुछ उम्मीद जगी. एसपी साहब से मिलने के बाद वह सीधे थाने पहुंच गए. वहां मौजूद थानाप्रभारी श्रीचंद सिंह को उन्होंने अपना परिचय देते हुए कहा कि उन्हें एसपी साहब ने भेजा है.

थानाप्रभारी ने सुशील को सम्मान से बिठाया, फिर पूछा कि आप लिखी हुई रिपोर्ट लाए हैं या यहां बैठ कर लिखेंगे. सुशील ने बताया कि वह पहले ही रिपोर्ट दर्ज कराने के लिए तहरीर लिख कर लाए हैं. इसी के साथ सुशील ने अपने बैग से 2-3 कागज निकाल कर थानाप्रभारी को दे दिए.

छायांकन: मौडलिंग

Vikas Bhadu

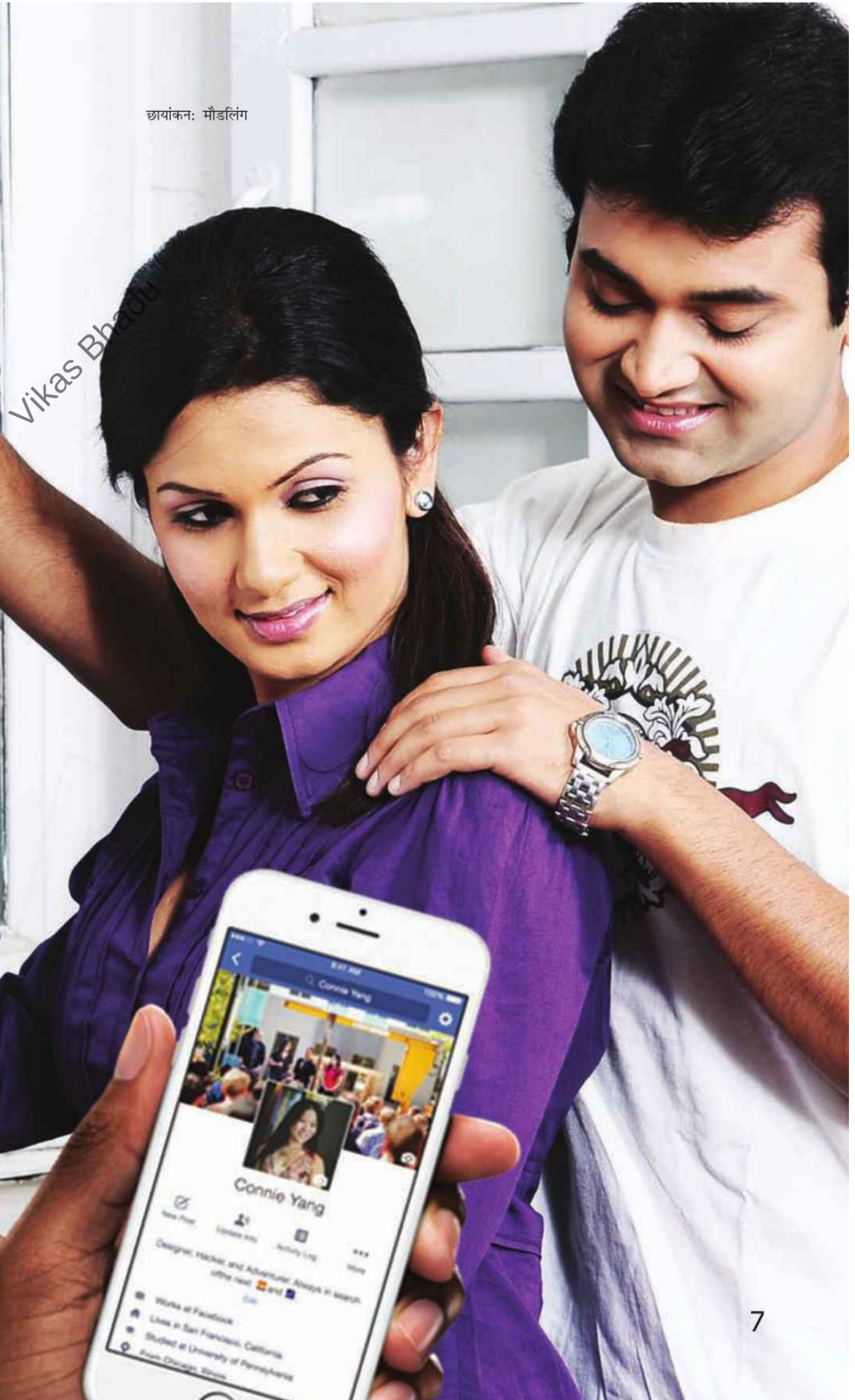

थानाप्रभारी श्रीचंद सिंह ने तसल्ली से उन कागजों को पढ़ा. फिर अपने मातहत अधिकारी को बुला कर उन्हें कागज सौंपते हुए एफआईआर दर्ज करने को कहा. जब तक कंप्यूटर पर रिपोर्ट दर्ज करने की कारर्रवाई चलती रही, तब तक थानाप्रभारी ने फौरी तौर पर सुशील से केस संबंधी कई बातें पूछ लीं, ताकि मुलजिमों को जल्द पकड़ा जा सके.

Vikas Bhadu

रिपोर्ट दर्ज करने की कारर्रवाई में तकरीबन एक घंटे का समय लग गया. एफआईआर की एक कौपी सुशील शर्मा को दे कर थानाप्रभारी ने भरोसा दिया कि अपराधियों को जल्द से जल्द पकड़ने का प्रयास किया जाएगा.

सुशील कुमार की ओर से पुलिस थाने में दर्ज कराई गई रिपोर्ट का लब्बोलुआब यह था कि इमरान नाम के युवक ने फरजी तरीके से ब्राह्मण बन कर कबीर शर्मा के नाम से उन की बेटी सुमन से धोखे से शादी रचा ली थी.

शादी के लिए इमरान ने फरजी परिवार और फरजी ही बाराती तैयार किए थे. ये सभी लोग कबीर की शादी में माथे पर तिलक छाप लगा कर ब्राह्मण के रूप में शामिल हुए थे.

रिपोर्ट दर्ज होने के बाद पुलिस ने जांचपड़ताल शुरू की. सुशील शर्मा और उन के परिवार के बयान और प्रारंभिक जांच में सामने आया कि कुछ साल पहले इमरान भाटी ने कबीर शर्मा के नाम से फरजी फेसबुक आईडी बनाई थी. फेसबुक पर उस ने सीकर की रहने वाली युवती सुमन शर्मा से दोस्ती की. उस समय सुमन सीकर जिले के एक निजी कालेज में पढ़ती थी.

फेसबुक पर दोस्ती हुई तो दोनों में चैटिंग करने लगे. बाद में मोबाइल पर भी बातें होने लगीं. सुमन को कबीर की बातों से यह अहसास नहीं हुआ कि वह किसी दूसरी जातिधर्म का है.

सुमन उस की बातों और उस के व्यक्तित्व से प्रभावित थी. कबीर ने इस का फायदा उठाया और सुमन को अपने प्रेमजाल में फंसा लिया. सुमन उस से प्यार करने लगी.

कबीर इस खेल में माहिर था. वह सुमन को नित नए सपने दिखाने लगा. सुमन उन सतरंगी सपनों की कल्पना में खो कर मन ही मन कबीर से विवाह करने की सोचने लगी. लेकिन वह संस्कारी युवती थी. उसे अपने मातापिता की इज्जत प्यारी थी. वह ऐसा कोई कदम नहीं उठाना चाहती थी, जिस से उस के परिवार की प्रतिष्ठा पर जरा सी भी आंच आए. इस बीच वह एक निजी कालेज में जौब करने लगी थी.

> इमरान इस खेल में माहिर था. वह कबीर शर्मा के नाम से सुमन को नित नए सपने दिखाने लगा. सुमन उन सतरंगी सपनों की कल्पना में खो कर मन ही मन उस से विवाह करने की सोचने लगी. लेकिन वह संस्कारी युवती थी. उसे अपने मातापिता की इज्जत प्यारी थी.

सुमन कालेज स्तर तक पढ़लिख चुकी थी. उस की उम्र भी शादी लायक हो गई थी. कालेज में जौब करने से वह आत्मनिर्भर भी हो गई थी. मांबाप अब उस के हाथ पीले करने की सोच रहे थे. इस के लिए उन्होंने अपने नातेरिश्तेदारों से भी सुमन के लिए अच्छा वर तलाशने

को कह दिया था. घर में जब सुमन की शादी के लिए लड़का देखने की बातें होने लगीं तो नवंबर 2018 में एक दिन उस ने अपने मातापिता को कबीर के बारे में बताया. सुमन ने मोबाइल पर कबीर की फोटो दिखा कर उस से शादी करने की इच्छा जताई.

Vikas Bhadu

पिता को सुमन की यह बात जरा भी बुरी नहीं लगी. उन्होंने सुमन से कहा कि अगर कबीर शर्मा उस की नजर में अच्छा और सज्जन लड़का है तो उन्हें उस से शादी करने में कोई ऐतराज नहीं है. लेकिन पहले कबीर से मिल कर उस के मातापिता, परिवार और खानदान वगैरह के बारे में पता लगाएंगे.

सुमन ने भी इस पर सहमति जता कर कहा कि मैं कबीर से आप की बात करा दूंगी. सुमन ने कबीर को फोन कर अपने पिता की इच्छा के बारे में बता दिया. इस के 1-2 दिन बाद ही कबीर ने सुशील शर्मा को फोन कर खुद का परिचय दिया.

सुशील के पूछने पर कबीर ने खुद को जयपुर निवासी गौड़ ब्राह्मण बताया. कबीर ने विदेश में खुद का बिजनैस होने का हवाला दे कर कहा कि वह जनवरी में जयपुर आएगा.

इस के बाद कबीर की सुशील शर्मा से 1-2 बार और बात हुई. सुमन से तो उस की प्राय: बात रोज ही बात होती थी. सुमन को भी उम्मीद थी कि परिवार की सहमति से उस की शादी उस के सपनों के राजकुमार कबीर से हो जाएगी.

इसी साल जनवरी में एक दिन जयपुर में लड़का लड़की देखने का कार्यक्रम तय हो गया. तय कार्यक्रम के मुताबिक सीकर से सुमन, उस के पिता और परिवार के अन्य लोग जयपुर के निवारू रोड पर स्थित साउथ कालोनी के एक फ्लैट पर पहुंच गए.

फ्लैट पर कबीर ने सुशील शर्मा और उन के परिवार के लोगों को अपने चाचा रामकुमार शर्मा, चाची संतोष और भतीजे मनन से मिलवाया. उस समय फ्लैट पर कई अन्य लोग भी मौजूद थे. कबीर ने उन्हें भी अपना रिश्तेदार बताया.

कबीर ने सुमन के पिता को बताया कि उस के पिता रामेश्वर शर्मा जयपुर

> सुमन को प्रेमजाल में फांसने के बाद जब इमरान को सुमन के मांगलिक होने का पता चला तो उस ने फरजी नाम, जातिधर्म व पते वाली मांगलिक दोष की जन्मपत्री बनवा कर रख ली थी. यही जन्मपत्री कबीर ने सुमन के पिता को दी थी.

में ही पीतल फैक्ट्री के पास शास्त्रीनगर में रहते हैं. पिता ने दूसरी शादी की है. सौतेली मां के कारण पिता उस के पास नहीं आते.

उसे यह फ्लैट चाचा रामकुमार ने दिलवाया है. कबीर के पिता के दूसरी शादी करने और अलग रहने पर सुशील शर्मा को कुछ शंका हुई कि रामेश्वरजी शादी में शरीक होंगे या नहीं. यह शंका जताने पर कबीर ने सुशील शर्मा को आश्वस्त किया कि वह उन्हें मना लेगा.

बातचीत में सुशील शर्मा को बेटी सुमन के लिए कबीर उपयुक्त लड़का लगा. ब्राह्मण कुल के कबीर के

Vikas Bhadu

इमरान : फरेब का सहारा ले कर शादी

चाचाचाची और अन्य रिश्तेदारों से मिल कर वह उन के घरपरिवार के बारे में संतुष्ट हो गए.

फिर भी सुशील शर्मा ने कबीर की जन्मकुंडली का मिलान कराने की बात कही. कबीर ने पहले से तैयार अपनी जन्मकुंडली सुमन के पिता को सौंप दी. दूसरी तरफ, कबीर के रिश्तेदार भी सुमन को अपने घर की बहू बनाने को तैयार हो गए.

सुशील शर्मा ने सीकर आ कर कबीर की जन्मकुंडली पंडित को दिखाई तो उस में कोई दोष नजर नहीं आया. जन्मपत्री के मुताबिक कबीर मांगलिक था और सुमन भी मांगलिक थी. मांगलिक युवती की शादी मांगलिक युवक से ही हो सकती है, यह बात इमरान उर्फ कबीर को पता थी.

सुमन को प्रेमजाल में फांसने के बाद जब इमरान को सुमन के मांगलिक होने का पता चला तो उस ने फरजी नाम, जातिधर्म व पते वाली मांगलिक दोष की जन्मपत्री बनवा कर रख ली थी. यही जन्मपत्री कबीर ने सुमन के पिता को दी थी.

जन्मपत्री का मिलान होने पर सुशील शर्मा ने कबीर से शादी की बात आगे बढ़ाई. इस पर कबीर ने कहा कि हमारे सारे रिश्तेदार जयपुर में रहते हैं. वे सब सीकर नहीं आ सकते, आप को जयपुर आ कर शादी करनी होगी. जयपुर में शादी की सारी व्यवस्था हम लोग कर देंगे. आप केवल पैसों और जेवरों का इंतजाम कर लेना. सुशील शर्मा चाहते तो यही थे कि बेटी की शादी सीकर से ही धूमधाम से हो लेकिन वरपक्ष की इच्छा को देखते हुए वह जयपुर में शादी करने को तैयार हो गए.

बातचीत के बाद तय हुआ कि 12 फरवरी को जयपुर में सगाई करेंगे और इस के अगले ही दिन विवाह का सही मुहूर्त है, इसलिए 13 फरवरी की शादी तय हो गई.

कुछ दिन बाद कबीर ने सुशील शर्मा को जयपुर बुला कर शादी के लिए लोहामंडी में मातेश्वरी रिसोर्ट दिखाया. सुशील शर्मा को व्यवस्था ठीकठाक लगी तो उन्होंने 12 और 13 फरवरी के लिए रिसोर्ट बुक करवा दिया. शादी के लिए बैंड, कैटरिंग, सजावट, घोड़ी, पंडित, वीडियो फोटोग्राफर और अन्य सारी व्यवस्थाएं करने की जिम्मेदारी कबीर ने ले ली थी.

शादी में कबीर की ओर से छपवाए गए शादी के कार्ड में उस के पिता का नाम रामेश्वर शर्मा और दादा का नाम भागीरथ शर्मा लिखा था. कार्ड में जयपुर के पीतल फैक्ट्री शास्त्रीनगर निवारू रोड का पता और 2 मोबाइल नंबर भी लिखे हुए थे.

इमरान की शादी में फरजी रिश्तेदार

Vikas Bhadu

12 फरवरी, 2019 को जयपुर के मातेश्वरी रिसोर्ट में पारंपरिक रीतिरिवाज से कबीर और सुमन की सगाई हो गई. रिंग सेरेमनी में सुमन और कबीर ने एकदूसरे को अंगूठी पहनाई. सगाई के दस्तूर में कबीर के वे सारे रिश्तेदार शामिल हुए, जो जनवरी में फ्लैट में मिले थे. वधू पक्ष से भी सीकर से कई लोग वहां पहुंचे थे.

इस के दूसरे ही दिन 13 फरवरी, 2019 को इसी रिसोर्ट में धूमधाम से कबीर और सुमन की शादी हो गई. वधूपक्ष के लोगों ने वरपक्ष के रिश्तेदारों के बारे में पूछा तो किसी को कबीर का चाचा, किसी को जीजा और किसी को भतीजा बताया गया. स्टेज पर वरवधू को आशीर्वाद देने का कार्यक्रम हुआ. बाद में हिंदू रीतिरिवाज से अग्नि के समक्ष फेरे लिए गए.

धूमधाम से शादी होने पर सुमन के पिता सुशील शर्मा ने रात को ही सारी व्यवस्थाओं के बिल ले कर कबीर को 11 लाख रुपए नकद दिए. रिसोर्ट के किराए के डेढ़ लाख रुपए और खाने के करीब पौने 2 लाख रुपए अलग से दिए.

इस के अलावा उन्होंने बेटी को शादी में करीब 5 लाख रुपए की ज्वैलरी कपड़े वगैरह दिए. एकलौती बेटी होने के कारण सुशील शर्मा ने दिल खोल कर दानदहेज दिया था. वैवाहिक रस्में पूरी होने के बाद तड़के सुशील शर्मा ने बेटी सुमन को ससुराल के लिए विदा कर दिया. सुमन की ससुराल निवारू रोड पर साउथ कालोनी के उसी फ्लैट में बताई गई थी, जहां पहली बार लड़कालड़की देखने की रस्म हुई थी.

शादी के कुछ दिनों बाद सुमन अपने पीहर सीकर आ गई. दामाद कबीर शर्मा कुछ दिन बाद सीकर आया तो उस की खूब आवभगत की गई. इस दौरान कबीर ने सुशील शर्मा से कारोबार के लिए 5 लाख रुपए की आवश्यकता बताई. सुशील ने कुछ दिन पहले ही बेटी की शादी की थी, इसलिए वह पैसों की व्यवस्था नहीं कर सके.

1-2 दिन ससुराल में खातिरदारी कराने के बाद जमाई राजा कबीर जयपुर जाने की बात कह कर सुमन के साथ चला गया. बाद में कबीर फोन कर सुमन के पिता पर पैसों का इंतजाम करने का दबाव डालने लगा.

थकहार कर सुशील शर्मा ने अपने परिचित से ढाई लाख रुपए उधार लिए. यह रुपए ला कर उन्होंने घर में रख दिए और कबीर को बता दिया.

कबीर और सुमन 14 मई को सीकर आए और उसी रात करीब 3 बजे कबीर वे ढाई लाख रुपए और घर में रखे जेवर चुरा कर सुमन के साथ वहां से भाग गया.

अगले दिन सुबह जब सुशील शर्मा को दामाद और बेटी घर में नहीं मिले तो वह समझ नहीं पाए कि अचानक बिना बताए कहां चले गए.

बाद में घर में पैसे और जेवर भी गायब मिले तो उन्हें शक हुआ. उन्होंने कबीर और सुमन के मोबाइल पर काल किया, लेकिन उन के फोन स्विच्ड औफ मिले.

सुशील को बड़ा ताज्जुब हुआ. वह समझ नहीं पा रहे थे कि माजरा क्या है. 1-2 दिन इंतजार करने के बाद भी दामाद और बेटी से बात नहीं हुई तो सुशील शर्मा ने शादी में मोबाइल द्वारा खींची गई फोटो अपने परिचितों और कुछ जानकारों को दिखाईं. फोटो देख कर उन्हें जो बातें पता चलीं, उसे सुन कर उन के पैरों तले से जमीन खिसक गई.

लोगों ने बताया कि जिस युवक को आप कबीर शर्मा बता रहे हैं, उस का असली नाम इमरान भाटी है. वह सीकर के ही वार्ड 28 में अंजुमन स्कूल के पास अपने बीवीबच्चों के साथ रहता है, परिवार में पत्नी के अलावा 3 बच्चे हैं.

कबीर शर्मा के इमरान भाटी होने और फरजी जातिधर्म, नकली परिवार और बाराती बना कर फरजीवाड़े से शादी रचाने की बात पता चलने के बाद सुशील शर्मा ने 25 मई, 2019 को सीकर के एसपी डा. अमनदीप सिंह कपूर से मुलाकात की. इस के बाद ही उन की रिपोर्ट दर्ज हुई.

रिपोर्ट दर्ज होने के बाद एडिशनल एसपी डा. देवेंद्र शर्मा के नेतृत्व में पुलिस ने जांचपड़ताल शुरू कर दी. पुलिस ने सीकर शहर में इमरान भाटी के घर पहुंच कर उस के घर वालों से पूछताछ की. पता चला कि इमरान की पत्नी और तीनों बच्चे मुंबई गए हुए हैं. इमरान के मोबाइल की काल डिटेल्स भी निकलवाई गई. साथ ही उस के मोबाइल को सर्विलांस पर लगा दिया गया.

जांचपड़ताल में पता चला कि इमरान सीकर में जयपुर रोड स्थित एक कार शोरूम में मार्केटिंग की नौकरी करता था. बाद में पैसों की हेराफेरी करने पर उसे नौकरी से निकाल दिया गया था. कार शोरूम में नौकरी करते हुए भी उस ने एक युवती का एमएमएस बना लिया था. फिर उसे धमकी दे कर मोटी रकम ऐंठी थी. बदनामी के डर से युवती ने पुलिस में रिपोर्ट दर्ज नहीं कराई थी.

> सुशील शर्मा ने शादी में मोबाइल द्वारा खींची गई फोटो अपने परिचितों और कुछ जानकारों को दिखाईं. फोटो देख कर उन्हें जो बातें पता चलीं, उसे सुन कर उन के पैरों तले से जमीन खिसक गई.

इमरान की शादी सन 2005 में सीकर के रोशनगंज मोहल्ले में रहने वाली सईदा से हुई थी. सईदा पढ़ीलिखी है. उस के 3 बच्चे हैं. बड़ा बेटा 13 साल, उस से छोटा 11 साल का और सब से छोटी बेटी 7 साल की है. इमरान के पिता इकबाल भाटी ने पुलिस को बताया कि

Vikas Bhadauria

12 फरवरी, 2019 को जयपुर के मातेश्वरी रिसोर्ट में पारंपरिक रीतिरिवाज से कबीर और सुमन की सगाई हो गई. रिंग सेरेमनी में सुमन और कबीर ने एकदूसरे को अंगूठी पहनाई.

Vikas Bhadu

इस साल फरवरी में इमरान ने कहा था कि उस का ट्रांसफर जयपुर हो गया है, इसलिए अब वह जयपुर में ही रहेगा.

जयपुर जाते समय इमरान उन से 4 लाख रुपए ले कर गया था. इकबाल भाटी ने बताया कि उन के बेटे इमरान ने सीकर की सुमन शर्मा से जयपुर में दूसरी शादी कर ली, इस का पता उन्हें बाद में लगा था. इमरान की पत्नी सईदा और उस के पीहर व ननिहाल वालों को भी इस बात की जानकारी मिल गई थी.

पति द्वारा दूसरी शादी करने का पता चलने पर सईदा मुंबई में अपने पीहर वालों के पास चली गई. उस ने यह बात मायके वालों को बताई तो उन्हें भी उस की इस करतूत पर हैरत हुई.

सईदा ने बताया कि उस के लिए इमरान मर चुका है. उस ने मेरा और बच्चों का जीवन बरबाद कर दिया. जातिधर्म बदल कर फरजी तरीके से दूसरी शादी कर के उस ने अब हमें कहीं मुंह दिखाने लायक नहीं छोड़ा.

बेटे इमरान की करतूतें सामने आने पर पिता इकबाल भाटी ने भी उसे अपनी प्रौपर्टी से बेदखल कर दिया. जो मकान इमरान के नाम था, उसे बहू सईदा और उस के बच्चों के नाम गिफ्ट डीड करवा दिया. एक गैराज में से इमरान का हिस्सा बहू और उस के बच्चों के नाम कर दिया.

फरजीवाड़े से दूसरी शादी करने के बाद इमरान ने एक दिन सईदा को फोन कर कहा, ''मैं 40 दिन की जमात पर जा रहा हूं. इस दौरान मैं धर्म के काम में व्यस्त रहूंगा, इसलिए मुझे फोन मत करना.'' लेकिन जब बाद में सईदा को असलियत पता चली तो इमरान ने उसे फोन नहीं किया.

जांच में यह भी पता चला कि अय्याश किस्म का इमरान भाटी उर्फ कबीर शर्मा चेन स्मोकर और शराबी है. उस ने सीकर के अपने कई दोस्तों से भी लाखों रुपए उधार ले रखे थे. वह देर रात तक मोबाइल पर लड़कियों से चैटिंग

करता था. रात को शराब पी कर घर आने पर पत्नी सईदा और मां से झगड़ा करता था.

जातिधर्म बदल कर फरजीवाड़े से शादी करने के मामले में पुलिस किसी भी आरोपी को नहीं पकड़ पाई थी, इस से लोगों में आक्रोश बढ़ता जा रहा था. सर्वसमाज के लोग पीड़ित परिवार को न्याय दिलाने के लिए लामबंद हो गए. 31 मई को सर्वसमाज के प्रमुख लोगों ने सीकर में बैठक कर कहा कि मामले में जल्द काररवाई नहीं की गई तो सड़क पर उतरना पड़ेगा.

जनाक्रोश को देखते हुए पुलिस ने जांचपड़ताल तेज कर दी. आरोपी इमरान उर्फ कबीर शर्मा की तलाश में 4 पुलिस टीमें जयपुर, पुणे, दिल्ली व मुंबई भेजी गईं. पुलिस ने कई लोगों से इमरान के संभावित ठिकाने के बारे में पूछताछ की, लेकिन उस का सुराग नहीं मिला.

वह बीचबीच में मोबाइल बंद रख कर अपने ठिकाने बदलता रहा, जिस से पुलिस को उस की लोकेशन नहीं मिल पा रही थी. सुमन का मोबाइल फोन भी बंद था. इमरान अपने परिवार, किसी दोस्त से फोन, इंटरनेट या सोशल साइट्स के जरिए भी संपर्क नहीं कर रहा था.

एडिशनल एसपी डा. देवेंद्र कुमार शर्मा और सीओ सिटी सौरभ तिवाड़ी के नेतृत्व में पुलिस टीमें लगातार भागदौड़ कर इमरान के बारे में सूचनाएं हासिल कर रही थीं, लेकिन उस का पता नहीं चल पा रहा था. पुलिस ने इमरान की शादी में ब्राह्मण के रूप में नकली बाराती बन कर पहुंचे लोगों को भी तलाश कर पूछताछ की गई.

इस बीच 2 जून को इस मामले में उस वक्त नया मोड़ आ गया, जब सुमन के 2 वीडियो यूट्यूब पर अपलोड किए गए, जो कुछ ही देर में वायरल हो गए. वीडियो में सुमन ने एक दल और अपने परिवार वालों से खुद और इमरान की जान को खतरा बताया था. सुमन ने यह भी कहा कि मैं इमरान को 6 साल से जानती हूं. यह भी जानती हूं कि वह शादीशुदा है और उस के 3 बच्चे हैं.

इन में एक वीडियो 8.21 मिनट का और दूसरा 7.40 मिनट का था. दोनों वीडियो में 17 कट थे. वीडियो देख कर महसूस हो रहा था कि जैसे सुमन कोई लिखी हुई स्क्रिप्ट पढ़ रही है. इस से यह माना गया कि सुमन पर दबाव बना कर यह वीडियो बनाया और जारी किया गया.

वीडियो में सुमन का कहना था कि वह 18 मार्च को एएसपी के सामने पेश हुई थी, वहां परिजनों ने उस से एक प्रार्थनापत्र दिलवाया था. लेकिन असल में एएसपी 18 मार्च को खाटू श्यामजी के मेले में ड्यूटी पर थे और अगले दिन 19 मार्च को वह अवकाश पर थे. इस से सुमन की कहानी में झूठ पकड़ में आ गया.

पुलिस ने वायरल हुए वीडियो के संबंध में भी जांच शुरू कर दी, लेकिन वीडियो से उन के ठिकाने के बारे में कोई अनुमान नहीं लग सका. वीडियो वायरल होने के बाद सर्वसमाज और भगवा रक्षा वाहिनी ने 3 जून, 2019 को मामले में जल्द गिरफ्तारी की मांग करते हुए तहसीलदार को मुख्यमंत्री के नाम एक ज्ञापन दिया. ज्ञापन में कहा गया कि आरोपियों ने युवती को

Vikas Bhadauria

डराधमका कर झूठा वीडियो वायरल करवाया है. लगातार भागदौड़ के बाद पुलिस को इमरान के मुंबई में होने का पता चला.

मुंबई में पहले से ही सीकर पुलिस की टीम इमरान और सुमन की फोटो ले कर होटलों व अन्य स्थानों पर उस की तलाश में जुटी हुई थी.

पुलिस को पता चला कि 3 व 4 जून की रात इमरान अपनी बीवी के साथ मुंबई के पालघर इलाके में नियामतनगर के एक फ्लैट पर आएगा. पुलिस ने उस फ्लैट पर निगरानी रखी.

रात करीब 2 बजे इमरान जब सुमन के साथ उस फ्लैट पर पहुंचा तो पुलिस ने दोनों को हिरासत में ले लिया. यह फ्लैट इमरान के एक परिचित का था. पुलिस दल 4 जून की सुबह दोनों को ले कर सीकर के लिए रवाना हो गई.

पुलिस पूछताछ में इमरान ने बताया कि 15 मई, 2019 को सीकर से भागने के बाद वे दोनों दिल्ली चले गए. दिल्ली में काफी पैसे खर्च हो गए थे. बाद में सुमन को साथ ले कर इमरान अपने दोस्त के पास शरण लेने के लिए पुणे चला गया. लेकिन पुणे में वह दोस्त नहीं मिला. तब इमरान अपने सौतेले भाई की पत्नी के पास मुंबई के नियामत नगर आ गया.

सौतेले भाई की पत्नी इन दोनों के आने से परेशान हो गई. इस पर इमरान और सुमन सुबह जल्दी उस के फ्लैट से निकल जाते और आधी रात के बाद वापस आते थे. दिन में वे रेलवे स्टेशन पर छिप कर रहते और शाम को किराए का मकान तलाशते थे.

इस बीच इमरान को सुमन के पिता की ओर से पुलिस में मुकदमा दर्ज कराने का पता चल गया था. इमरान ने खुद को बचाने के लिए सुमन से 6 पेज में वे सारी बातें लिखवाईं जो उस के पक्ष में हो सकती थीं. इस के बाद उस ने सुमन को डराधमका कर दोनों वीडियो बनवाए.

इमरान ने कई बार वीडियो रुकवा कर उस से अपने मनमुआफिक बातें बुलवाईं. वीडियो बनवा कर इमरान ने ही यूट्यूब पर अपलोड कर दिए. फिर अपने दोस्तों को लिंक शेयर कर वीडियो वायरल करा दिए. दोनों वीडियो पुणे में बनाए गए थे.

सुमन ने पुलिस को बताया कि इमरान उसे डराधमका कर ले गया था. पुलिस को सुमन के बैग से 6 पेज की वह स्क्रिप्ट भी मिल गई जो इमरान ने वीडियो बनाने के लिए उस से लिखवाई थी. सुमन के पास जेवर व अन्य दस्तावेज भी मिल गए. बाद में सुमन को उस की इच्छा पर मां के साथ भेज दिया गया.

6 जून, 2019 को पुलिस ने इमरान को अदालत में पेश कर 4 दिन के रिमांड पर लिया. रिमांड के दौरान पूछताछ में उस ने बताया कि जयपुर में फरजी ब्राह्मण परिवार और रिश्तेदारों की व्यवस्था करने के लिए उस ने एक इवेंट कंपनी को ठेका दिया था. इवेंट कंपनी के मालिक रामकुमार शर्मा को ही उस ने अपना चाचा बना कर सुमन के परिजनों के सामने पेश किया था.

सगाई और शादी में भी रामकुमार ने ही कबीर के रिश्तेदारों के नाम पर किराए के लोगों की व्यवस्था की और उन्हें किराए के ही सूटबूट पहना दिए. इन में किसी को जीजा, किसी को मामा और फूफा बताया गया.

Vikas Bhadauria

सुमन ने पुलिस को बताया कि इमरान उसे डराधमका कर ले गया था. पुलिस को सुमन के बैग से 6 पेज की वह स्क्रिप्ट भी मिल गई जो इमरान ने वीडियो बनाने के लिए उस से लिखवाई थी. सुमन के पास जेवर व अन्य दस्तावेज भी मिल गए.

Vikas Bhadauria

पूछताछ में इमरान से पता चला कि सुमन परिवार में एकलौती थी, इसलिए उस की नजर सुमन के मातापिता की संपत्ति पर थी. इमरान ने पहली बीवी सईदा से पीछा छुड़ाने के लिए फरवरी में जयपुर जाने से पहले खुद के नाम की संपत्ति सईदा और बच्चों के नाम कर दी थी. इमरान की करतूतों का ही परिणाम था कि ईद वाले दिन वह अपने शहर में पुलिस की गिरफ्त में था, लेकिन ईद पर उस से मिलने के लिए कोई नहीं आया.

पुलिस ने 7 जून, 2019 को सुमन शर्मा के बयान अदालत में मजिस्ट्रैट के समक्ष दर्ज कराए. बयान में उस ने अपहरण और शादी से पहले दुष्कर्म करने की बात कही. यह भी कहा कि हिंदू रीतिरिवाज से शादी करने के बाद इमरान उसे दिल्ली ले गया, वहां निजामुद्दीन में एक मसजिद में जबरन निकाह भी किया. इमरान ने उस पर जबरन धर्म बदल कर अपने साथ रहने का दबाव बनाया.

बयान में उस ने कहा कि 15 मई की रात इमरान ने साथ चलने को कहा तो उस ने मना कर दिया था. इस पर इमरान ने धमका कर कहा कि तूने मुझ से शादी की है, अपराध में तू भी बराबर की भागीदार है. मेरे साथ तू भी जेल जाएगी. इस के बाद डराधमका कर घर से जेवर और नकदी निकाल कर वे दोनों रात करीब 3 बजे चले गए थे.

सुमन ने बयान में कहा कि इमरान से उस का परिचय 6 साल पहले तब हुआ, जब वह सीकर जिले के लक्ष्मणगढ़ में पढ़ाई करती थी. इमरान ने जयपुर में एक होटल में ले जा कर उस के साथ दुष्कर्म किया था. बाद में भी उस ने यह काम कई बार किया था.

बयानों के आधार पर पुलिस ने सुमन का मैडिकल परीक्षण कराया. इस में दुष्कर्म की पुष्टि हुई. नतीजतन मुकदमे में दुष्कर्म की धाराएं भी जोड़ दी गईं. केस की जांच भी एसआई अमित कुमार से बदल कर थानाप्रभारी श्रीचंद सिंह को सौंप दी गई.

पुलिस ने 9 जून, 2019 को इमरान उर्फ कबीर शर्मा का पोटेंसी टेस्ट कराया. इस में वह पूरी तरह स्वस्थ और सक्षम पाया गया. पुलिस ने जयपुर में उस होटल पर पहुंच कर भी जांच-पड़ताल की, जहां इमरान ने युवती के साथ दुष्कर्म किया था. सुमन और इमरान के फोन नंबरों की काल डिटेल्स की भी जांच की गई.

रिमांड अवधि पूरी होने पर पुलिस ने 10 जून, 2019 को इमरान उर्फ कबीर शर्मा को अदालत में पेश कर फिर से 2 दिन के रिमांड पर लिया. पुलिस ने इमरान से फरजी रिश्तेदारों और बारातियों के बारे में पूछताछ की. उसे शादी का वीडियो दिखा कर उन की पहचान कराई गई. कथा लिखे जाने तक पुलिस मामले की जांच कर रही थी. ●

—कथा में सुशील कुमार शर्मा और सुमन शर्मा परिवर्तित नाम हैं

नार्वे का बोरमुंड चर्च

VikasBhadu

750 साल पहले लकड़ी के बने इस चर्च को अब संग्रहालय में बदल दिया गया है, लेकिन इस की खासियत यह है कि अमेरिका और जर्मनी में इस की नकल कर के ऐसा चर्च बनाने की कोशिश की गई, लेकिन यह कोशिश नाकाम रही.

भारत के आगरा में स्थित ताजमहल के मामले में भी यही हुआ. देश में कई जगहों पर ताजमहल की नकल कर के ऐसी इमारत बनाने की कोशिश की गई लेकिन ताजमहल नहीं बन सका. हां, संगमरमर से छोटे ताजमहल बना कर पर्यटकों को बेचने का धंधा खूब फलाफूला. आगरा के हजारों कारीगर और व्यवसायी शाहजहां द्वारा बनवाए गए विश्वप्रसिद्ध ताजमहल की अनुकृति बना बेच कर अपनी आजीविका कमा रहे हैं.

बहरहाल, नार्वे में स्थित इस चर्च की खासियत इस का डिजाइन है, जिसे क्यूब के अंदर क्यूब कहा जा सकता है. इस के भीतरी क्यूब उन खंभों से बने हैं, जो जमीन से ले कर छत तक जाते हैं. इस अनूठे चर्च के डिजाइन पर नार्वे के फाना, जर्मनी के हाइंकली, अमेरिका के साउथ डकोटा, वाशिंगटन आईलैंड और कनेक्टिकट में भी चर्च बनाए गए. लेकिन इस चर्च जैसी बात किसी में नहीं आ सकी. ❐

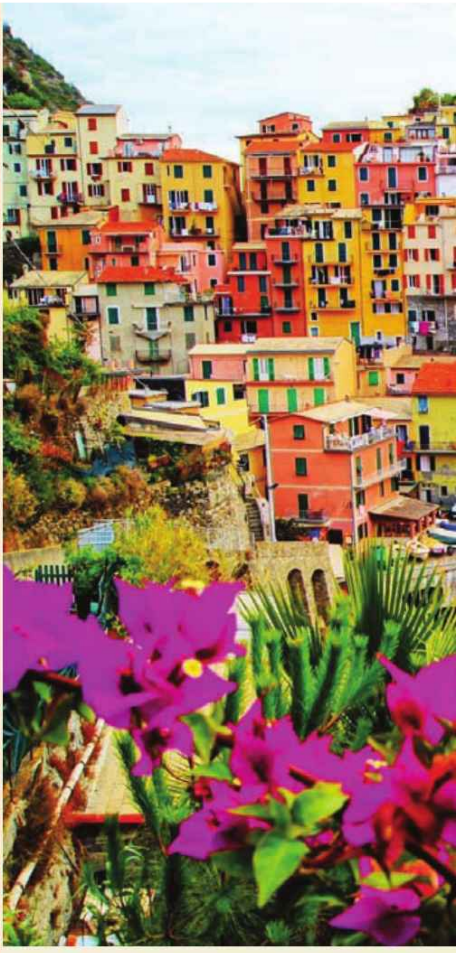

आज के मशीनी युग में मुश्किल से मुश्किल काम बड़ी आसानी से और कम समय में हो जाता है. लेकिन हम उस युग की कल्पना करें, जब न तो बिजली थी और न मशीनें. काम तो तब भी सारे होते थे, लेकिन श्रम बहुत करना होता था. ऊपर से विदेशी आक्रांताओं का डर अलग से. वह समय वाकई आशंकाओं से भरा होता था.

यहां आप जिस फोटो को देख रहे हैं, वह पश्चिमी इटली के सिंक टेरे का है, जिसे दुनिया भर में सब से

Vikas Bhadu

इटली का सिंक टेरे

कलरफुल माना जाता है. इस फोटो को देख कर सोचा जा सकता है कि पहाड़ों पर ऐसे मकान कैसे बनाए गए होंगे, वह भी सदियों पहले.

संभवत: बसने के लिए इस जगह का चुनाव विदेशी हमलावरों से बचने के लिए किया गया होगा. सिंक टेरे का जिक्र 11वीं सदी के दस्तावेजों में भी है. तुर्कों के हमलों से बचने के लिए यहां के लोगों ने 16वीं सदी में किलों और सुरक्षित टावरों का निर्माण कराया था. सिंक टेरे का यह इलाका 5 गांवों को मिला कर बना है.

17वीं सदी से 19वीं सदी का समय इस इलाके की अर्थव्यवस्था के लिए ठीक नहीं रहा, क्योंकि रेल लाइन आने के बाद यहां से बड़े पैमाने पर पलायन हुआ था, जिस से परंपरागत उद्योग बंद हो गए और उन की जगह मशीनों ने ले ली.

1970 में पर्यटन बढ़ने से इस क्षेत्र में कुछ संपन्नता आई. पर्यटक यहां मछुआरों की रंगीन कौटेज देखने आने लगे. यहां बड़े पैमाने पर जैतून और अंगूर की फसल होती है. यह इलाका नोबेल पुरस्कार विजेता कवि इयजेनियो मोंटाले सहित अन्य तमाम कवियों के लिए प्रेरणास्त्रोत रहा है. ❒

100 वैज्ञानिकों ने खोजी क्लियर वाटर गुफा

हलके और गहरे रंगों से बनी पेंटिंग सी दिखने वाली यह फोटो मलेशिया के गुनुंग मुलुं नेशनल पार्क में स्थित दक्षिणपूर्व एशिया की सब से बड़ी गुफा क्लियर वाटर केव सिस्टम की है. कई गुफाओं वाले इस केव सिस्टम की कुल लंबाई 227 मीटर है. यह पार्क यहां पर मौजूद खास तरह की चूने की चट्टानों, गुफाओं व उन्हें तलाशने के लिए चले अभियानों के लिए जाना जाता है.

1977-78 के दौरान यहां रौयल ज्योग्राफिक सोसायटी के अभियान में 100 से अधिक वैज्ञानिकों ने 100 से अधिक वैज्ञानिकों ने 15 महीनों तक भाग लिया था. इस के अलावा यहां पर 2 और प्रमुख गुफाएं सारावाक चैंबर और डियर केव हैं. इन गुफाओं में 28 प्रजातियों की चमगादड़ें रहती हैं. ❐

देश भले ही कोई भी हो, जीवन की बेहतरी के लिए लोगों का गांव से शहरों की ओर पलायन सब जगह होता है. ताइवान के नाथुन गांव में भी यही हुआ. जिस गांव में कभी 1200 लोग रहते थे, पूरा खाली हो गया.

97 साल के पूर्व सैनिक हुआंग युंग फू के अलावा सब लोग शहरों में जा कर रहने लगे. सरकार ने भी इस गांव के खाली पड़े मकानों को

97 साल के हुआंग का करिश्मा

तोड़ने का फैसला कर लिया. हुआंग युंग फू इसी गांव में पैदा हुए थे और यहीं पर बूढ़े हुए. उन की इच्छा थी कि उन का अंतिम समय भी इसी गांव में आए.

एक दिन हुआंग ने पेंट और ब्रश लिया और खाली घरों को रंग कर चित्रकारी करनी शुरू कर दी. अपनी मेहनत और लगन से उन्होंने सारे घरों पर पेंटिंग बना दीं. इस रंगरंगीले गांव की चर्चा सुन कर पास की यूनिवर्सिटी के छात्रों ने रेनबो ग्रांडपा अभियान चला कर सरकार से इन मकानों को न तोड़ने का आग्रह किया.

सरकार ने भी उन की मांग मान ली. हुआंग अब भी तड़के 3 बजे उठ जाते हैं. दैनिक कार्यों से निवृत्त हो कर वह गांव के घरों पर बनाए चित्रों को संवारने में लग जाते हैं. अब इस गांव में उन का जीवन अंतिम समय तक ठीक से बीतेगा. यह भी संभव है कि इस गांव की खूबसूरती को देख कर लोग भी यहां रहने आ जाएं. ●

शक का खूनी जलजला

Vikas Bhadu

शक एक ऐसी बीमारी है, जिस की वजह से अच्छेखासे परिवार भी उजड़ जाते हैं. रोहताश के मन में पत्नी के चरित्र को ले कर ऐसा शक बैठ गया कि उस ने पत्नी सहित चारों बच्चों का खात्मा करने की ठान ली. फिर एक दिन...

— प्रकाश पुंज

उत्तर प्रदेश के जिला मुरादाबाद की तहसील ठाकुरद्वारा से लगभग 8 किलोमीटर दूर दक्षिण दिशा में स्थित है गांव निर्मलपुर. वैसे तो इस गांव में हर वर्ग के लोग रहते हैं, लेकिन यहां ज्यादा आबादी मुसलिम वर्ग की है. 9

जून, 2019 को रात के कोई साढ़े 10 बजे का वक्त रहा होगा. उसी समय अचानक इसी गांव में रोहताश के घर से चीखनेचिल्लाने की आवाजें आने लगीं.

चीखने की आवाज सुन कर गांव के लोग चौंक गए, क्योंकि रोहताश का घर वैसे भी गांव के पूर्व में बाहर की ओर था. लोगों ने सोचा कि रोहताश के घर में शायद बदमाश घुस आए हैं. इसलिए पड़ोसी अपनीअपनी छतों पर चढ़ कर उस के घर की स्थिति का जायजा लेने लगे. लेकिन रात के अंधेरे में कुछ भी मालूम नहीं पड़ रहा था. इसी कारण कोई भी उस के घर पर जाने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था.

रोहताश के घर से लगा हुआ उस के छोटे भाई छतरपाल का मकान था. छतरपाल का बड़ा बेटा सुनील प्रजापति अपने ताऊ के घर से चीखपुकार की आवाजें सुन कर समझ गया कि वहां कुछ तो गड़बड़ है. जानने के लिए वह

छायांकन: मौडलिंग

Vikas Bhadauria

अपनी छत पर चढ़ गया. उस ने देखा कि एक आदमी उस की ताई पर लिपट रहा है. यह देख कर वह तैश में आ गया.

वह फुरती से अपने घर की दीवार लांघ कर ताऊ रोहताश के घर में जा पहुंचा. वहां का मंजर देख कर वह डर के मारे थर्रा गया. उस वक्त उस ने देखा कि उस के ताऊ रोहताश के हाथ में कैंची है, जिस से वह ताई को मारने की कोशिश कर रहा था. वह उसी कैंची से अपने चारों बच्चों को पहले ही लहूलुहान कर चुका था.

अपने सामने खड़े शैतान बने ताऊ को देखते ही उसे डर तो लगा लेकिन फिर भी उस ने जैसेतैसे कर हिम्मत जुटाई और फुरती दिखाते हुए उस ने अपने ताऊ को दबोच लिया. उस ने ताकत के बल पर उस के हाथ से वह कैंची भी छीन कर नीचे फेंक दी.

सुनील की हिम्मत को देखते हुए पड़ोसी भी घटनास्थल पर इकट्ठे हो गए. उसी दौरान रोहताश वहां से फरार हो गया. वहां पर मौजूद लोगों ने देखा कि उस के 4 बच्चे 18 वर्षीय सलोनी, 16 वर्षीय शिवानी, 14 वर्षीय बेटा रवि और सब से छोटा 10 वर्षीय बेटा आकाश बुरी तरह से लहूलुहान पड़े हुए चीख रहे थे.

उन की नाजुक हालत देखते हुए गांव वालों के सहयोग से सुनील ने उन्हें ठाकुरद्वारा के सरकारी अस्पताल में पहुंचाया. रवि को देखते ही डाक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया.

तीनों बच्चों की बिगड़ी हालत को देखते हुए डाक्टरों ने उन्हें काशीपुर के हायर सेंटर रेफर कर दिया. काशीपुर में उन्हें एक निजी अस्पताल में भरती कराया गया, जहां पर 2 बच्चों की हालत ज्यादा नाजुक बनी हुई थी. अगले दिन ही सोमवार को इस मामले के सामने आते ही ठाकुरद्वारा पुलिस ने काशीपुर पहुंच कर घायल बच्चों की स्थिति का जायजा लिया. पुलिस ने रोहताश की पत्नी कलावती से जानकारी हासिल की.

रोहताश की पत्नी कलावती

पुलिस पूछताछ में कलावती ने बताया कि उस का पति रोहताश शराब पीने का आदी था. वह अपनी कमाई के ज्यादातर पैसे शराब पीने में ही खर्च कर देता था. वह और उस के बच्चे जब कभी भी उस से खर्च के लिए पैसों की मांग करते तो वह पैसे देने के बजाए उन्हें मारनेपीटने पर उतारू हो जाता था.

कलावती ने पुलिस को बताया कि रविवार की शाम जब पति देर रात घर वापस लौटा तो काफी नशे में था. खाना खा कर सभी लोग छत पर सो गए. रात में उठ कर रोहताश ने गहरी नींद में सोए बच्चों पर कैंची से हमला करना शुरू कर दिया. उस ने चारों बच्चों को इतनी

Vikas Bharati

Vikas Bhadu

वारदात के बाद कोतवाली के बाहर जमा लोग

बुरी तरह गोदा कि उन की आंतें तक बाहर निकल आईं.

बच्चों के चीखने की आवाज सुन कर कलावती जाग गई. उस ने बच्चों को बचाने की कोशिश की तो वह उस पर भी कैंची से हमला करने लगा. उसी दौरान किसी तरह सुनील आ गया. यदि वह नहीं आता तो बच्चों की तरह वह उस का भी यही हाल कर देता.

पुलिस ने रोहताश के भाई विजयपाल सिंह की तहरीर पर रोहताश के खिलाफ हत्या और हत्या का प्रयास करने का मुकदमा दर्ज कर लिया. मामले की विवेचना कोतवाली प्रभारी मनोज कुमार सिंह ने स्वयं ही संभाली.

कलावती से पूछताछ के बाद कोतवाली प्रभारी मनोज कुमार सिंह को पता चला कि रोहताश के परिवार की माली हालत ठीक नहीं थी. कलावती के पास बच्चों का इलाज कराने के लिए पैसे भी नहीं थे. इस स्थिति को देखते हुए कोतवाल ने उसी वक्त घायल बच्चों के इलाज के लिए 50 हजार रुपए की मदद कलावती को की. उन्होंने 50 हजार रुपए कलावती के खाते में डलवा दिए.

घटना को अंजाम देने के बाद से ही रोहताश फरार हो गया था. उस का पता लगाने के लिए 3 पुलिस टीमें गठित की गईं. पुलिस टीमें रोहताश को हरसंभव स्थान पर खोजने लगीं. लेकिन उस का कहीं भी अतापता नहीं था.

इस केस की गहराई तक जाने के लिए पुलिस ने रोहताश के परिजनों के साथसाथ उस के कुछ खास रिश्तेदारों से भी पूछताछ की. लेकिन इस पूछताछ में पुलिस के हाथ कोई ऐसा सुराग नहीं लगा, जिस के आधार पर पुलिस की जांच आगे बढ़ सके.

उसी दौरान पुलिस को पता चला कि रोहताश काफी दिनों से परेशान दिख रहा था. उसे तांत्रिकों के पास चक्कर लगाते भी देखा गया था. तांत्रिक का नाम सामने आते ही पुलिस ने कयास लगाया कि कहीं यह सब मामला तांत्रिक से ही जुड़ा हुआ तो नहीं है.

पुलिस ने उस की बीवी कलावती से इस बारे में पूछताछ की तो उस ने बताया कि उसे किसी के द्वारा जानकारी तो मिली थी कि वह आजकल किसी तांत्रिक के पास जाता है. क्यों जाता था, यह पता नहीं.

गांव के कुछ लोगों ने पुलिस को बताया कि रोहताश अकसर किसी खजाने के मिलने वाली बात कहा करता था. उस ने गांव के कई लोगों के सामने कहा था कि उसे बहुत जल्दी खजाना मिलने वाला है. उस खजाने के मिलते ही उस की सारी गरीबी खत्म हो जाएगी. लेकिन उस ने कभी भी इस बात का जिक्र नहीं किया था कि उसे खजाना किस तरह से मिलने वाला है.

सलोनी और शिवानी: पिता के हमले का शिकार बनीं

तांत्रिक की बात सामने आते ही पुलिस के सामने थाना डिलारी की घटना सामने आ गई. अब से लगभग 15 साल पहले थाना डिलारी के गांव कुरी में तांत्रिक के कहने पर एक आदमी ने अपने परिवार के 5 सदस्यों को गड़ा खजाना पाने की लालसा में इसी तरह से मौत की नींद सुला दिया था.

अब पुलिस टीम उस तांत्रिक को खोजने लगी, जिस के पास रोहताश जाता था. पर काफी प्रयास करने के बाद भी तांत्रिक का पता नहीं चला. इस के साथ पुलिस ने आरोपी रोहताश की तलाश में आसपास के गांवों में छापे मारे लेकिन कहीं भी उस के बारे में जानकारी नहीं मिली. इस के बाद पुलिस ने उस की गिरफ्तारी के लिए उस के फोटो लगे पोस्टर छपवा कर अलगअलग गांव और जिले के कई थानों में लगवा दिए थे, जिस में ईनाम की भी घोषणा की थी.

पुलिस की टीमें अपने काम में जुटी थीं. उधर अस्पताल में भरती रोहताश के दूसरे बेटे आकाश ने भी दम तोड़ दिया. इस सूचना से सारे गांव में मातम सा छा गया. कलावती पर तो जैसे पहाड़ ही टूट पड़ा था. उस के 4 बच्चों में 2 लड़के

Vikas Bhadauria

थे, जिन की इलाज के दौरान मौत हो गई थी जबकि एक बेटी की हालत अभी भी नाजुक बनी हुई थी.

उसी दिन शुक्रवार की देर शाम पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली कि रोहताश निर्मलपुर के जंगलों में छिपा है. इस सूचना पर कोतवाली प्रभारी मनोज कुमार पुलिस टीम के साथ जंगलों में पहुंचे और घेराबंदी कर रोहताश को जंगल से अपनी हिरासत में ले लिया.

पुलिस ने रोहताश से पूछताछ की तो उस ने इस वारदात के पीछे की जो कहानी बताई, वह बड़ी ही अजीबोगरीब निकली—

जिला मुरादाबाद के कस्बा ठाकुरद्वारा से लगभग 8 किलोमीटर दूर गांव निर्मलपुर में रोहताश अपने परिवार के साथ रहता था. उस के परिवार में पत्नी कलावती के अलावा 2 बेटे और 2 बेटियां थीं. रोहताश टेलरिंग का काम करता था. उस के पास खेती की ढाई बीघा जमीन भी थी. बच्चों को पढ़ाने की खातिर उसे ज्यादा पैसे कमाने की इतनी धुन थी कि टेलरिंग के काम के साथसाथ वह गांव में चौथाई पर जमीन ले कर उस में भी खेती कर लेता था.

कई साल पहले की बात है रोहताश का अपने घर वालों से जमीन को ले कर विवाद हो गया था, जिस में कलावती ने भी बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया था. लेकिन कुछ दिनों बाद ही रोहताश ने अपने घर वालों से बोलना शुरू कर दिया. यह बात कलावती को बहुत बुरी लगी.

कलावती ने पति की इस बात का विरोध किया लेकिन रोहताश ने पत्नी की बात को तवज्जो नहीं दी. फिर क्या था, इसी बात पर रोहताश और कलावती के बीच झगड़ा होने लगा. उन दोनों के पारिवारिक जीवन में खटास पैदा हो गई.

रोहताश पहले कभीकभार शराब पीता था, लेकिन पत्नी से कलह होने के बाद वह शराब का आदी हो गया. उस ने शुरू में टेलरिंग का काम सुरजननगर कस्बे में शुरू किया था,

रोहताश का भतीजा सुनील कुमार

लेकिन शराब का आदी हो जाने के बाद उस ने अपने गांव के पास स्थित कालेवाला में अपना काम शुरू कर लिया.

रोहताश के चारों बच्चे स्कूल जाने लगे थे, जिस के बाद उन की पढ़ाई और खानपान व अन्य खर्च बढ़े तो रोहताश को आर्थिक तंगी हो गई.

कालेवाला में उस ने काम शुरू किया तो वहां काम जमने में भी काफी वक्त लग गया, जिस के कारण वह परेशान रहने लगा. उन्हीं बढ़ते खर्चों के कारण उसे बीवीबच्चे भार लगने लगे थे. जब कभी भी कलावती या बच्चे

Vikas Bhadauria

Vikas Bhadu

मृतक रवि और उस का भाई आकाश (फाइल फोटो)

उस से पैसों की डिमांड करते तो वह झुंझला उठता और गुस्से में उन्हें अपशब्द भी कह देता था. कलावती उसे शराब पीने को मना करती थी लेकिन वह पत्नी की नहीं सुनता था.

इस बात से दुखी हो कर कलावती ने यह बात अपने भाई लक्खू को बताई. एक दिन लक्खू कल्याणपुर निवासी अपने बड़े बहनोई को ले कर गांव निर्मलपुर पहुंचा. उन दोनों ने रोहताश को समझाने की कोशिश की तो रोहताश ने कलावती में ही तमाम खामियां गिना दीं. उस वक्त भी उस ने कहीं भी अपनी गलती नहीं मानी थी.

उन के जाने के बाद रोहताश ने पत्नी को आड़े हाथों लिया. उस के बाद तो रोहताश ने शराब पीने की अति ही कर दी थी. वह सुबह ही घर से काम पर जाने की बात कह कर घर से निकल जाता और देर रात नशे में धुत हो कर घर पहुंचता. ज्यादा शराब पीने से उस का शरीर भी काफी कमजोर हो गया था. जिस के कारण उस के मन में हीनभावना पैदा हो गई थी.

एक बात और वह खुद को नामर्द भी समझने लगा. अपने इलाज के लिए वह कई नीमहकीमों से भी मिला. लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ. जब हकीमों से दवा लाने वाली बात कलावती को पता चली तो उस ने उसे दवा लाने से मना कर दिया. इस के बाद तो उसे अपनी पत्नी पर पूरा शक हो गया था कि उस के संबंध उस के जीजा के साथ हैं, इसी कारण वह उसे सेक्स की दवा लाने से मना करती है.

रोहताश की बेटियां काफी समझदार हो चुकी थीं, लेकिन उन्हें पढ़ाई करने की इतनी धुन थी कि उन्हें मोबाइल वगैरह से कोई लगाव नहीं था. 6 सदस्यों वाले इस घर में एक ही मोबाइल था, जो रोहताश के पास ही रहता था. जिस के कारण कलावती के किसी भी रिश्तेदार का फोन उसी के मोबाइल पर आता था.

कलावती की सब से बड़ी मजबूरी यही थी कि उसे जब किसी भी रिश्तेदार से बात करनी होती तो वह या तो सुबह ही कर सकती थी या फिर शाम को.

Vikas Bhadu

अपने ही बच्चों का हत्यारा रोहताश पुलिस हिरासत में

और रोहताश में सब से बड़ी कमी थी कि वह घर आ कर किसी के फोन आने की बात अपनी बीवी को नहीं बताता था. कई बार कल्याणपुर निवासी उस के साढ़ू ने उस की बीवी और बच्चों से बात करने की इच्छा जाहिर की, लेकिन रोहताश हमेशा ही कह देता कि अभी वह बाहर है. घर जा कर बात करा देगा.

घर जाने के बाद भी वह कोई न कोई बहाना करते हुए साढ़ू की बात नहीं कराता था. रोहताश अपने साढ़ू को गलत मान कर उस से चिढ़ने लगा था. फिर साढ़ू का बारबार फोन आने से उसे शक हो गया कि उस की बीवी के उस के साथ अवैध संबंध हैं, तभी तो वह बारबार उस से बात करना चाहता है.

विगत होली पर जब रोहताश के रिश्तेदार उस से मिलने आए तो उन्होंने कलावती से शिकायत की कि वह उन से फोन पर भी बात नहीं करती. तब कलावती को पता चला कि रिश्तेदारों ने उस से बात कराने के लिए रोहताश को कई बार फोन किया था, पर उस ने जानबूझ कर उस की बात नहीं कराई. इस पर कलावती बौखला उठी. उस ने पति को उलटीसीधी सुनाते हुए अपना एक अलग मोबाइल दिलाने की बात कही.

इस बात को भी रोहताश ने अपने साढ़ू से जोड़ते हुए सोचा कि वह जरूर अपने जीजा से बात करने के लिए ही अलग मोबाइल मांग रही है. यानी उस के दिमाग में शक का कीड़ा और भी बलवती हो उठा.

मोबाइल दिलाने की बात को ले कर दोनों के बीच फिर से नोकझोंक हुई. बात इतनी बिगड़ी कि गुस्से में आ कर रोहताश ने अपना भी मोबाइल तोड़ डाला. उस के बाद उस ने पत्नी को हिदायत दी कि वह भविष्य में अपने जीजा से बात न करे अन्यथा अंजाम बहुत बुरा होगा.

रोहताश की यह धमकी सुन कर कलावती ने इस की शिकायत अपने भाई लक्खू से कर दी. लक्खू ने फिर से अपने जीजा रोहताश को समझाने की कोशिश की, लेकिन रोहताश पर उस की बातों का कोई असर नहीं हुआ.

Vikas Bhadu

अपने परिजनों के साथ कलावती

साले के घर से जाते ही रोहताश ने बीवी को अपशब्द कहे, साथ ही उस ने उस से घर छोड़ कर चले जाने को भी कह दिया. इस पर दोनों में तकरार बढ़ गई. इसी तूतूमैंमैं के बीच कलावती ने पति से कहा कि यह घर छोड़ कर तो तुम्हें चले जाना चाहिए. यह घर मेरा, बच्चे मेरे. यहां पर तुम्हारा क्या है ?

रोहताश छोटी सोच का इंसान था. उस ने कलावती की बात को दूसरे नजरिए से देखते हुए अर्थ लगाया कि बच्चे भी उस के नहीं तो जरूर उस के साढ़ू के ही हैं. कलावती की बात सुनते ही वह अपना आपा खो बैठा. उस के मन में एक बात की गलतफहमी बैठी तो वह शैतान बन बैठा. वह उस दिन के बाद से बीवी और बच्चों का दुश्मन बन बैठा.

रोहताश अपने चारों बच्चों को उचित शिक्षा दिला रहा था ताकि उन की कहीं सरकारी नौकरी लग सके. उन की पढ़ाई के लिए ही उस ने दिनरात एक कर के काफी पैसा कमाया था. अपने सपने को साकार करने के लिए जितनी मेहनत उस ने की थी, उस से कहीं ज्यादा उस के बच्चे कर रहे थे.

उस की सब से बड़ी बेटी सलोनी इस वक्त बीए फर्स्ट ईयर में और मंझली शिवानी कक्षा 12 में पढ़ रही थी. उस का बेटा रवि गांव गोपीवाला के जनता इंटर कालेज में 9वीं कक्षा में तथा सब से छोटा आकाश यहीं पर कक्षा-7 में पढ़ रहा था.

बीवी और बच्चों के प्रति उस के दिल में नफरत पैदा होते ही उस के दिल में शैतान पैदा हो गया. उस ने प्रण किया कि अगर ये चारों बच्चे उस के साढ़ू के हैं तो वह सभी को खत्म कर डालेगा. इस के बाद वह हर रोज ही अपनी बीवी और बच्चों को मौत की नींद सुलाने के लिए नएनए प्लान बनाने लगा. लेकिन वह अपनी साजिश में कामयाब नहीं हो पा रहा था.

इस दर्दनाक हादसे को अंजाम देने से 2 दिन पहले रोहताश उस रोज दुकान

पर जाने के लिए घर से निकलता, लेकिन इसी उधेड़बुन में लगा रहा कि बीवी और बच्चों को किस तरह से मौत की नींद सुलाया जाए. वह दुकान जाने के बजाए दारू पीने के लिए इधरउधर ही भटकता रहा.

16 जून, 2019 को शाम को वह जिस वक्त अपने घर पहुंचा तो उस ने कुछ ज्यादा ही शराब पी रखी थी. इस के बावजूद भी उस की बीवी ने उसे खाना खिलाया. वह खाना खा कर छत

कोतवाली प्रभारी मनोज कुमार सिंह

पर जा कर सो गया. इस के बाद कलावती ने अपने बच्चों को खाना खिलाया और घर का कामधंधा निपटा कर वह भी छत पर सोने के लिए चली गई थी. उस के 3 बच्चे छत पर सोए थे जबकि बड़ी बेटी शिवानी उस रात नीचे घर में ही सो गई थी.

रात के 10 बजतेबजते सभी सो चुके थे. लेकिन उस रात रोहताश की आंखों में खून बरस रहा था. वह काफी समय से सभी के सोने का इंतजार कर रहा था. उस रात उस ने घर आते ही सब से पहले अपनी बड़ी कैंची का नटबोल्ट खोल कर 2 भागों में कर ली. उस का एक हिस्सा चाकू की तरह हो गया था. कैंची के एक हिस्से को उस ने रात के सोते समय अपने सिरहाने रख ली.

जब उस की बगल में लेटी बीवी नींद में खर्राटे भरने लगी तो उस के अंदर बैठा शैतान जाग उठा. वह अपने बिस्तर से उठा और सीधा दूसरी छत पर सोए तीनों बच्चों के पास पहुंच गया. उस ने आव देखा न ताव, शैतान बन कर कैंची के एक भाग से बच्चों पर ताबड़तोड़ वार करने लगा. देखते ही देखते बच्चे चीखपुकार मचाने लगे.

बहनभाइयों की चीख सुन कर जैसे ही शिवानी जीने पर आई तो रोहताश ने उस पर भी जानलेवा हमला कर दिया. उस के बाद जैसे ही कलावती उसे बचाने के लिए पहुंची तो उस ने उसे भी मारने की कोशिश की, लेकिन उस वक्त तक उस का भतीजा सुनील शोरशराबा सुन कर वहां आ गया था. जिस की वजह से कलावती मौत के मुंह में जाने से बच गई. रोहताश का पूरे परिवार को खत्म करने का इरादा था.

पुलिस ने कैंची का वह भाग भी बरामद कर लिया, जिस से उस ने बच्चों पर हमला किया था. रोहताश से पूछताछ के बाद पुलिस ने उसे मुरादाबाद की कोर्ट में पेश कर उसे जेल भेज दिया.

रोहताश की पत्नी कलावती ने अपने ऊपर लगाए गए आरोपों को झूठा और पूरी तरह से निराधार बताया. उस ने पुलिस को बताया कि उस के चारों बच्चे रोहताश के ही हैं. कलावती ने पुलिस को बताया कि अगर उसे मेरे चरित्र पर शक था तो मुझे ही मारना चाहिए था. मैं तो उस के पास ही सो रही थी.

गांव में इस मामले को ले कर चर्चा थी कि रोहताश ने गड़ा खजाना पाने के लिए ही किसी तांत्रिक के कहने पर यह कांड किया. ●

VikasBhadauria

Vikas Bhadu

'कहानी-3' में कंगना रनौत

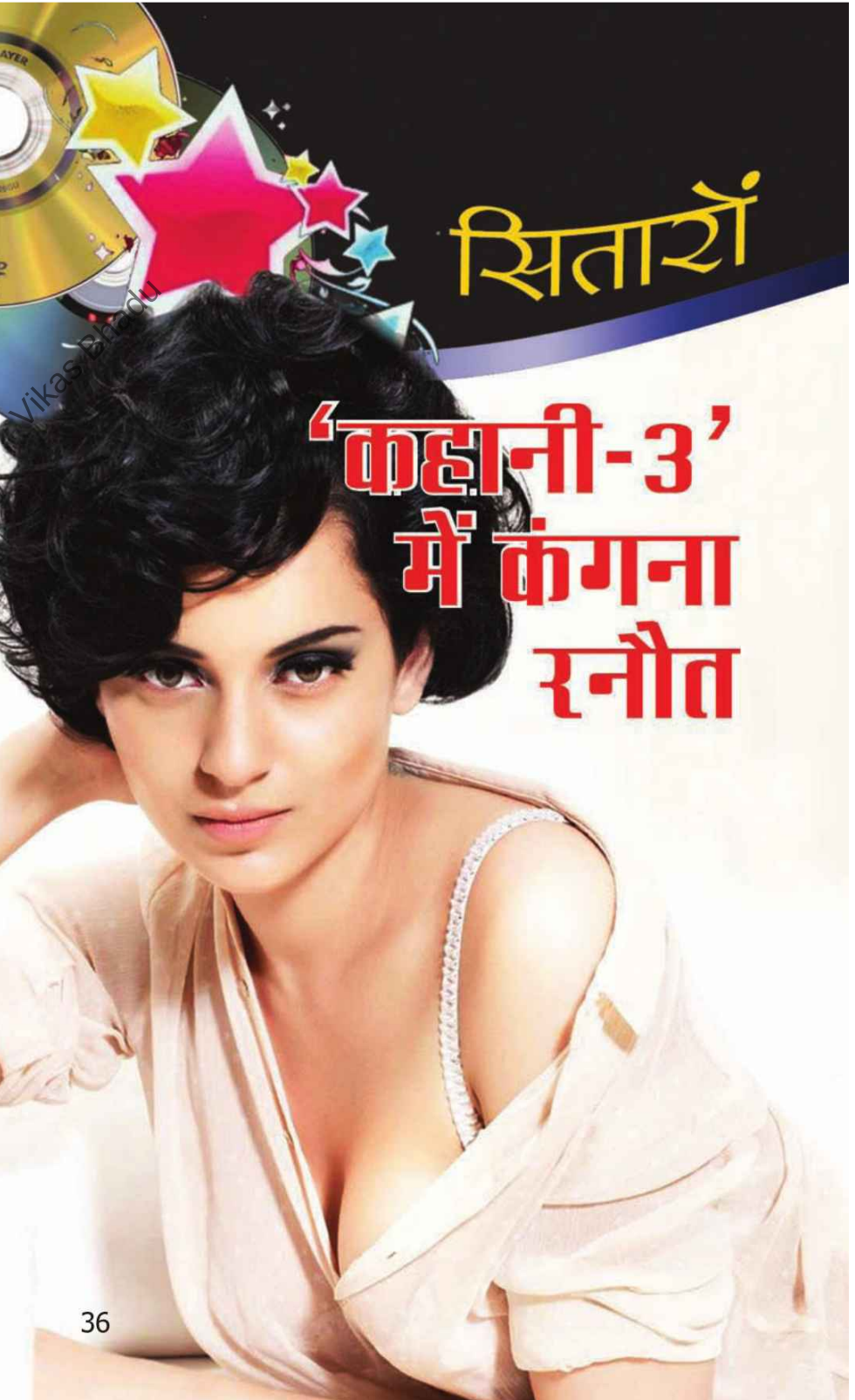

की हलचल

Vikas Bhadu

अपने अक्खड़पन और अलग हट कर बयानों की वजह से कंगना रनौत आए दिन चर्चाओं में रहती हैं. विवादों को आमंत्रण देने वाली कंगना के फिल्मी कैरियर या अभिनय की बात करें तो सन 2006 में फिल्म 'गैंगस्टर' से अपने फिल्मी कैरियर की शुरूआत करने वाली इस पहाड़ी बाला ने शुरुआती दौर में काफी कष्ट भी उठाए और धोखे भी खाए.

लेकिन अपने संघर्ष से उबर कर मेन लीड में आने के बाद कंगना की छवि दबंग अभिनेत्री की बन गई है, जो अभिनय के मामले में भी किसी से कम नहीं हैं.

कंगना रनौत के उत्कृष्ट अभिनय की असली झलक उन की फिल्मों 'तनु वेड्स मनु', 'तनु वेड्स मनु रिटनर्स' और 'क्वीन' में मिलती है. फिल्म 'मेंटल है क्या ?' में भी कंगना का अभिनय लाजवाब है.

इस फिल्म में कंगना के साथ राजकुमार राव हैं जो सीरियल साइको किलर की भूमिका में हैं. इस फिल्म में मायरा दस्तूर भी हैं जो इस फिल्म से अपने कैरियर की शुरुआत कर रही हैं. राजकुमार राव इस से पहले कंगना के साथ 'क्वीन' में काम कर चुके हैं, जो सुपरहिट थी और इस का सारा श्रेय कंगना के अभिनय को मिला था.

अब कंगना रनौत सुजौय घोष की फिल्म 'कहानी-3 में काम करेंगी, जो सस्पैंस थ्रिलर फिल्म होंगी. इस से पहले सुजौय घोष 2012 में आई विद्या बालन अभिनीत 'कहानी' और 2016 में आई 'कहानी-2' बना चुके है. इन में से विद्या बालन अभिनीत 'कहानी' हिट फिल्म थी, जबकि विद्या के ही साथ वाली 'कहानी-2' फ्लौप रही थी. संभवतः इसीलिए सुजौय घोष विद्या की जगह कंगना को कास्ट करना चाहते हैं.

वैसे यह बात कम ही लोगों को पता होगी कि सुजौय घोष ने 'कहानी' के लिए विद्या से पहले कंगना को अप्रोच किया था. लेकिन डेट्स की प्रौब्लम की वजह से बात नहीं बन पाई थी. ❒

फिर से 'टिप टिप बरसा पानी'

Vikas Photo

रोहित शेट्टी ऐसे फिल्म निर्माता हैं, जो छुट्टी ले कर बैठना पसंद नहीं करते. उन की अपनी टीम भी ऐसी ही है. रोहित और उन की टीम की खासियत यह है कि ये लोग लगातार एक जैसे सब्जेक्ट पर फिल्म नहीं बनाते. मसलन उन्होंने एक्शन फिल्में बनाई हैं तो कौमेडी फिल्में भी बनाईं. मसलन उन्होंने 'सिंघम' सीरिज की फिल्में 'सिंघम रिटर्न्स' और 'सिंबा' बनाई तो 'गोलमाल' की भी सीरिज बनाई.

रोहित की एक्शन पर तो पकड़ है ही कौमेडी पर भी उन की अच्छी पकड़ है. अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि उन की गोलमाल सीरिज हो या 'बोल बच्चन' किसी भी फिल्म ने 100 करोड़ से कम कमाई नहीं की. फिल्मों के साथसाथ वह अपने ब्रेक में कलर्स का टीवी शो 'खतरों के खिलाड़ी' भी करते हैं.

यारीदोस्ती की बात छोड़ दें तो रोहित किसी एक स्टार से बंध कर नहीं रहना चाहते. उन्होंने अजय देवगन के साथ काम किया तो शाहरुख खान के साथ भी 'चेन्नई एक्सप्रेस' बनाई जो सुपरहिट थी. उन्होंने रणबीर सिंह के साथ 'सिंबा' बनाई तो अब अक्षय कुमार के साथ 'सूर्यवंशी' बना रहे हैं. सूर्यवंशी में अक्षय के साथ कटरीना कैफ हैं.

सन 1994 में अक्षय कुमार की एक फिल्म आई थी 'मोहरा'. इस सुपरहिट फिल्म में अक्षय और रवीना टंडन पर एक गाना फिल्माया गया था. टिप टिप बरसा पानी... जिसे आज भी पसंद किया जाता है. रोहित शेट्टी 'सूर्यवंशी' में इसी गाने को रीक्रिएट कर रहे हैं. गाना अक्षय कुमार और कटरीना पर फिल्माया जाएगा, जिसे कोरियोग्राफ करेंगी फराह खान. ❐

राजकुमार की 24 करोड़ की डील

Vikas Bhadauria

राजकुमार राव ने 2010 से अपने फिल्मी की शुरुआत फिल्म 'लव सैक्स और धोखा' से की थी, इस के बाद उन्होंने पीछे मुड़ कर नहीं देखा. उन्होंने 'रागिनी एमएमएस', 'गैंग्स औफ वासेपुर-2', 'तलाश', 'शाहिद', 'क्वीन', 'डौली की डोली', 'अलीगढ़', 'राब्ता', 'बरेली की बरफी', 'शादी में जरूर आना' और 'स्त्री' वगैरह करीब 30 फिल्में कीं. राजकुमार राव के अभिनय का फिल्म इंडस्ट्री पर ऐसा असर हुआ कि उन के लिए फिल्मों का रास्ता खुल गया.

खबर है कि करण जौहर यानी धर्मा प्रोडक्शन राजकुमार राव के साथ 3 फिल्मों के लिए 24 करोड़ रुपए में डील कर रहा है. इस डील के हिसाब से राजकुमार को ले कर पहली हौरर फिल्म बनाई जाएगी, जो इस हौरर सीरीज की दूसरी फिल्म होगी जिस के पहले पार्ट 'भूत : द हांटेड शिप' में विक्की कौशल और भूमि पेडणेकर नजर आएंगे. बता दें कि राजकुमार राव हौरर फिल्म 'स्त्री' और 'रूह अफजा' में काम कर चुके हैं. यह उन की तीसरी हौरर फिल्म होगी.

राजकुमार राव और श्रद्धा कपूर अभिनीत फिल्म 'स्त्री' ने बौक्स औफिस पर 129 करोड़ रुपए कमाए थे. इसी से उत्साहित हो कर इस फिल्म के निर्माता 'स्त्री-2' बना रहे हैं.

वैसे 24 करोड़ की इस डील के बारे में पुख्ता तौर पर अभी कुछ नहीं कहा जा सकता. क्योंकि जब करण जौहर की फिल्म 'सोनू के टीटू की स्वीटी' हिट हुई थी तो उन्होंने कार्तिक आर्यन के साथ फिल्म बनाने को कहा था लेकिन ऐसा हुआ नहीं. धर्मा प्रोडक्शन के बैनर पर ही बनी फिल्म 'धड़क' से श्रीदेवी की बेटी जाह्नवी कपूर ने डेब्यू किया था. इस फिल्म की रिलीज के समय कहा जा रहा था कि करण जाह्नवी के साथ 3 फिल्मों की डील करेंगे. लेकिन ऐसा हुआ नहीं.

2014 में आई करण जौहर की फिल्म 'हम्प्टी शर्मा की दुल्हनियां' में नजर आए सिद्धार्थ शुक्ला के बारे में ऐसी ही चरचा हुई थी. राजकुमार राव के मामले को इसलिए गंभीरता से लिया जा सकता है क्योंकि करण जौहर से उन की दोस्ती तो है ही, वह उन की प्राइवेट पार्टियों में भी जाते हैं. ❐

शमशेरा की रिलीज डेट आगे बढ़ेगी

यशराज बैनर की फिल्म 'शमशेरा' की शूटिंग जोरशोर से चल रही है. रणबीर कपूर और वाणी कपूर अभिनीत यह फिल्म 30 जुलाई, 2020 को रिलीज होगी. वैसे यह फिल्म इसी साल दिसंबर में रिलीज होनी थी, लेकिन रणबीर कपूर ने इस फिल्म की डेट्स 'ब्रह्मास्त्र' में

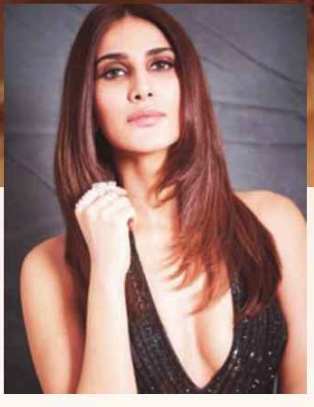

इस्तेमाल कर लीं. पिछले दिनों इस फिल्म की शूटिंग बनारस में हुई थी.

'ब्रह्मास्त्र' करण जौहर की 150 करोड़ के बजट की फिल्म है, जिस में अमिताभ बच्चन, रणबीर कपूर, आलिया भट्ट और मौनी राय जैसे सितारे हैं. फिल्म के डायरेक्टर हैं-अयान मुखर्जी.

'शमशेरा' में रणबीर कपूर डकैत की भूमिका में नजर आएंगे. फिल्म का जो टीजर रिलीज किया गया है, उस की भव्यता को देख कर अनुमान लगाया जा सकता है कि फिल्म कितनी भव्य होगी. ❐

Vikas Pandu

शिल्पा शेट्टी का कमबैक

Vikas Bhadauria

शिल्पा शेट्टी हिंदी फिल्मों की अग्रणी हीरोइनों में रह चुकी हैं. उन्होंने 1993 में शाहरुख खान और काजोल के साथ फिल्म 'बाजीगर' से अपने कैरियर की शुरुआत की थी, जो सुपरहिट फिल्म थी. उन्होंने 1993 से 2008 तक करीब 40 फिल्मों में काम किया, जिन में से कई फिल्में हिट और सुपरहिट रहीं.

शिल्पा ने 2009 में मुंबई के व्यवसायी राज कुंद्रा से शादी कर ली थी. इस के बाद वह टीवी के रियल्टी शोज में जज की कुर्सी पर तो नजर आईं लेकिन फिल्मों में काम करना बंद कर दिया. हालांकि ऐसा नहीं था कि उन के पास औफर न रहे हों. उन्होंने 11 साल अपने बेटे वियान, पति राज कुंद्रा और कुंद्रा परिवार के साथ खुशी और सुकून से गुजारे.

अब खबर है कि 11 साल बाद शिल्पा शेट्टी फिल्मों में कमबैक कर रही हैं. खास बात यह है कि शिल्पा ने योगा और एक्सरसाइज के माध्यम से

अपनी बौडी और ब्यूटी को बरकरार रखा है. जबकि उन के जमाने की ज्यादातर हीरोइनें ऐसा नहीं कर सकीं. बहरहाल, शिल्पा कमबैक कर रही हैं, यह उन्होंने खुद स्वीकार किया है. इस के लिए वह 3 फिल्मों की कहानियां पढ़ रही हैं. ●

बीते 16 जून की बात है. उस दिन पश्चिम बंगाल के हावड़ा शहर में हुगली नदी के किनारे सुबह से ही लोगों का हुजूम जुटने लगा था. इन लोगों को इंतजार था जादूगर चंचल लाहिड़ी के आने का. कोलकाता के मशहूर जादूगर चंचल ने उस दिन हैरतअंगेज कारनामा दिखाने की घोषणा की थी. चंचल पश्चिम बंगाल में जादूगर 'मैंड्रेक' के नाम से मशहूर थे.

Vikas Bhadu

जादू का खेल भले ही ट्रिक और हाथ की सफाई का हो, लेकिन इस में कई करतबों में जादूगर को अपनी जान का खतरा रहता है. बंगाल के जादूगर चंचल ने अपने जादू का जो कारनामा दिखाना चाहा, उसे वह पहले भी सफलतापूर्वक दिखा चुके थे. लेकिन इस बार उन की कोई चूक...

जादूगर चंचल
उर्फ मैंड्रेक

जादूगर का आखिरी जादू

— निखिल अग्रवाल

जादूगर चंचल जो नायाब कारनामा दिखाने जा रहे थे, वह जादुई करतब दुनिया के महान अमेरिकी जादूगर हैरी हुडिनी से मशहूर हुआ था. करीब सौ साल पहले जादूगर हुडिनी ने खुद को एक पिंजरे में बंद कर ताले लगवा दिए थे. यह पिंजरा गहरे पानी में डुबो दिया गया. इस के बाद हुडिनी अपने जादू की कला से पिंजरे के ताले खोल कर कुछ ही देर में पानी की सतह पर आ गए. यह खेल दिखा कर जादूगर हुडिनी ने अपना नाम पूरी दुनिया में अमर कर लिया था.

कोलकाता के मशहूर जादूगर चंचल ने जादूगर हुडिनी के इसी करतब को दिखाने की तैयारी की थी. चंचल यह कारनामा तीसरी बार दिखाने जा रहे थे. सब से पहले मैंड्रेक यानी चंचल ने यह कारनामा 1998 में दिखाया था. इस के बाद दूसरी बार 2013 में भी उन्होंने यह करतब दिखा कर पूरे देश में अच्छी

Vikas Bhadauria

जादूगर चंचल को जब नदी की धारा में उतारा गया (पार्श्व में) हुगली नदी

खासी लोकप्रियता हासिल कर ली थी. अपनी लोकप्रियता के चलते जादूगर चंचल विभिन्न राज्यों में अपने जादू का प्रदर्शन करने लगे थे.

जादूगर चंचल ने पानी की सतह पर चलने का करतब दिखाने की भी घोषणा कर रखी थी. जब वे प्रचार के लिए निकलते थे, तो गाड़ी के साथ करीब 10 फुट ऊंचाई पर हवा में चलते

Vikas Bhadu

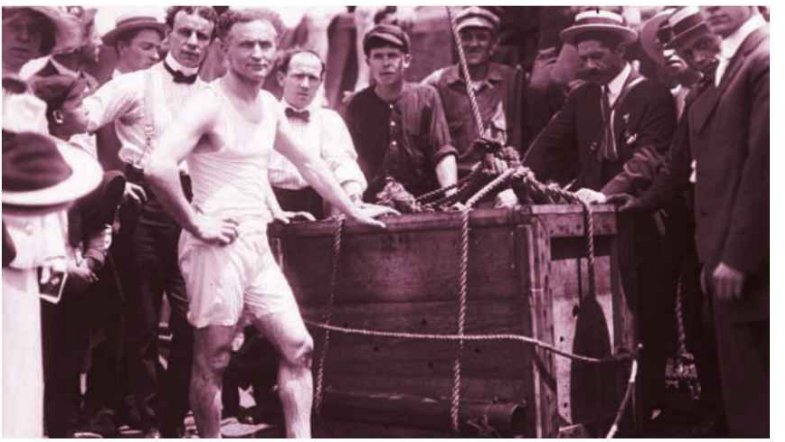

कि आम दर्शक को इस बात का पता नहीं चल सकता था कि ताले लगाने के बाद बौक्स का एक गेट खुल जाता है. जादूगर ने पानी के अंदर इसी गेट से खुद को बाहर निकाल कर दर्शकों को जादू का अहसास कराया था.

पता नहीं कहां गलती हुई कि दर्शकों को इस बौक्स के गेट से जादूगर के निकलने का पता चल गया और बाहर

महान अमेरिकी जादूगर हैरी हुडिनी

थे. भीड़ भरी सड़कों पर जादूगर का इस तरह का लाइव कारनामा देख कर दर्शक रोमांचित हो जाते थे.

इस से पहले 2013 में यही करतब दिखाते समय जादूगर चंचल की बचने की कला को दर्शकों ने पकड़ लिया था. उस समय चंचल को शीशे के पारदर्शी बौक्स में तालों से बंद कर हुगली नदी में फेंका गया था. तब वे 29 सेकंड में पानी से बाहर आ गए थे. दरसअल जादूगर चंचल ने पानी में बौक्स फेंके जाने के बाद उसे अपने तरीके से खोला और बाहर आ गए थे.

यह बौक्स इस तरह से बना हुआ था

निकलने पर उन्होंने चंचल को घेर लिया. दर्शकों की भीड़ ने चंचल की सुनहरी विग भी खींच ली थी. उस समय बड़ी मुश्किल से दर्शकों को समझा कर शांत किया गया था.

अब तीसरी बार यही कारनामा दिखाने के लिए जादूगर चंचल के सहयोगियों ने पूरी तैयारी कर ली थी. सारे आवश्यक साजोसामान भी जुटा लिए गए थे. इस के लिए पुलिस और प्रशासन को आवश्यक पत्र भी दिया गया था.

निर्धारित दिन 16 जून को जादूगर के सहयोगियों का दल हावड़ा ब्रिज के पास पहुंच गया. सुबह करीब 10 बजे

चंचल इस से पहले भी ऐसा जादू दिखा चुके थे

Vikas Bhadu

के आसपास जादूगर चंचल भी वहां आ गए. तब तक जादूगर का अनूठा कारनामा देखने के लिए वहां हजारों लोगों की भीड़ एकत्र हो चुकी थी.

चंचल ने हाथ हिला कर दर्शकों की भीड़ का अभिवादन किया. जादूगर चंचल ने इस दौरान दर्शकों को संबोधित करते हुए कहा कि अगर मैं यह खतरनाक करतब दिखाते हुए नदी से सफलतापूर्वक बाहर आ गया, तो यह जादू होगा और अगर नहीं आ सका तो दुखांत होगा.

हावड़ा ब्रिज के नीचे पहले से ही 2 जलयान तैयार खड़े थे. जादूगर चंचल इन में से एक जलयान पर चढ़ गए. दूसरे पर उन के सहयोगियों की दूसरी टीम सवार थी, जो पूरे दृश्य को कैमरे में कैद कर रही थी.

हजारों लोगों की मौजूदगी में एक जलयान पर सवार सहयोगियों ने चंचल के हाथपैर मोटी रस्सी और जंजीरों से बांध दिए. जंजीर को 2 तालों से जड़ दिया गया ताकि जादूगर आसानी से न तो अपने हाथपैर हिला सके और न ही ताले खोल सकें. इस के बाद जादूगर की आंखों पर पट्टी बांध दी गई.

पूरी तैयारी के बाद दोपहर करीब 12.30 बजे रस्सी और जंजीरों से बंधे जादूगर को क्रेन में लंबी रस्सी लटका कर हुबली व गंगा नदी के बीच पानी की तेज धारा में फेंक दिया गया. नदी में फेंके जाने से पहले जादूगर चंचल ने हाथपैर बंधे होने और आंखों पर पट्टी होने के बावजूद एक बार फिर दर्शकों का अभिवादन करने का प्रयास किया. इस पर दर्शकों ने तालियां बजा कर, जयकारे लगा कर जादूगर की हौसलाअफजाई की.

जादूगर को नदी के गहरे पानी में फेंके जाने के बाद वहां खड़ी हजारों की भीड़ बिना पलक झपकाए नदी के पानी की सतह पर जादूगर के दिखने का इंतजार करने लगी, दर्शकों को कुछ सेकंड के लिए एक बार जादूगर नदी की सतह पर नजर जरूर आए लेकिन फिर अचानक गायब हो गए और फिर दिखाई नहीं दिए.

जादूगर को 5-7 मिनट के दरम्यान

अपनी कला के बल पर रस्सी, जंजीरों और तालों से मुक्त हो कर नदी की सतह पर आ जाना था. लेकिन ऐसा नहीं हुआ.

लोग टकटकी लगाए जादूगर चंचल के फिर से दिखाई देने का इंतजार कर रहे थे. दर्शकों को एकएक पल मुश्किल लग रहा था. 5 मिनट क्या, जादूगर चंचल को नदी में डाले 15 मिनट से ज्यादा का समय हो चुका था. लेकिन वे नजर नहीं आए.

Vikas Bhadu

इस से हजारों दर्शकों के साथ उन के सहयोगियों की बेचैनी भी बढ़ गई. काफी देर इंतजार के बाद अधिकांश दर्शक निराश हो कर लौट गए. सैकड़ों दर्शक वहां रुक कर अगले समाचार का इंतजार करते रहे.

इसी बीच, जादूगर के सहयोगियों ने चंचल की तलाशी के लिए अपने कुछ साथियों को नदी में उतार दिया था. लेकिन जादूगर का कुछ पता नहीं चला. इस के बाद पुलिस को सूचना दे दी गई. सूचना मिलने पर रिवर ट्रैफिक पुलिस जादूगर की तलाश में जुट गई.

बाद में आपदा प्रबंधन टीम और गोताखोर भी आ गए. जिस पिंजड़े में जादूगर को नदी की धारा में फेंका गया था, वह तो मिल गया लेकिन चंचल का कोई पता नहीं चला. इस का मतलब चंचल हाथपैर खोल कर पिंजरे से बाहर तो निकल गए थे, लेकिन किन्हीं कारणों से पानी के सतह से ऊपर नहीं आ सके थे.

इस का मतलब था कि जादूगर के साथ कोई दुर्घटना हो गई थी. फिर भी शाम तक नदी में जादूगर की तलाश होती रही, लेकिन कोई सफलता नहीं मिली. रात को अंधेरा हो जाने के कारण बचाव अभियान रोक दिया गया.

इस बीच, जादूगर के सहयोगियों को कुछ लोगों से पता चला कि घटनास्थल से दूर उन्होंने नदी की तेज धारा में पीले कपड़े पहने हुए एक आदमी को हाथ मारते और बचाव की कोशिश करते देखा था. इन परिस्थितियों में बचाव दल और चंचल के सहयोगियों को जादूगर के जीवित होने की उम्मीद कम ही रह गई थी.

दूसरे दिन 17 जून को रिवर ट्रैफिक पुलिस और आपदा प्रबंधन की टीम के साथ गोताखोर हुगली नदी में जादूगर चंचल की तलाश में फिर से जुट गए. दिनभर तलाशी का काम चलता रहा. इस दौरान वहां हजारों लोग आतेजाते रहे. अधिकारी भी आए गए.

जादूगर के सहयोगियों का दल तो 16 जून की सुबह से ही बिना कुछ खाएपिए वहीं डटा हुआ था. उन की तो जैसे दुनिया ही उजड़ गई थी. वे समझ नहीं पा रहे थे कि ऐसा क्या हुआ, जो जादूगर वापस नहीं आ सके. यह तय था कि जादूगर की कला में कोई कमी रह गई थी.

लगभग 30 घंटे तक चले खोज अभियान के बाद 17 जून की शाम को जादूगर मैंड्रेक का शव हावड़ा के रामकृष्णपुर घाट के पास बरामद हुआ. उन का शव नाव से कदमतल्ला घाट पर लाया गया.

चंचल की पहचान उन के पहने कपड़ों से की गई. करतब दिखाने के लिए वे पीले रंग की शर्ट, लाल पैंट और पीले रंग के नकली बाल पहन कर नदी में कूदे थे. उन का शव देख कर उन के सहयोगी फूटफूट कर रोने लगे. वहां

पिंजड़े में बंद हो कर नदी में जाने की तैयारी में जादूगर चंचल

Vikas Bhadu

मौजूद चंचल के शुभचिंतकों की आंखों से भी आंसू आ गए.

पुलिस ने आवश्यक काररवाई के बाद इस मामले को धारा 304 के तहत नौर्थ पोर्ट थाने में दर्ज कर लिया. पुलिस का कहना था कि जादूगर ने करतब दिखाने और उस से होने वाले जोखिम की आवश्यक अनुमति नहीं ली थी. जिस जलयान से जादूगर नदी में उतरे थे, उस में जीवनरक्षक व्यवस्था नहीं थी.

जिस क्रेन के सहारे जादूगर को हाथपैर बंधी हालत में नदी में फेंका गया, उस क्रेन के लिए पोर्ट ट्रस्ट से अनुमति नहीं ली गई थी. पुलिस ने 18 जून को जादूगर के शव का पोस्टमार्टम कराने के बाद उन के घर वालों को सौंप दिया.

इस बीच, जादूगर चंचल के सहायक और भतीजे रुद्रप्रसाद लाहिड़ी ने दावा किया कि जादूगर चंचल यानी मैंड्रेक अपनी जादू की कला से सारे बंधन खोल कर नदी की सतह पर आ गए थे और उन्होंने हाथ भी हिलाया था. लेकिन फिर अचानक गायब हो गए. पुलिस इस बात की जांच कर रही है कि कहीं ऐसा तो नहीं कि जादूगर ने करतब दिखाने की अनुमति लेते समय नियमों की कमी का फायदा उठाया हो और अपनी जान से हाथ धो बैठे हों.

कहा जा रहा है कि जादूगर ने पुलिस को अनुमति देने के लिए दिए पत्र में यह नहीं लिखा था कि वे पानी में छलांग लगाएंगे. डीसी पोर्ट सैयद वकार रजा का कहना था कि चंचल लाहिड़ी ने पत्र में लिखा था कि पूरा करतब किसी नाव पर दिखाया जाएगा. इसी आधार पर उन को अनुमति दी गई थी.

अधिकारियों का कहना है कि नदी में फेंके जाने के बाद जादूगर रस्सी और लोहे की जंजीर से बंधे हाथपैर कैसे खोलेगा, इस की जानकारी चंचल के सहयोगी नहीं दे सके. हो सकता है जादूगर ने अपने बंधन खोलने का राज सहयोगियों को बताया ही नहीं हो.

विशेषज्ञों का मानना है कि जादूगर चंचल के शरीर पर भारी भरकम कपड़े

और दूसरी चीजें थीं, संभवतः इसी कारण वे नदी के तेज बहाव में तैर नहीं पाए होंगे और मौत के मुंह में समा गए. माना जा रहा है कि जादूगर के टाइम मैनेजमेंट में कुछ कमियों और गलतियों की कीमत उन्हें अपनी जान दे कर चुकानी पड़ी.

इस के अलावा जादूगर को नदी में फेंके जाते समय मौके पर सुरक्षा के इंतजाम नहीं थे. अगर सुरक्षा के इंतजाम होते, तो तुरंत खोजने का अभियान शुरू कर दिया जाता और संभवतः उन की जान बच जाती.

Vikas Bhadu

41 साल के जादूगर चंचल लाहिड़ी पश्चिम बंगाल के दक्षिण 24 परगना जिले के सोनारपुर स्थित सुभाष ग्राम के रहने वाले थे. परिवार में उन की मां उमा लाहिड़ी, पत्नी और 10वीं में पढ़ रहा एक बेटा है.

मां उमा लाहिड़ी अपने बेटे को याद करती हुई कहती है कि उसे बचपन से ही जादूगरी के करतब सीखने और दिखाने का शौक था. वह छोटी सी उम्र में ही जादूगरी के बल पर मशहूर हो गया था.

यह दुखद रहा कि जादूगर चंचल उर्फ मैंड्रेक का आखिरी कारनामा उन के जीवन का अंत साबित हुआ. लाहिड़ी की असमय मौत से जादूगर समुदाय में शोक छा गया. देश के मशहूर जादूगर पी.सी. सरकार का कहना है कि शायद लाहिड़ी को ऐसे करतब के लिए और ज्यादा प्रैक्टिस की जरूरत थी.

भारत में करतब दिखाते समय जादूगर की मौत का यह पहला मामला बताया जा रहा है. इस से पहले किसी नामी या चर्चित जादूगर के इस तरह दुखद अंत की कोई बात सामने नहीं आई.

जादू कला भारत में सैकड़ों साल से प्रचलित है. जादूगरों के मामले में बंगाल का नाम मुख्य रहा है. राजामहाराजाओं के काल में जादू कला खूब फलीफूली थी. जादू मुख्य रूप से आधुनिक तकनीक, समय प्रबंधन, विज्ञान के सहारे हाथ की सफाई और सम्मोहन पर निर्भर होता है.

कुछ लोग तंत्र विद्या को भी जादू से जोड़ते हैं, लेकिन ऐसा है नहीं. आजकल जादूगरी मनोरंजन के साथ लोगों को साधु-बाबाओं के अंधविश्वास से बचने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है.

हमारे देश में कई मशहूर जादूगर हुए हैं. इन जादूगरों ने भारत के साथ विदेशों में भी अपने करतबों से काफी नाम कमाया है. इन में पीसी सरकार, ओपी शर्मा, अशोक भंडारी, जादूगर आनंद, के. लाल, प्रह्लाद आचार्य, गोपीनाथ मुथुकाड, नकुल शेनौय, यमुनाथ पालिनाथ, गणपति चक्रवर्ती आदि के नाम प्रमुख हैं.

इस से पहले जादूगरी में गोगिया पाशा का पूरी दुनिया में नाम रहा था. भारतीय जादूगरों ने आजकल पुराने और परंपरागत जादू के कारनामों के स्थान पर विज्ञान और तकनीक के सहारे नईनई प्रस्तुतियां शुरू की हैं.

आंखों पर पट्टी पर बांध कर भीड़ भरी सड़कों पर मोटरसाइकिल चलाना, वाटर औफ इंडिया, हैट में से कबूतर निकालना, हथकड़ी लगाना और खोल देना, मंच से गायब हो जाना, आरा मशीन से लड़की के 2 टुकड़े करना, इंद्रजाल आदि कारनामे लोगों को जादू

जादू दिखाने से पहले लोगों को अंतिम अभिवादन

Vikas Bhadu

कला देखने के लिए आकर्षित करते हैं.

कुछ जादूगर स्टेज शो के अलावा खुले आसमान तले भी अपनी कला दिखाते हैं. इन में हाथी, बस या ट्रेन गायब करने के करतब भी शामिल हैं. कुछ जादूगर ताजमहल को गायब कर दिखाने का दावा भी करते हैं.

करतब दिखाते समय हुआ यह हादसा कोई पहला नहीं है. इस से पहले भी दुनिया के कई नामी जादूगर अपना करतब दिखाते समय मौत की नींद सो गए. वे करतब उन के लिए आखिरी स्टंट साबित हुए. इस में अमेजिंग जौय के नाम से जाने जाते रहे जौय बुरस एक ताबूत में अपना करतब दिखाते समय मौत के मुंह में समा गए थे. इस करतब में जादूगर को ताबूत में बंद कर सीमेंट से चिन दिया गया था, बाद में जादूगर को अपनी कला से जीवित बाहर निकल आना था. लेकिन अमेजिंग जौय के साथ ऐसा नहीं हुआ.

जादूगरनी प्रिंसेज टेनको अपनी पोशाकों के बल पर जादू दिखाती थीं. एक कारनामा दिखाते हुए उन के पहने कपड़ों पर 10 तलवारें घोंपी गईं. यह कारनामा उन की जिंदगी का आखिरी सफर बन गया. चार्लिस रोवन की कार स्टंट के दौरान मौत हो गई थी. उन्हें यह कारनामा दिखाते हुए कार से भी तेज गति से भागना था.

जादूगर जेनेस्टा को पानी से भरे टैंक में कारनामा दिखाना था. लेकिन वे सफल नहीं हो सके और उन की मौत हो गई. बालाब्रेगा की मौत आग का स्टंट दिखाने के दौरान हुई थी. सन 1934 में नामी जादूगर बेजामिन खुद को जमीन में गाड़ने के बाद भी जीवित बाहर निकल आए थे. लेकिन इस के तुरंत बाद उन की हार्ट अटैक से मौत हो गई थी.

स्टेज पर जादू के कारनामे दिखाते जादूगरों की लोकप्रियता सोशल मीडिया के इस युग में लगातार कम हो रही है, इसलिए जादूगर भी खुद को समय के साथ अपडेट कर रहे हैं. लोगों में जादू के प्रति आकर्षण बनाए रखने के लिए जादूगर नईनई ट्रिक सीख कर उन का प्रदर्शन कर रहे हैं.

कहा जाता है कि बीसवीं सदी में 'रोप ट्रिक' नाम के जादू का कारनामा सब से हैरतअंगेज हुआ करता था. इस कारनामे के सफल प्रदर्शन में एकदो जादूगर ही कामयाब हो सके थे. इस कला में जादूगर एक रस्सी को जादू के सहारे आसमान में सीधी खड़ी कर उस पर सीढ़ी की तरह चढ़ कर गायब हो जाता है. इस के बाद उस जादूगर के एकएक अंग नीचे जमीन पर गिरते थे. बाद में वह जादूगर प्रकट हो जाता था. आज भी जादूगरों की नई पीढ़ी इस हैरतअंगेज कारनामे को सीखने को लालायित हैं. ●

8 हजार करोड़ का आदर्श फ्राड

— निखिल अग्रवाल

Vikas Bhadu

सारधा, पर्ल आदि कंपनियां अच्छा ब्याज और मोटे रिटर्न का लालच दे कर निवेशकों के अरबों रुपए का घोटाला कर चुकी हैं. इस के बावजूद लोगों का लालच कम नहीं हुआ. इसी का नतीजा है कि हाल में ही आदर्श क्रेडिट सोसायटी ने 20 लाख लोगों के 8 हजार करोड़ रुपए डकार लिए. आखिर कब तक...

मुकेश मोदी जिस ने अपने परिवार के साथ मिल कर आदर्श क्रैडिट सोसायटी से निवेशकों को 8 हजार करोड़ रुपए का घोटाला किया

राजस्थान पुलिस के स्पैशल औपरेशन ग्रुप 'एसओजी' के जयपुर मुख्यालय पर अगस्त 2018 में एक शिकायत मिली थी. शिकायत में कहा गया था कि आदर्श क्रेडिट कोऔपरेटिव सोसायटी अहमदाबाद की ओर से निवेशकों का पैसा नहीं लौटाया जा रहा है.

कंपनी की देश के 28 राज्यों और 4 केंद्रशासित प्रदेशों में करीब 800 से ज्यादा शाखाएं हैं. इन में 309 शाखाएं अकेले राजस्थान में हैं. राजस्थान में कंपनी ने करीब 20 लाख सदस्य बनाए थे. इन में लगभग 10 लाख निवेशक सदस्य शामिल हैं. इन से करीब 8 हजार करोड़ रुपए का निवेश करवाया गया. यह राशि आदर्श क्रेडिट कोऔपरेटिव सोसायटी ने अपनी शैल यानी फरजी कंपनियों में निवेश कर निवेशकों की राशि का दुरुपयोग किया है.

शिकायत में बताया गया कि पहले यह कंपनी राजस्थान के सिरोही शहर में पंजीकृत थी. कुछ साल पहले कंपनी ने अहमदाबाद में मुख्यालय बना लिया था. मल्टीस्टेट कंपनी हो जाने के कारण यह राजस्थान के कोऔपरेटिव रजिस्ट्रार के अधिकार क्षेत्र से बाहर हो गई थी.

मामला गंभीर था. एसओजी के महानिदेशक ने पूरे मामले की जांचपड़ताल कराई. इस बीच, राजस्थान के कोऔपरेटिव रजिस्ट्रार आईएएस अधिकारी नीरज के. पवन ने भी

Vikas Bhadauria

एसओजी को शासकीय पत्र लिख कर आदर्श क्रेडिट कोऔपरेटिव सोसायटी के घोटाले की जानकारी दी.

उन्होंने पत्र के साथ करीब 200 पेज की एक जांच रिपोर्ट भी एसओजी को सौंपी. जांच रिपोर्ट में कहा गया था कि इस कंपनी ने निवेशकों का पैसा ले कर वापस नहीं लौटाया. कंपनी ने निवेशकों

Vikas Bhadauria

आरोपी ईश्वर सिंह

आरोपी राजेश्वर सिंह

का पैसा रियल एस्टेट और फरजी कंपनियों में लगा दिया है.

इस संबंध में कोऔपरेटिव विभाग को कई शिकायतें मिली थीं. इस पर कोऔपरेटिव रजिस्ट्रार कार्यालय के अधिकारियों ने कंपनी के अधिकारियों को तलब कर उन्हें निवेशकों का पैसा लौटाने को कहा था. इस के बावजूद कंपनी ने निवेशकों का पैसा वापस नहीं लौटाया.

एसओजी की प्रारंभिक जांचपड़ताल में आदर्श क्रेडिट कोऔपरेटिव सोसायटी की ओर से फरजीवाड़ा कर निवेशकों का पैसा हड़पने की पुष्टि हो गई. इस पर जयपुर में एसओजी थाने में 28 दिसंबर, 2018 को कंपनी के खिलाफ भादंवि की धारा 406, 409, 420, 467, 468, 471, 477ए और 120बी में मामला दर्ज कर लिया गया.

रिपोर्ट दर्ज किए जाने के बाद एसओजी के अधिकारियों ने इस मामले में पूरी तरह जांचपड़ताल प्रारंभ की. चूंकि कंपनी का कारोबार 28 राज्यों और 4 केंद्रशासित प्रदेशों में फैला हुआ था, इसलिए जांच का काम कई महीने तक चलता रहा.

व्यापक जांचपड़ताल के बाद इसी साल 25 मई को एसओजी के तत्कालीन पुलिस महानिदेशक डा. भूपेंद्र यादव ने इस फरजीवाड़े का खुलासा कर दिया.

उन्होंने बताया कि कंपनी ने मोटा मुनाफा देने के नाम पर करीब 20 लाख सदस्य बनाए. इन सदस्यों की ओर से निवेश की गई करीब 8 हजार करोड़ रुपए की राशि कंपनी के पदाधिकारियों ने 187 फरजी कंपनियों में लगा दी. जांच में सामने आया कि आदर्श सोसायटी को अपने निवेशकों के करीब 14 हजार 682 करोड़ रुपए लौटाने हैं.

एसओजी ने इस घोटाले में 25 मई

Vikas Bindra

को आदर्श कंपनी के 11 मौजूदा और पूर्व पदाधिकारियों को गिरफ्तार कर लिया. इन में सिरोही निवासी कंपनी के पूर्व चेयरमैन वीरेंद्र मोदी और कमलेश चौधरी, चेयरमैन ईश्वर सिंह, मुंबई निवासी पूर्व मैनेजिंग डायरैक्टर प्रियंका मोदी व सीनियर वाइस प्रेसीडेंट वैभव लाढ़ा, अहमदाबाद निवासी चीफ

आरोपी भरत मोदी

फाइनैंस औफिसर समीर मोदी, जयपुर निवासी असिस्टेंट मैनेजिंग डायरैक्टर रोहित मोदी, सिरोही निवासी पूर्व मैनेजिंग डायरैक्टर ललिता राजपुरोहित, आदित्य प्रोजैक्ट के निदेशक भारत मोदी, टैक्टोनिक इंफ्रा के निदेशक भारत दास और 6 कंपनियों के डायरैक्टर विवेक पुरोहित शामिल थे.

एसओजी को जांच में यह भी पता चला कि सोसायटी के संस्थापक मुकेश मोदी और उन का भतीजा राहुल मोदी पहले ही आर्थिक अपराध के मामले में दिल्ली में गिरफ्तार हैं. इन दोनों को सीरियस फ्रौड इनवैस्टीगेशन सेल एसएफआईओ ने दिल्ली में कुछ माह पहले गिरफ्तार किया था.

कंपनी के 11 पदाधिकारियों की गिरफ्तारी के दूसरे दिन 26 मई को एसओजी ने एक और आरोपी राजेश्वर सिंह को गिरफ्तार कर लिया. जयपुर में वैशाली नगर के हनुमान नगर में रहने वाले राजेश्वर सिंह के पिता महावीर सिंह रिटायर्ड आईएएस अधिकारी हैं. राजेश्वर सिंह एक अन्य कंपनी का डायरैक्टर है.

आरोपी रोहित मोदी

इस बीच, सोसायटी के संस्थापक मुकेश मोदी के भाई पूर्व चेयरमैन वीरेंद्र मोदी ने एसओजी की गिरफ्त में सीने में दर्द की शिकायत की. उसे जयपुर के सवाई मानसिंह अस्पताल के कार्डियक आईसीयू में भरती कराया गया.

वीरेंद्र मोदी को 26 मई को अदालत में पेश किया जाना था, लेकिन अस्पताल में भरती होने के कारण वह अदालत नहीं पहुंचा, तो उस के बीमार होने की सच्चाई जानने के लिए न्यायाधीश अरविंद जांगिड़ अदालत से चल कर खुद अस्पताल पहुंच गए. उन्होंने डाक्टरों से वीरेंद्र मोदी के स्वास्थ्य की जानकारी लेने के बाद उसे एक दिन के रिमांड पर एसओजी को सौंप दिया.

गिरफ्तार आरोपियों से पूछताछ और एसओजी की जांचपड़ताल में आदर्श घोटाले की जो कहानी उभर कर सामने आई, उस से पता चलता है कि हमारे देश में लोगों को मोटे मुनाफे का लालच दे कर किस तरह लूटा जा रहा है.

एक बाबू और उस के टैक्सी ड्राइवर भाई ने अपने दिमाग से खेल रच कर लोगों को बेवकूफ बनाया. वह महज 34

Vikas Bhadu

मुकेश मोदी और उस का परिवार

साल में अरबों रुपए के मालिक बन गए. मुकेश मोदी ने अपने भाइयों, बेटेबेटी और दामाद सहित परिवार के लोगों के अलावा दोस्तों को भी कंपनी में शामिल कर अथाह पैसों के सागर में डुबकी लगवाई.

कहानी की शुरुआत करीब 34 साल पहले वर्ष 1985 में हुई थी. सिरोही में प्रकाशराज मोदी रहते थे. वह ग्रामसेवक की सरकारी नौकरी से रिटायर थे. वह रिटायरमेंट के बाद भारतीय किसान संघ से जुड़ गए और उन्हें सिरोही का जिला संयोजक बना दिया गया.

प्रकाशराज मोदी के 3 बेटे हैं, मुकेश मोदी, वीरेंद्र मोदी और भारत मोदी. मुकेश मोदी पहले उद्योग केंद्र में बाबू था. बाद में वह लाइफ और जनरल इंश्योरेंस कंपनियों में बीमा एजेंट के रूप में लंबे समय तक जुड़ा रहा. कहा जाता है कि उस समय मुकेश मोदी मवेशियों की फरजी पोस्टमार्टम रिपोर्ट पेश कर बीमा क्लेम दिलवाने के मामले में मास्टरमाइंड था. बीमा के इस फरजी खेल में उसे अच्छाखासा कमीशन मिलता था.

सन 1985 में मुकेश मोदी और उस के भाइयों ने आदर्श प्रिंटर्स एंड स्टेशनरी कोऑपरेटिव सोसायटी लिमिटेड की शुरुआत की थी. इस सोसायटी में मुकेश मोदी ने खुद को दस्तावेज लेखक और बाइंडर बताया था.

भारत मोदी इस सोसायटी में

Vikas Bhadu

घोटाले के आरोपी मुकेश मोदी को कोर्ट में पेशी के लिए ले जाती पुलिस

मशीनमैन, इन का ड्राइवर ईश्वर सिंह भी मशीनमैन और मां सुशीला मोदी बाइंडर थी. इस सोसायटी में उस समय 18 सदस्य बनाए गए. खास बात यह है कि अधिकांश सदस्य बाद में आदर्श क्रेडिट सोसायटी से जुड़ गए.

जब इस सोसायटी का गठन हुआ था, उस समय प्रकाशराज मोदी का एक बेटा वीरेंद्र मोदी कैसेट रिकौर्डर का काम करता था. कैसेट रिकौर्डर का काम बंद हो गया, तो उस ने स्टेशनरी की दुकान खोल ली. इस के बाद वह टैक्सी चलाने लगा.

बाद में आदर्श प्रिंटर्स एंड स्टेशनरी कोऔपरेटिव सोसायटी पर करोड़ों रुपए की स्टेशनरी बिना टैंडर सप्लाई करने के आरोप लगे. एक बार हुई औडिट में सामने आया था कि यह सोसायटी स्टेशनरी कहीं और से खरीद कर बिल अपने पेश करती है. कहा जाता है कि इस सोसायटी के कामकाज से ही मोदी परिवार के दिन बदलने शुरू हो गए थे.

इस दौरान प्रकाशराज मोदी वर्ष 1989 से 1993 तक सिरोही अरबन कौमर्शियल बैंक के चेयरमैन रहे. उन का बेटा वीरेंद्र मोदी निदेशक था. प्रकाशराज की मौत के बाद मुकेश मोदी पहले प्रबंध समिति का सदस्य बना. फिर वह बैंक का चेयरमैन बन गया. इस बीच मोदी परिवार ने वर्ष 1999 में आदर्श क्रेडिट कोऔपरेटिव सोसायटी की शुरुआत की.

उस समय इस की 50 शाखाएं खोली गईं. उस समय निवेशकों का करीब 7-8 करोड़ रुपया जमा हुआ था. कुछ कारणों से करीब 9 महीने बाद ही इसे बंद कर दिया गया और निवेशकों के पैसे लौटा दिए गए.

बाद में इन्होंने रिजर्व बैंक को अरजी दे कर सिरोही अरबन कौमर्शियल बैंक का नाम बदल कर माधव नागरिक सहकारी बैंक रख लिया. यह नाम आरएसएस के दूसरे सरसंघ चालक माधव सदाशिव गोलवलकर के नाम पर रखा गया था. मुकेश मोदी के इस कदम ने उसे आरएसएस के नजदीक खड़ा कर दिया.

सहकारी संस्थाओं की कमान संभालने और राजनीतिक संरक्षण हासिल होने से मुकेश मोदी और उस के भाई वीरेंद्र मोदी का सिरोही क्षेत्र में लगातार रुतबा बढ़ता गया. वे करोड़ों रुपए में खेलने लगे. सहकारिता के क्षेत्र में प्रभाव बढ़ने और अनापशनाप पैसा आने से वीरेंद्र मोदी की राजनीतिक इच्छाएं जागृत होने लगीं.

Vikas.Bhadu

वह सन 1999 में सिरोही नगर पालिका का चेयरमैन बन गया. बाद में सन 2003 में सिरोही नगर पालिका चेयरमैन का पद एससी कैटेगरी के लिए आरक्षित हो गया, तो वीरेंद्र मोदी ने अपने चपरासी सुखदेव को नगरपालिका का चेयरमैन बनवा दिया.

इस बीच सन 2002 में केंद्र सरकार ने एक से ज्यादा राज्यों में चल रहे सहकारी बैंकों के लिए बने कानूनों में बदलाव कर दिया. इसे मल्टीस्टेट कोऑपरेटिव सोसायटी एक्ट-2002 नाम दिया गया. अब तक माधव नागरिक सहकारी बैंक पर मोदी परिवार का एकाधिकार हो चुका था. वीरेंद्र मोदी भी इस में शामिल हो गया था.

सन 2005 में इन्होंने पूरी प्लानिंग के साथ आदर्श क्रेडिट कोऑपरेटिव सोसायटी को फिर से शुरू किया तो इन के वारेन्यारे होने लगे. आदर्श सोसायटी को मल्टीस्टेट कोऑपरेटिव सोसायटी एक्ट में पंजीकृत करा कर इस का मुख्यालय सिरोही से अहमदाबाद बना दिया गया.

यह वह समय था, जब गांवों और दूरदराज के इलाकों में बैंकिंग व्यवस्था कमजोर थी. आदर्श क्रेडिट सोसायटी ने बैंकिंग व्यवस्था का विकल्प दिया. उन्होंने पौंजी स्कीम के जरिए अपने पैर जमा कर सरकारी और निजी बैंकों की तुलना में लोगों को ज्यादा ब्याज देने का लालच दिया.

इस का नतीजा यह हुआ कि मध्यम वर्ग और कालेधन के लेनदेन से जुड़े लोगों ने सोसायटी की योजना में अरबोंखरबों रुपए का निवेश किया.

साल 2009 में आदर्श सोसायटी ने गुजरात के घाटे में चल रहे 2 सहकारी बैंकों का अधिग्रहण कर लिया. इन में डीसा नागरिक सहकारी बैंक और सुरेंद्रनगर का मर्केंटाइल सहकारी बैंक शामिल था. इस से आदर्श सोसायटी ने गुजरात में अपने पैर जमा लिए.

कहते हैं कि इंसान के पास जब पैसा और प्रभाव हो, तो वह अपराध करने में भी नहीं झिझकता. वीरेंद्र मोदी के खिलाफसिरोही में 12 से ज्यादा मामले दर्ज हैं. सिरोही में वीरेंद्र मोदी की पहचान वीरू मोदी के रूप में थी. वीरेंद्र का पहली पत्नी शकुंतला से तलाक हो चुका है. शकुंतला से उस के 2 बेटे हैं. बाद में वीरेंद्र मोदी ने बक्षा नाम की महिला से शादी कर ली. उस से एक बेटा है.

सिरोही के आदर्श नगर में वीरेंद्र मोदी का 10 हजार वर्गफीट एरिया में फैला आलीशान बंगला है. इस में स्विमिंग पूल, गार्डन सहित सभी सुखसुविधाएं हैं. वहां हाईमास्ट लाइट भी लगी हैं. इस लाइटों के बिल का भुगतान पहले नगर पालिका अदा करती थी.

वीरेंद्र के पास काले रंग की रेंज रोवर सहित कई लग्जरी कारें हैं. वह कछुए सहित कई पालतू जानवर रखने का भी शौकीन है. बंगले पर गनमैन तैनात रहता है. घोटाला उजागर होने पर वन विभाग

Vikas Bhadu

प्रधानमंत्री मोदी के साथ आरोपी मुकेश मोदी के भतीजे राहुल की यह फोटो काफी चर्चा में रही

ने वीरेंद्र मोदी के सिरोही स्थित बंगले से दुर्लभ प्रजाति के 21 स्टार कछुए बरामद किए. वन विभाग ने वीरेंद्र के खिलाफ केस भी दर्ज कर लिया था.

आदर्श क्रेडिट कोऔपरेटिव सोसायटी का पूरा काम मुकेश मोदी संभालता था, जबकि रियल एस्टेट का काम वीरेंद्र मोदी देखता था. मुकेश मोदी ने अपनी बेटी प्रियंका मोदी और दामाद वैभव लोढ़ा के अलावा भाईभतीजों और निकटस्थ लोगों को इस सोसायटी में पदाधिकारी बना रखा था.

राजस्थान में 2017 में उजागर हुए जम्मूकश्मीर के फरजी हथियार लाइसैंस मामले में भी मुकेश मोदी और उस का बेटा राहुल मोदी आरोपी हैं. दोनों को एटीएस मुख्यालय जयपुर बुला कर फरजी हथियार लाइसैंस मामले में पूछताछ की गई थी. बाद में इन्होंने अग्रिम जमानत करा ली थी.

दिल्ली में मुकेश मोदी और उन के बेटे की गिरफ्तारी के बाद से वीरेंद्र मोदी ही सोसायटी का मुख्य कर्ताधर्ता था. एसओजी की ओर से गिरफ्तार किया गया आदर्श क्रेडिट सोसायटी का चेयरमैन ईश्वर सिंह पहले कभी वीरेंद्र मोदी के साथ ही टैक्सी चलाता था.

पहली जून को एसओजी ने 4 आरोपियों को अदालत से 5 दिन के रिमांड पर दोबारा लिया. इन में वीरेंद्र मोदी, रोहित मोदी, विवेक पुरोहित और भरत वैष्णव शामिल थे. एक आरोपी ईश्वर सिंह को अदालत ने न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया था. इस से एक दिन पहले वैभव लोढ़ा को भी अदालत से पुलिस रिमांड पर लिया गया.

रिमांड के दौरान एसओजी की टीम वीरेंद्र मोदी और भरत वैष्णव को ले कर सिरोही पहुंची. इन के आवासों की तलाशी में जमीनों और निवेश से जुड़े दस्तावेज जब्त किए गए. वीरेंद्र मोदी के बंगले से करीब डेढ़ हजार प्लौटों के पट्टे मिले. ये पट्टे अलगअलग नाम से थे और सिरोही व आसपास के इलाकों में काटी गई कालोनियों के थे. इन पट्टों की कीमत करीब 300 करोड़ रुपए के आसपास आंकी गई.

एसओजी की जांच में यह भी पता चला कि आदर्श क्रेडिट कोऔपरेटिव सोसायटी के संचालक की बेटी प्रियंका मोदी और दामाद वैभव मोदी का हर

महीने वेतन डेढ़ करोड़ रुपए था. शादी होने से पहले प्रियंका मोदी 5 साल के दौरान करीब 75 करोड़ रुपए तो वेतन के एवज में ही ले चुकी थी.

शादी के बाद प्रियंका के पति वैभव मोदी को डेढ़ करोड़ रुपए महीने के हिसाब से वेतन दिया जा रहा था. वह करीब 45 करोड़ रुपए सैलरी ले चुका था. प्रियंका और वैभव मुंबई में रहते थे, लेकिन उन्हें गुरुग्राम स्थित कंपनी में काम करना बता रखा था.

दरअसल, आदर्श सोसायटी के देश भर में विस्तार के बाद इस के संचालकों ने निवेशकों के पैसे का घोटाला करने के लिए शैल कंपनियां यानी फरजी कंपनियां बना लीं. गुड़गांव के सुशांत लोक फेज-1 की एक बिल्डिंग में मुकेश मोदी, उस के परिवार के सदस्यों और सहयोगियों के नाम पर कुल 33 कंपनियां रजिस्टर्ड हैं.

असल में इस पते पर 12×15 की एक छोटी सी दुकान है. एसओजी ने जब इस पते पर छापा मारा तो यहां बंगाल का रहने वाला मोती उल मलिक मिला. उस ने बताया कि वह सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक यहां बैठता है. वह इस पते पर आने वाली सारी डाक एकत्र कर गुड़गांव में ही दूसरे औफिस पर पहुंचा देता है. एसओजी को जांच में पता चला कि इस दुकान की मालिक मुकेश मोदी की बेटी प्रियंका मोदी है.

जांच में यह भी पता चला कि मुकेश मोदी महावीर कंसलटेंसी नामक कंपनी में नौकरी कर एक करोड़ रुपए मासिक वेतन लेता था. महावीर कंसलटेंसी को आदर्श सोसायटी ने कंसलटेंसी का काम सौंप रखा था. इस कंसलटेंसी कंपनी में मुकेश मोदी की पत्नी मीनाक्षी मोदी और दामाद वैभव लोढ़ा साझीदार थे.

आदर्श सोसायटी की बैलेंसशीट के मुताबिक सोसायटी ने महावीर कंसलटेंसी को 3 साल के दौरान ही 6 अरब 60 करोड़ 73 लाख 68 हजार 938 रुपए का भुगतान किया था. इस में वर्ष 2015-16 में 59 करोड़ 36 लाख रुपए, वर्ष 2016-17 में एक अरब 94 करोड़ रुपए और वर्ष 2017-18 में 4 अरब 6 करोड़ रुपए का भुगतान किया गया.

इस कंपनी का रजिस्ट्रेशन वर्ष 2013-14 में कराया गया था. उस समय इस कंपनी का टर्नओवर शून्य था. यानी एक रुपए का भी व्यापार नहीं हुआ था, लेकिन 3 साल बाद ही सन 2017 में इस कंपनी का टर्नओवर 500 करोड़ रुपए पहुंच गया.

नोटबंदी के दौरान मोदी परिवार ने 223 करोड़ 77 लाख रुपए कैश इन हैंड बताए थे. इस राशि को खपाने के लिए भी कई फरजीवाड़े किए गए. इस में परिचितों व परिवार के लोगों को फरजी कंपनियों के शेयर होल्डर बना कर उन के खातों में आरटीजीएस के माध्यम से लेनदेन किया गया. बाद में इस राशि से कपड़ों की खरीदारी बताई गई. यह कपड़ा कहां से आया और कहां गया, इस की कोई जानकारी एसओजी को नहीं मिली.

इस के अलावा मोदी बंधुओं ने सोसायटी में बिना किसी मोर्टगेज (गिरवी/रेहन) प्रक्रिया के लोन के नाम पर अपने रिश्तेदारों और जानकारों को अरबों रुपए बांट दिए. गिरवी के नाम पर कोई चलअचल संपत्ति के दस्तावेज नहीं होने से लोन लेने वालों ने यह राशि सोसायटी को नहीं लौटाई.

Vikas Bindal

Vikas Bhadu

घोटालेबाज मुकेश मोदी और भतीजा राहुल मोदी

पुलिस रिमांड पर चल रहे आदर्श सोसायटी घोटाले के पांचों आरोपियों वीरेंद्र मोदी, वैभव लोढ़ा, रोहित मोदी, विवेक पुरोहित और भरत वैष्णव को एसओजी ने 5 जून को जयपुर में अदालत में पेश किया. अदालत ने इन्हें न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया. इस से पहले इस मामले में गिरफ्तार अन्य 7 आरोपियों को भी जेल भेजा जा चुका था.

इस के बाद एसओजी ने आदर्श सोसायटी घोटाले के मुख्य सूत्रधार मुकेश मोदी और उस के भतीजे राहुल मोदी पर शिकंजा कसा. इन दोनों को सीरियस फ्राड इनवैस्टीगेशन सेल (एसएफआईओ) ने दिल्ली में दिसंबर 2018 में गिरफ्तार किया था.

एसएफआईओ ने मुकेश और राहुल मोदी के अलावा इन के सहयोगी को आदर्श सोसायटी में गड़बड़ियां कर निवेशकों से करोड़ों रुपए की धोखाधड़ी करने तथा फरजी कंपनियां बना कर उन को ऋण दे कर हेराफेरी करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था. बाद में एक बार छूटने के बाद इन्हें दोबारा गिरफ्तार किया गया. ये दोनों हरियाणा की गुड़गांव जेल में बंद थे.

एसओजी 10 जून को मुकेश और राहुल मोदी को प्रोडक्शन वारंट पर गिरफ्तार कर जयपुर ले आई. इन्हें अगले दिन जयपुर की अदालत में पेश कर 5 दिन के रिमांड पर लिया गया. मुकेश मोदी ही आदर्श सोसायटी का संस्थापक अध्यक्ष है.

मुकेश और राहुल मोदी से एसओजी ने 5 दिन तक पूछताछ की, लेकिन घोटाले और निवेशकों की रकम के बारे में कोई खास जानकारी नहीं मिल सकी. इस पर एसओजी ने इन्हें दोबारा रिमांड पर लिया.

इस दौरान उन्हें जयपुर से अहमदाबाद भी ले जाया गया. रास्ते में पाली जिले के बर चौराहे पर एसओजी के पुलिसकर्मियों ने दोनों आरोपियों की खातिरदारी भी की. सड़क पर कराए गए चायनाश्ते की तसवीरें वायरल होने पर एसओजी को बदनामी भी झेलनी पड़ी थी. अहमदाबाद में आदर्श सोसायटी के मुख्यालय पर दस्तावेजों की जांच की गई.

रिमांड अवधि पूरी होने पर एसओजी ने मुकेश और राहुल मोदी को 22 जून, 2019 को जयपुर में अदालत में पेश किया. अदालत ने उन्हें न्यायिक हिरासत में भेज दिया.

एसओजी अभी इस मामले की

जांचपड़ताल में जुटी हुई है. आदर्श सोसायटी के खिलाफ राजस्थान, गुजरात और मध्य प्रदेश के पीड़ित निवेशकों ने 50 से अधिक एफआईआर दर्ज कराई है. इस के अलावा इसी सोसायटी के खिलाफ दायर करीब 300 परिवादों की जांच की जा रही है. गुजरात व मध्य प्रदेश में भी इस सोसायटी के खिलाफ पुलिस में मामले दर्ज हुए हैं.

Vikas Bhadu

आदर्श सोसायटी का घोटाला सामने आने के बाद मुकेश मोदी के भतीजे राहुल मोदी की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ एक फोटो भी खूब वायरल हो रही है. इस फोटो में राहुल प्रधानमंत्री से बातचीत करते नजर आ रहा है. फोटो महाराष्ट्र के नासिक की है. इस में प्रधानमंत्री मोदी आदर्श सोसायटी की नासिक शाखा पर मौजूद हैं. प्रधानमंत्री के साथ केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी भी दिखाई दे रहे हैं.

आईएएस अधिकारी
नीरज के. पवन

आदर्श सोसायटी के जरिए अरबों रुपए में खेलने वाले मुकेश मोदी और उन के भाई वीरेंद्र मोदी की महत्त्वाकांक्षा राजनीति में आने की भी रही है. सन 2004 के लोकसभा चुनाव में मुकेश मोदी ने सिरोही से भाजपा टिकट हासिल करने के प्रयास किए थे, लेकिन तब उन के विरोधियों ने माधव सहकारी नागरिक बैंक में वित्तीय गड़बड़ियों का पुलिंदा भाजपा आलाकमान तक पहुंचा दिया था. इस से मुकेश मोदी हाथ मलता रह गया था.

बाद में 2014 के लोकसभा चुनाव से ठीक पहले सिरोही में मुकेश मोदी के पोस्टर और होर्डिंग लगाए गए थे. उस समय मुकेश ने भाजपा से लोकसभा टिकट हासिल करने की पूरी कोशिशें की थीं, लेकिन विरोधियों ने इस बार भी कई तरह के दस्तावेज आलाकमान को भेज कर उन के अरमानों पर पानी फेर दिया था.

आयकर विभाग 2009-10 और 2018 में आदर्श सोसायटी के ठिकानों पर छापे मार कर कारवाई कर चुका है. आयकर विभाग को पहली बार के छापे में यह लग गया था कि सोसायटी में कालेधन के लेनदेन को ले कर गलत तरीके से निवेश हो रहा है. उस समय आदर्श सोसायटी के अनेक लौकर्स से भारी मात्रा में कालाधन बरामद किया गया था.

जून 2018 में आदर्श सोसायटी के अहमदाबाद, जोधपुर, सिरोही सहित 15 ठिकानों पर 100 से ज्यादा अफसरों ने करीब 10 दिन तक छापे की कारवाई की थी. एसओजी ने भले ही आदर्श सोसायटी के घोटाले का भंडाफोड़ कर इन के कर्ताधर्ताओं को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है, लेकिन सोसायटी में अपनी मेहनत की जमापूंजी लगाने वाले निवेशकों को उन का पैसा वापस मिलता नजर नहीं आ रहा है. इस का कारण कानून की कमियां हैं.

आयकर विभाग ने भी मोदी बंधुओं की काफी संपत्तियां जब्त कर रखी हैं. आदर्श सोसायटी के 187 ऋण खातों में 31 मार्च 2019 को 146 अरब 82 करोड़ 24 लाख 42 हजार 239 रुपए बकाया चल रहे थे. ●

मुंह ताकते रह गए हैकर

दुनिया भर में हैकर्स का जाल बढ़ता जा रहा है. हैकर्स अब गोपनीय दस्तावेज या बैंक खातों से रकम ही नहीं, बल्कि हर उस चीज की चोरी कर रहे हैं, जिस के बदले में मोटी रकम ली जा सके.

Vikas Bhadauria

हैकर्स सरकार के महत्त्वपूर्ण विभागों या सुरक्षा क्षेत्र में ही सेंध नहीं लगाते बल्कि किसी व्यक्ति विशेष के मामले में या कारपोरेट क्षेत्र में भी घुसने के प्रयास करने लगे हैं, जिस में उन्हें सफलता भी मिल जाती है. कह सकते हैं कि आप का जो कुछ भी औनलाइन है, हैकर्स उस तक पहुंच सकते हैं.

अभी पिछले दिनों हैकर्स ने ब्रिटेन के प्रसिद्ध म्यूजिकल ग्रुप 'रेडियोहेड' की अब तक जारी नहीं की गईं 18 म्यूजिक एलबम चुरा लीं. ये एलबम 'रेडियोहेड' ने 1997 में ओ.के. कंप्यूटर के साथ काम करते हुए तैयार की थीं.

एलबमों के गाने लीड सिंगर थौम योर्क ने गाए थे. 18 मिनी डिस्क के रूप में रखी गई इन एलबमों में हर एलबम एक घंटे की थी. रेडियोहेड इन एलबमों को पब्लिकली नहीं करना चाहता था, क्योंकि ये ओ.के. कंप्यूटर तक नहीं पहुंची थी. इस के अलावा ये बहुत लंबी थीं, जिस की वजह से वे इन के रिलीज करने के पक्ष में नहीं थे.

इस से पहले कि एलबम रिलीज होतीं, किसी हैकर ने सभी 18 म्यूजिक एलबम चुरा लीं. हैकर ने धमकी दी कि अगर उसे डेढ़ लाख डौलर (लगभग एक करोड़ रुपए) नहीं दिए तो वह इन एलबमों को औनलाइन जारी कर देगा. रेडियोहेड उस हैकर की धमकी में नहीं आया. उस ने हैकर को फिरौती देने के बजाए खुद ही इन एलबमों को जारी कर दिया. इस के अलावा उन्होंने यह भी घोषणा की कि एलबमों की

औनलाइन बिक्री से होने वाली आय पर्यावरण संगठन के लिए काम करने वाले संगठन एक्सटिंक्शन रेबेलियन को दी जाएगी.

रेडियोहेड के गिटारवादक जानी ग्रीनवुड ने बताया कि एक्सटिंक्शन रेबेलियन एक स्वयंसेवी संगठन है, जो मानव द्वारा पर्यावरण को पहुंचाए गए नुकसान के साथ ही जैव विविधता को होने वाली क्षति के प्रति जागरुकता फैलाने का काम करता है.

इस ग्रुप द्वारा आयोजित कार्यक्रमों से ब्रिटेन में क्लाइमेट चेंज के प्रति लोगों के नजरिए में भारी बदलाव आया है. रेडियोहेड ने जो 18 म्यूजिक एलबम औनलाइन जारी की हैं, उन के गीत औनलाइन 1600 रुपए में उपलब्ध हैं.●

जन्नत जो अपने बूते पर
जीना चाहती थी

सोनू की सोच थी कि जब तक किसी भी काम में करने वाले का योगदान न हो तो परिणाम अच्छा नहीं हो सकता. इसीलिए उस ने कई लड़कियों को बीवी बना कर उन्हें देह व्यापार में उतारा, लेकिन जन्नत निखत का व्यवहार उसे रास नहीं आया. आखिर क्यों...

दलदल में डूबी जन्नत

Vikas Bhadu

— प्रकाश पुंज

15 जून, 2019 शनिवार की सुबह की बात है. कुछ लोग नहर के किनारे घूम रहे थे. तभी उन की नजर सूखी नहर में पड़ी एक महिला पर पड़ी. महिला को ऐसी हालत में देख कर लोग इधरउधर खिसक लिए.

लेकिन गांव नंदपुर के रहने वाले कुलदीप माहेश्वरी ने हिम्मत जुटाते हुए इस की सूचना रामनगर कोतवाली को दे दी.

सूचना मिलते ही कोतवाली प्रभारी रवि कुमार सैनी पुलिस टीम के साथ बताई गई जगह पर पहुंच गए. वहां पहले से ही कुछ लोग जमा थे. महिला की लाश नहर में पड़ी थी और उस के हाथपांव बंधे थे. उस की पहचान मिटाने के लिए उस के चेहरे को भी जलाने की कोशिश की गई थी. कोतवाली प्रभारी ने यह सूचना अपने अफसरों को दे दी.

घटना की सूचना पर एएसपी (हल्द्वानी), सीओ तथा फोरैंसिक टीम भी वहां पहुंच गई. पुलिस अधिकारियों ने मौकामुआयना किया. महिला की लाश के पास एक तौलिया, एक चादर और एक रुमाल पड़ा था. महिला का चेहरा इतनी बुरी तरह से झुलसा हुआ था कि उसे पहचान पाना मुश्किल था.

सब से पहले पुलिस ने नहर में सीढ़ी लगा कर शव को बाहर निकाला. युवती ने लाल रंग की कमीज और सलवार पहन रखी थी. मौकामुआयना करने पर जाहिर हो रहा था कि उस की हत्या कहीं दूसरी जगह कर के लाश वहां डाली गई है.

पुलिस ने वहां पर मौजूद लोगों से उस की शिनाख्त करानी चाही तो कोई भी मृतका को नहीं पहचान सका. उसी वक्त चिल्किया का रहने वाला छोटे नाम का एक व्यक्ति वहां पहुंचा. उस ने पुलिस को बताया कि उस की बीवी पिछले 4 महीने से लापता है, जिस की गुमशुदगी वह थाने में दर्ज करा चुका है.

पुलिस ने नन्हे को लाश दिखाई तो उस ने कहा कि वह उस की पत्नी की लाश नहीं है. छोटे ने पुलिस को बताया कि उस की बीवी के हाथ पर उस का नाम गुदा हुआ था, लेकिन उस महिला के किसी भी हाथ पर कुछ भी गुदा हुआ नहीं था.

काफी प्रयास के बाद भी जब उस महिला की शिनाख्त नहीं हो पाई तो पुलिस ने अपनी कारवाई आगे बढ़ाते हुए शव को मोर्चरी में रखवा दिया. इस के बाद पुलिस उस के फोटो ले कर आसपास के क्षेत्र व स्थानीय होटलों में जा कर उस की शिनाख्त कराने की कोशिश करने लगी.

लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ. इस पर पुलिस ने युवती की शिनाख्त के लिए समाचार पत्रों में उस का फोटो छपवाया, साथ ही पैंफ्लेट छपवा कर सीमा से सटे जिलों और दिल्ली में लगवा दिए गए.

मृतका की शिनाख्त के लिए पुलिस इधरउधर हाथपांव मारती रही. इसी दौरान 22 जून, 2019 को दिल्ली के भजनपुरा का रहने वाला अंकित शर्मा रामनगर कोतवाली पहुंचा.

अंकित शर्मा ने पुलिस को बताया कि अखबार में जिस महिला की लाश का फोटो छपा है, वह उस की बीवी जन्नत निखत अंसारी से मिलताजुलता है, जो चिल्किया में किराए का कमरा ले कर अकेली रहती थी.

पुलिस ने अंकित शर्मा को मोर्चरी में रखी युवती की लाश दिखाई तो उस ने उस की शिनाख्त अपनी बीवी जन्नत निखत के रूप में की. लाश की शिनाख्त हो जाने पर पुलिस टीम ने राहत की सांस ली. लेकिन पुलिस इस बात को ले कर हैरत में थी कि अंकित ब्राह्मण है और उस की बीवी मुसलिम.

पुलिस को अंकित पर ही शक हुआ कि कहीं उसी ने या उस के परिवार वालों ने जन्नत के दूसरे समुदाय की होने की वजह से उसे मौत के घाट तो नहीं उतार दिया. अपना शक दूर करने के लिए पुलिस ने अंकित शर्मा से इस मामले में पूछताछ की. लेकिन अंकित बेकसूर लगा.

पूछताछ पूरी हो जाने के बाद अंकित शर्मा ने पुलिस को एक लिखित तहरीर देते हुए बताया कि मुझे अपनी पत्नी की हत्या का शक उसी के जीजा सोनू पर है, जो रामनगर में ही रहता है. अंकित की तहरीर पर पुलिस ने सोनू के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर उस की तलाश शुरू कर दी.

इसी दौरान पुलिस ने अंकित शर्मा से विस्तृत जानकारी लेते हुए इस मामले से संबंधित सारे तथ्य जुटा लिए. पुलिस सोनू के ठिकाने पर पहुंची तो वह अपने घर से फरार मिला. कई पुलिस टीमें उस की तलाश में लग गईं.

22 जून की शाम को पुलिस को एक मुखबिर ने सूचना दी कि सोनू इस वक्त चोरपानी स्टोन क्रेशर के पीछे छिपा हुआ है. पुलिस ने उस जगह की घेराबंदी कर के सोनू को हिरासत में ले लिया.

कोतवाली में उस से पूछताछ की

Vikas Bhadauria

लाश मिलने वाली जगह पर पुलिस और अन्य लोग

Vikas Bhadu

गई तो एक चौंका देने वाली सच्चाई सामने आई, जो कालगर्ल रैकेट से जुड़ी हुई थी.

उत्तराखंड के जिला नैनीताल से 56 किलोमीटर दूर पहाड़ों पर स्थित है रामनगर. यह आबादी के हिसाब से छोटा शहर ही सही, लेकिन सदियों से पर्यटकों के लिए पसंदीदा पर्यटन स्थल रहा है. इस की वजह वनों और पहाड़ों वाला रमणीक स्थल तो है ही, लेकिन इस से भी बड़ी वजह है जिम कार्बेट नैशनल पार्क, जहां शेर और हाथी जैसे जीवों को खुले जंगल में घूमते देखा जा सकता है.

यहां पर हर साल देशविदेश से लाखों पर्यटक घूमने के लिए आते हैं. रामनगर में पर्यटकों के हिसाब से होटलों और रिसोर्टों की भी भरमार है. जिन के सहारे यहां पर कालगर्ल्स का धंधा फलफूल रहा है.

सोनू सैनी रामनगर के चोरपानी इलाके में स्टोन क्रैशर के पीछे रहता था. शादी से पहले वह आवारा और झगड़ालू प्रवृत्ति का था. उस की हरकतों से आजिज आ कर उस के पिता पूरन सैनी ने उस की शादी उत्तर प्रदेश के अमरोहा शहर के मोहल्ला रफतपुरा की रहने वाली मीना से कर दी थी. पूरन सिंह को उम्मीद थी कि वह शादी के बाद सुधर जाएगा, लेकिन शादी के बाद वह और भी ज्यादा बिगड़ गया था.

उस के कई औरतों से अनैतिक संबंध थे. अपनी मोटी कमाई वह अपने इस शौक पर उड़ा देता था. बाद में वह धीरेधीरे जिस्मफरोशी के धंधे में उतर गया. यह काम करते हुए वह ऐसी कई औरतों के संपर्क में आ गया, जो पहले से देहव्यापार से जुड़ी थीं.

सोनू उन के साथ मौजमस्ती करने के अलावा उन के लिए ग्राहक भी लाने लगा. ग्राहक लाने पर उसे भी दलाली के रूप में कमाई होने लगी थी. सोनू इस धंधे में पड़ कर खुश था.

कुछ समय बाद उस की पत्नी भी उस के इस धंधे से वाकिफ हो गई. घर में बिना करेधरे पैसा आए तो किसे बुरा लगता है. घर की बढ़ी आमदनी को देखते हुए उस की बीवी भी उस के रंग में रंग गई. बीवी ने उस के इस धंधे में भागीदारी करनी शुरू कर दी. फिर तो वह बिना किसी खौफ के ग्राहकों को अपने घर पर बुला लेता और मोबाइल से फोन कर के कालगर्ल को भी वहीं आने को कह देता था.

उस का यह धंधा बिना किसी रुकावट के काफी समय तक चलता

रहा. लेकिन जब गांव वालों को उस की कारगुजारी का पता चला तो उन्होंने विरोध किया. गांव में सोनू की इस पोल का खुलासा होते ही हंगामा हो गया.

इसे ले कर उस की गांव वालों से मारपीट हो जाती थी. कई बार मारपीट होने पर यह मामला थाने तक पहुंचा, तो सोनू फरार हो गया.

बाद में उस ने रामनगर के पास पीरूमदारा में किराए पर कमरा ले लिया. उस ने वहां पर रह कर फिर से देहव्यापार की दलाली का काम शुरू कर दिया. इसी धंधे के दौरान उस की मुलाकात उत्तर प्रदेश के जिला बिजनौर के कस्बा नूरपुर की रुखसार उर्फ प्रिया से हुई. प्रिया देखनेभालने में खूबसूरत और गदराए शरीर की कमसिन युवती थी.

पहली मुलाकात में ही सोनू का दिल प्रिया पर आ गया. उस ने प्रिया को अपनी मीठीमीठी बातों में फंसा कर उस के साथ शादी कर ली. समय के साथसाथ रुखसार भी उस के 2 बच्चों की मां बन गई. पैसों के लालच में उस ने रुखसार को भी धंधे में लगा दिया.

रुखसार की एक छोटी बहन थी जन्नत निखत, जो अपनी अम्मी सलीमा के साथ दिल्ली के भजनपुरा इलाके में रहती थी. रुखसार की अम्मी सलीमा पहले से ही देहव्यापार से जुड़ी थी.

सलीमा हालांकि दिल्ली में रह कर अपना धंधा चला रही थी. लेकिन वह जानती थी कि यह काम रामनगर जैसे क्षेत्र में ज्यादा फलेगाफूलेगा. यही सोच कर उस ने अपनी बेटी रुखसार के पास आनाजाना बढ़ा दिया था. सोनू उसे पहले से ही जानता था. सोनू के संपर्क में आने के बाद उस ने दिल्ली से रामनगर तक इस धंधे से जुड़ी युवतियों की सप्लाई शुरू कर दी.

अंकित शर्मा दिल्ली के भजनपुरा इलाके में सलीमा के घर के सामने ही रहता था. आमनेसामने रहने के कारण सलीमा ने अंकित शर्मा से जानपहचान बढ़ा ली. उसी दौरान अंकित की मुलाकात जन्नत निखत से हुई. जन्नत देखनेभालने में खूबसूरत थी. जन्नत की खूबसूरती अंकित को ऐसी भायी कि वह उसे दिल दे बैठा. इतना ही नहीं, बल्कि शादी करने को भी तैयार हो गया.

यह बात जब जन्नत की अम्मी सलीमा को पता चली तो उस ने खुशीखुशी जन्नत की शादी अंकित शर्मा से कर दी. शादी के बाद जन्नत मां को छोड़ कर अंकित के साथ रहने लगी.

शादी से पहले अंकित को सलीमा या जन्नत की हकीकत मालूम नहीं थी. लेकिन जब उस का सलीमा के घर आनाजाना शुरू हुआ तो वह सच्चाई जान गया. हकीकत सामने आते ही अंकित सलीमा से कन्नी काटने लगा. धीरेधीरे उस ने अपनी बीवी जन्नत और उस की मां के मिलने पर पाबंदी लगा दी. जिस की वजह से दोनों परिवारों में विवाद की स्थिति पैदा हो गई थी.

इस के बाद सलीमा अंकित को ले कर कई बार रामनगर रुखसार के पास आई, जो अंकित को बिलकुल पसंद नहीं था. उस की सास देहव्यापार के धंधे से जुड़ी है, जान कर उसे बहुत दुख हुआ था. यह जानकारी मिलते ही उस ने अपनी बीवी जन्नत को उस की अम्मी से दूर करने की कोशिश शुरू की थी, लेकिन जन्नत ने उस की एक नहीं सुनी.

अंकित और जन्नत के बीच विवाद

Vikas Bhadauria

Vikas Bhadu

पुलिस हिरासत में आरोपी सोनू सैनी और गुड्डू

इतना बढ़ा कि मामला पुलिस तक जा पहुंचा, जिस के बाद जन्नत ने अपने पति अंकित से अलग रहना शुरू कर दिया. दोनों का विवाद अभी तक दिल्ली न्यायालय में विधाराधीन है.

बाद में जन्नत दिल्ली छोड़ कर रामनगर में अपनी बहन के साथ आ कर रहने लगी थी. उसी समय सोनू और रुखसार के बीच देह व्यापार के धंधे को ले कर इतना विवाद बढ़ा कि रुखसार भी सोनू को छोड़ कर अलग कमरा ले कर रहने लगी.

रामनगर आते ही जन्नत को जीजा की याद सताने लगी थी. हालांकि वह अपनी बहन और सोनू के रिश्तों के बारे में भलीभांति जान चुकी थी, लेकिन इस के बावजूद उस से सोनू से मिलनाजुलना शुरू कर दिया. उस समय तक सोनू का जिस्मफरोशी का धंधा ठीकठाक चल रहा था. उस ने रामनगर के कई इलाकों में किराए के कमरे ले रखे थे.

चूंकि सोनू सैनी रामनगर क्षेत्र में काफी समय से देहव्यापार से जुड़ा था, इसीलिए आसपास के क्षेत्र में उस की काफी लोगों से जानपहचान हो गई थी. कई सफेदपोश भी उस के संपर्क में थे. जब उस के पास लड़कियों की डिमांड आती तो वह फोन कर उन्हें देह के पुजारियों से मिलवा देता. उसे सिर्फ अपने कमीशन से मतलब था.

कभीकभी तो सोनू एक ही सौदे में 10 हजार रुपए तक कमा लेता था. कमाई बढ़ने पर उसने एक नई वैगनआर कार भी खरीद ली. वह पार्टियों की डिमांड पर युवतियों को उसी कार में बिठा कर उन के पते तक छोड़ आता था.

इसी दौरान एक दिन जन्नत अपनी बहन रुखसार को बिना बताए सोनू से मिलने जा पहुंची. जन्नत को देखते ही सोनू खुश हो गया. उस दिन उस की और सोनू की काफी देर बातचीत हुई. उसी दौरान जन्नत ने सोनू को बताया कि उस का अपने पति अंकित से विवाद हो गया था, जिस कारण वह उसे छोड़ कर रामनगर चली आई.

जन्नत की यह बात सुनते ही सोनू के मन में लड्डू फूटने लगे. उस की दूसरी बीवी रुखसार उसे पहले ही छोड़ कर जा चुकी थी, इसलिए जन्नत को देखते ही उस ने ठान लिया कि वह उसे किसी भी तरह अपने विश्वास में ले कर उस से शादी करेगा. हुआ भी यही. वह रोजाना जन्नत को फोन करने लगा.

कुछ ही दिनों में दोनों के बीच अच्छे संबंध बन गए. सोनू जानता था कि जन्नत के आते ही उस का जिस्मफरोशी का धंधा और भी फलनेफूलने लगेगा. सोनू की मेहनत रंग लाई. उस ने कुछ ही दिनों में जन्नत को विश्वास में ले कर उसे अपने साथ रहने को मजबूर कर दिया. अंततः जन्नत उसी के साथ रहने लगी.

जन्नत को अपने जाल में फंसाने के बाद सोनू ने उसे पीरूमदारा स्थित साईं मंदिर के पास एक कमरे में ठहरा दिया था. उस की देखरेख और खानेपीने की व्यवस्था के लिए उस ने रेखा नाम की एक महिला उस के पास छोड़ दी थी, जो उसे सारी सुविधाएं मुहैया कराती थी. कुछ दिनों से जन्नत और सोनू पीरूमदारा के उसी कमरे में मियांबीवी की तरह साथ रह रहे थे.

सोनू जन्नत के परिवार की कमजोरी पहले ही पकड़ चुका था. उसे पता था कि जन्नत शुरूशुरू में भले ही इस धंधे में आने से मना करे, लेकिन वह बाद में अपने आप लाइन पर आ जाएगी. जन्नत देखने में मौडल जैसी लगती थी. सोनू जानता था कि देहव्यापार के बाजार में उस के दाम भी अच्छे मिलेंगे.

यही सोच कर उस ने जन्नत की मजबूरी का लाभ उठाते हुए उसे दलदल में धकेलने की कोशिश की. लेकिन अंकित के साथ शादी करने के बाद वह फिर से उस दलदल में नहीं फंसना चाहती थी.

सोनू ने उसे समझाने की कोशिश की कि वह सीधेसीधे रास्ते पर आ जाए, लेकिन जब वह उस के बहकावे में नहीं आई तो उसे दूसरा रास्ता अख्तियार करना पड़ा. उस ने कई रईसों को उस के फोटो भेज रखे थे. जिस के लिए उसे मुंहमांगी रकम भी मिली थी.

सोनू ने एक दिन उसे कोल्डड्रिंक में नशे की गोली डाल कर पिला दी. कोल्डड्रिंक पीने के कुछ देर बाद वह नशे में बेसुध हो गई. मौके का फायदा उठा कर सोनू ने उस के साथ अवैध संबंध बनाए. जब इस बात की जानकारी जन्नत को हुई तो उसे गहरा सदमा पहुंचा. लेकिन उस वक्त वह मजबूर थी. उसे छोड़ कर वह कहीं जा भी नहीं सकती थी.

अंततः वह सोनू पर शादी के लिए दबाव बनाने लगी. जबकि सोनू जानता था कि जब उस की बहन ही उस की न हुई तो वह उस के साथ क्या निभा पाएगी. यही सोचते हुए उस ने जन्नत के साथ शादी से साफ मना कर दिया.

सोनू के साथ रहते हुए जन्नत भी शराब की आदी हो गई थी. वह सोनू के साथ बैठ कर पीती थी. एक दिन उस ने सोनू के पीछे शराब पी और घर में पूरी तरह से उत्पात मचाया. उस ने सोनू की गैरमौजूदगी में उस की पहली बीवी मीना और उस के भाई गुड्डू को बहुत बुराभला कहते हुए देख लेने की धमकी दी.

यह बात मीना और गुड्डू को नागवार लगी. सोनू के घर आते ही उन दोनों ने उस के कान भर दिए. मीना ने सोनू से कहा कि वह अपनी चहेती साली से सावधान रहे. वह कभी भी उस की जान ले सकती है.

यह जानकारी मिलते ही सोनू ने उसे समझाने की कोशिश की. लेकिन जन्नत ने सोनू से भी साफ शब्दों में कह दिया कि या तो वह उस से शादी कर ले वरना वह उसे किसी भी लायक नहीं छोड़ेगी,

Vikas Bhadauria

पुलिस में जा कर उस का भंडाफोड़ कर देगी. जन्नत की इस धमकी के बाद सोनू गंभीर हो गया. इस के बाद सोनू जन्नत को मौत की नींद सुलाने का रास्ता खोजने लगा.

14 जून, 2019 को सोनू शराब ले कर कमरे पर पहुंचा. उस दिन उस का साला गुड्डू भी उस के साथ था. शाम को गुड्डू और जन्नत ने एक साथ बैठ कर शराब पी. जल्दी ही नशा जन्नत के सिर चढ़ कर बोलने लगा. उस दिन भी

रामनगर कोतवाली प्रभारी रवि सैनी

शराब के नशे में जन्नत ने सोनू के सामने शादी वाली बात रखी, जिस पर सोनू ने साफ शब्दों में कहा कि वह एक बीवी के होते दूसरी शादी नहीं कर सकता.

इतना सुनने के बाद जन्नत आपे से बाहर हो गई. उस ने सोनू के साथ हाथापाई तक कर डाली थी. जिस से बौखला कर सोनू ने जन्नत को उठा कर जमीन पर पटक दिया.

जमीन पर गिरते ही जन्नत बेहोश हो गई. उस के बाद वह अपने साले गुड्डू की मदद से उसे कमरे में ले गया. फिर वहां पड़े बिजली के तार से उस का गला घोंट दिया, जिस से उस की मौत हो गई.

जन्नत को मौत की नींद सुलाने के बाद सोनू ने अपने साले की मदद से उस की लाश वैगनआर कार से ले जा कर पीरूमदारा रेलवे लाइन की तरफ सूखी नहर में डाल दी. नहर में डालने के बाद लाश की पहचान छिपाने के लिए दोनों ने उस के चेहरे को जलाने की योजना बनाई. लाश नहर में डालने के बाद दोनों कार से भवानीगंज पैट्रोलपंप पर पहुंचे. वहां से पैट्रोल ले कर वापस उसी जगह गए, जहां नहर में लाश डाली थी.

सोनू ने जन्नत के सोने के कुंडल और अंगूठी उतार कर अपने पास रख लीं. फिर जन्नत के चेहरे और कपड़ों पर पैट्रोल डाल कर आग लगा दी. बाद में दोनों ही अपने कमरे पर चले आए.

यह संयोग ही रहा कि मृतका के चेहरे और उस के कपड़ों पर पैट्रोल डालने के बाद भी न तो पूरी तरह से उस का चेहरा जल पाया था और न ही उस के कपड़े. जिस के आधार पर ही उस की पहचान हो पाई वरना जन्नत की मौत राज बन कर रह जाती.

सोनू ने अपनी पहली बीवी मीना के अलावा 2 और बीवियां रखनी चाहीं. वह सभी को देहव्यापार में उतारना चाहता था. लेकिन उस की यह मंशा पूरी नहीं हो सकी.

इस केस का खुलासा होने के बाद पुलिस ने अभियुक्त सोनू की निशानदेही पर पीरूमदारा में किराए के मकान से हत्या में इस्तेमाल किया गया बिजली का तार चोरपानी वाले मकान की अलमारी से मृतका के कुंडल तथा अंगूठी भी बरामद कर ली. इस के अलावा पुलिस ने इस हत्याकांड में इस्तेमाल की गई वैगनआर कार भी अपने कब्जे में ले ली. पूछताछ के बाद पुलिस ने दोनों अभियुक्तों सोनू और गुड्डू को कोर्ट में पेश कर के जेल भेज दिया. ●

Vikas Bindal

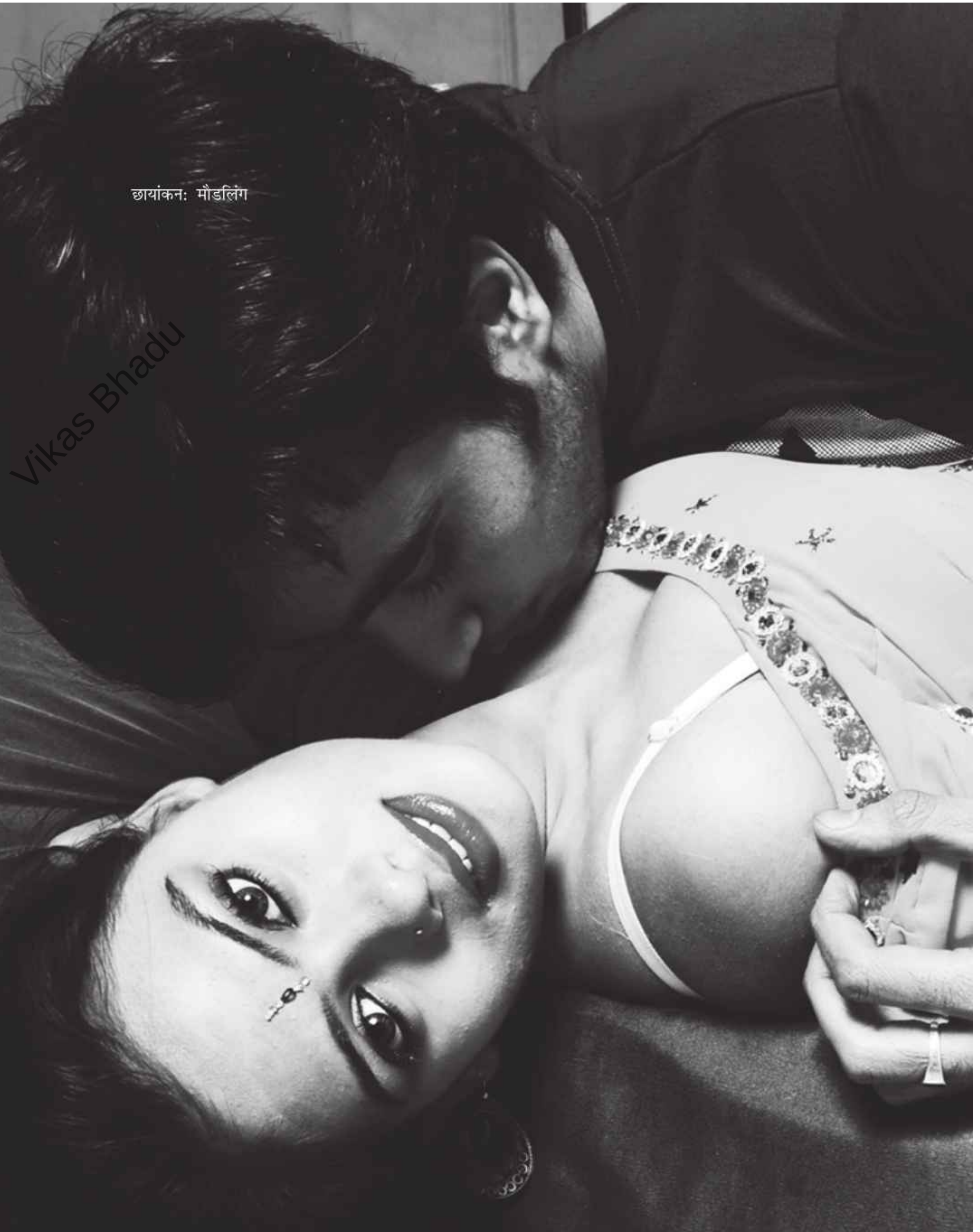

छायांकन: मौडलिंग

Vikas Bhadu

प्रेमप्रकाश 4 बच्चों का बाप था. उस की गृहस्थी हंसीखुशी से चल रही थी. इस के बावजूद उस ने अपनी साली रामकली से अवैध संबंध बना लिए. यह बात उस के साढ़ू रामप्रकाश को पता चली तो रामकली ने पति के सामने जीजा प्रेमप्रकाश का ऐसा हाल किया कि...

साली की चाल में जीजा हलाल

— सुरेशचंद्र मिश्र

4 जून, 2019 की सुबह 8 बजे रेखा कानपुर के थाना बर्रा पहुंची तो उस के पति प्रेमप्रकाश की मोटरसाइकिल थाना परिसर में खड़ी थी. मोटरसाइकिल देख कर उस का माथा ठनका. वह मन ही मन बुदबुदाने लगी, 'लगता है, प्रेम ने रात में शराब पी कर किसी से झगड़ा किया होगा और पुलिस ने उसे हवालात में डाल दिया होगा.'

लेकिन प्रेम न तो हवालात में था और न ही रिपोर्टिंग रूम में. पता लगाने के लिए वह सीधे थानाप्रभारी के कक्ष में पहुंच गई. सुबहसुबह एक औरत को बदहवास हालत में देख कर थानाप्रभारी अतुल श्रीवास्तव ने पूछा, ''कैसे आना हुआ ?''

''साहब, मेरा नाम रेखा है. मैं बर्रा के नरपत नगर जरौली फेस-1 में रहती हूं. मेरा पति प्रेमप्रकाश मीट कारोबारी है. कल सुबह वह दुकान पर गया था, उस के बाद घर वापस नहीं आया. थाने में उस की मोटरसाइकिल तो खड़ी है, पर प्रेम का कुछ पता नहीं चल पा रहा.''

थानाप्रभारी अतुल श्रीवास्तव रेखा पर एक नजर डाल कर बोले, ''यह मोटरसाइकिल बीती रात गश्त के दौरान

जे ब्लौक तिराहे से बरामद हुई है. नशे की हालत में तुम्हारे पति ने मोटरसाइकिल खड़ी कर दी होगी और किसी दोस्त के घर पड़ा होगा. घबराओ नहीं, वह आ जाएगा.''

रेखा इस तसल्ली के साथ घर लौट आई कि उस के पति ने किसी से झगड़ा नहीं किया और थाने में बंद नहीं है.

इधर 5 जून को मौर्निंग वाक पर जाने वाले कुछ लोगों ने पिरौली पुल के पास सड़क किनारे गड्ढे में जूट का एक बोरा पड़ा देखा. बोरे का मुंह खुला था और दुर्गंध आ रही थी. बोरे के आसपास कुत्ते घूम रहे थे. बोरे में लाश की आशंका के मद्देनजर सुबोध तिवारी नाम के एक व्यक्ति ने अपने मोबाइल फोन से थाना बर्रा पुलिस को सूचना दे दी.

थानाप्रभारी अतुल श्रीवास्तव ने तिवारी की सूचना के बारे में वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों को अवगत कराया और पुलिस टीम के साथ पिरौली पुल पहुंच गए. वहां सड़क किनारे भीड़ जुटी थी. भीड़ को हटा कर वह उस जगह पहुंचे जहां बोरा पड़ा था. पुलिसकर्मियों की मदद से उन्होंने बोरे से शव बाहर निकाला.

शव एक जवान आदमी का था, जिस के गरदन और पैर साइकिल ट्यूब से बंधे थे. सिर पर चोट का निशान था. मृतक की उम्र करीब 40 साल थी. शरीर से वह हृष्टपुष्ट था. शव को पहले प्लास्टिक की बोरी में लपेटा गया था, फिर उसे जूट के बोरे में भर दिया गया था. जामातलाशी में उस के पास से ऐसा कुछ भी नहीं मिला, जिस से उस की पहचान हो सके.

थानाप्रभारी अतुल श्रीवास्तव अभी

प्रेमप्रकाश: अय्याशी ले डूबी

निरीक्षण कर ही रहे थे कि सूचना पा कर एसएसपी अनंतदेव तिवारी, एसपी (साउथ) रवीना त्यागी तथा सीओ (गोविंद नगर) आर.के. चतुर्वेदी घटनास्थल पर आ गए. एसपी (साउथ) रवीना त्यागी ने मौके पर फौरैंसिक टीम को भी बुला लिया था. पुलिस अधिकारियों ने शव का बारीकी से निरीक्षण किया. फौरैंसिक टीम ने भी वहां से साक्ष्य जुटाए.

सड़क किनारे भीड़ जमा थी. लोग शव को देखते और नाक पर रूमाल रख कर हट जाते. कोई भी शव की शिनाख्त नहीं कर पा रहा था. उसी समय थानाप्रभारी अतुल श्रीवास्तव को रेखा नाम की उस महिला की याद आई, जिस का पति रात को घर नहीं आया था, जिस की मोटरसाइकिल थाना परिसर में खड़ी थी.

उन्होंने उस का नामपता नोट कर लिया था. अतुल ने उस महिला के संबंध में पुलिस अधिकारियों को अवगत कराया और उस के घर जा पहुंचे.

Vikas Bhadauria

Vikas Bhadu

पति की लाश देख बिलखती रेखा

रेखा उस समय घर पर ही थी. पासपड़ोस की कुछ महिलाएं तथा घर वाले भी मौजूद थे. पुलिस जीप देख कर रेखा को लगा कि शायद उस के पति का पता लग गया है.

थानाप्रभारी अतुल श्रीवास्तव जीप से उतर कर रेखा के पास पहुंचे. उन्होंने कहा, ''रेखा, पिरौली पुल के पास सड़क किनारे बोरे में बंद हमें एक लाश मिली है. अभी तक उस की शिनाख्त नहीं हुई है. मैं चाहता हूं कि तुम मेरे साथ चल कर उसे देख लो.''

अनहोनी की आशंका से रेखा घबरा गई. फिर 2-3 महिलाओं के साथ वह जीप में बैठ गई. उस के घर वाले भी पिरौली पुल की ओर रवाना हो गए. 10 मिनट में पुलिस जीप पिरौली पुल के पास पहुंच गई.

रेखा जीप से उतर कर लाश के पास पहुंची. उस ने लाश देखी तो चीख पड़ी. लाश उस के पति प्रेमप्रकाश की ही थी. इस के बाद तो कोहराम मच गया. बेहाल रेखा को साथ आई महिलाएं संभालने में लग गईं. एसपी रवीना त्यागी ने भी रेखा को सांत्वना दी, साथ ही आश्वासन भी दिया कि उस के पति के कातिल जल्दी ही पकड़ लिए जाएंगे. इस के बाद उन्होंने लाश को पोस्टमार्टम हाउस भिजवा दिया.

रेखा बेहाल थी. उस की आंखों में आंसू थम नहीं रहे थे. इस हालत में पुलिस अधिकारियों ने उस से पूछताछ करना उचित नहीं समझा. शाम को जब वह कुछ सामान्य हुई तब एसपी (साउथ) रवीना त्यागी ने उसे थाना बर्रा बुलवा लिया. उन्होंने बड़े भावुक अंदाज में उस से पूछताछ शुरू की. उन्होंने पूछा, ''रेखा, तुम्हारे पति की हत्या किस ने और क्यों की, इस बारे में कुछ बता सकती हो ?''

''मैडमजी, मेरे पति की हत्या संजू, विपुल और उस के साथी अजय ने की है. संजू मीट का कारोबारी है और विपुल उस का नौकर है, जबकि अजय उस का दोस्त है. व्यापारिक प्रतिद्वंदिता में इन लोगों ने शराब पिला कर प्रेम को मार डाला और शव को बोरे में भर कर फेंक आए.''

रेखा के बयान के आधार पर एसपी (साउथ) रवीना त्यागी ने संजू, अजय और विपुल को थाना बर्रा बुलवा लिया. थाने में उन्होंने तीनों से कड़ाई से पूछताछ की, लेकिन उन्होंने हत्या की बात से इनकार किया.

संजू ने साथ खानेपीने, नशे में लड़नेझगड़ने तथा व्यापारिक प्रतिद्वंदिता की बात तो स्वीकार की, लेकिन हत्या करने से साफ इनकार कर दिया. सख्ती से पूछताछ करने के बाद भी जब उन्होंने जुर्म नहीं कबूला तो रवीना त्यागी को लगा कि ये लोग कातिल नहीं हैं. उन्होंने उन तीनों को थाने से घर भेज दिया.

मृतक की पत्नी रेखा के अनुसार मृतक के पास मोबाइल था, जो अभी तक बरामद नहीं हुआ था. थानाप्रभारी ने प्रेमप्रकाश के कातिलों को पकड़ने के लिए उस के मोबाइल की काल डिटेल्स निकलवा कर टावर डाटा डंप कराया तो प्रेमप्रकाश की आखिरी लोकेशन 3 जून की सुबह 11 बज कर 5 मिनट पर बर्रा 8 हाईटेंशन लाइन के पास मिली. उस के बाद उस का फोन बंद हो गया था.

थानाप्रभारी ने रेखा से पूछताछ की तो उस ने बताया कि बर्रा 8 में उस के जेठ ज्वाला प्रसाद का साढ़ू रामप्रकाश अपनी पत्नी रामकली के साथ रहता है. उस का 9 साल का एक बेटा भी है. इस जानकारी पर अतुल श्रीवास्तव बर्रा 8 स्थित रामप्रकाश के घर पहुंचे तो वहां ताला लटक रहा था.

रामप्रकाश पर शक गहराया तो पुलिस ने उस की तलाश तेज कर दी. थानाप्रभारी अतुल श्रीवास्तव ने ताबड़तोड़ छापे मार कर रामप्रकाश के कई रिश्तेदारों को उठा लिया. उन में से जिन के पास रामप्रकाश का मोबाइल नंबर था, उन से बात करने को कहा. लेकिन रामप्रकाश ने कोई काल रिसीव ही नहीं की.

लेकिन एक खास रिश्तेदार से उस ने बात की और बताया कि वह महाराजपुर के संदलपुर गांव में है. यह जानकारी प्राप्त होते ही थानाप्रभारी अतुल श्रीवास्तव संदलपुर गांव पहुंच गए और वहां से उन्होंने रामप्रकाश को गिरफ्तार कर लिया.

जीजा को हलाल करवाने वाली रामकली

उसे थाना बर्रा लाया गया. थाने पर जब उस से उस की पत्नी रामकली के बारे में पूछा गया तो उस ने बताया कि रामकली उस की बहन चंदा के घर नौरंगाबाद में है. उस के साथ उस का बेटा भी है. यह पता चलते ही अतुल श्रीवास्तव ने नौरंगाबाद से रामकली को हिरासत में ले लिया.

थानाप्रभारी ने रामप्रकाश तथा उस की पत्नी रामकली से थाने में प्रेमप्रकाश की हत्या के बारे में पूछताछ की. पूछताछ में दोनों ने इस बात से इनकार किया कि प्रेमप्रकाश की हत्या में उन का कोई हाथ है. जब दोनों से अलगअलग सख्ती से

Vikas Publication

Vikas Bhadu

प्रेमप्रकाश की हत्या के आरोप में गिरफ्तार रामकली और उस का पति रामप्रकाश

पूछताछ की गई तो रामकली टूट गई.

उस के टूटते ही रामप्रकाश ने भी हत्या का जुर्म स्वीकार कर लिया. रामकली ने हत्या में प्रयुक्त लोहे की रौड, जिसे उस ने घर में छिपा दिया था, बरामद करा दी. रामप्रकाश ने अपने घर से मृतक का मोबाइल फोन बरामद करा दिया, जिसे उस ने तोड़ कर कूड़ेदान में फेंक दिया था. पुलिस ने दोनों चीजें बरामद कर लीं.

थानाप्रभारी अतुल श्रीवास्तव ने प्रेमप्रकाश हत्याकांड के कातिलों को पकड़ने की जानकारी एसपी (साउथ) रवीना त्यागी को दी. रवीना त्यागी ने आननफानन में अपने कार्यालय में प्रैसवार्ता की और अभियुक्तों को मीडिया के सामने पेश कर के घटना का खुलासा कर दिया.

चूंकि अभियुक्तों ने अपना जुर्म कबूल कर लिया था, इसलिए थानाप्रभारी अतुल श्रीवास्तव ने मृतक की पत्नी रेखा को वादी बना कर भादंवि की धारा 302 के तहत रामप्रकाश और उस की पत्नी रामकली के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली. दोनों को विधिसम्मत गिरफ्तार कर लिया गया. पुलिस जांच में साली की चाल में जीजा के हलाल होने की घटना प्रकाश में आई.

बर्रा कानपुर शहर का एक विशाल आबादी वाला क्षेत्र है. बड़ा क्षेत्र होने के कारण इसे 8 भागों में बांटा गया है. इसी बर्रा भाग 7 के जरौली फेस-1 के अंतर्गत नरपत नगर मोहल्ला पड़ता है. प्रेमप्रकाश अपने परिवार के साथ इसी मोहल्ले में रहता था. उस के परिवार में पत्नी रेखा के अलावा 2 बेटे रवि व पंकज तथा 2 बेटियां सोनम और पूनम थीं.

प्रेमप्रकाश मीट का व्यापारी था. घर से कुछ दूरी पर पारकर रोड पर उस की दुकान थी. प्रेमप्रकाश अपनी दुकान तो चलाता ही था, साथ ही छोटे दुकानदारों को भी मीट की सप्लाई करता था. इस के अलावा होटलों में भी वह मीट सप्लाई करता था. मीट व्यापार में प्रेमप्रकाश को अच्छी कमाई होती थी. क्षेत्र में वह प्रेम मीट वाला के नाम से जाना जाता था.

प्रेमप्रकाश कमाता तो अच्छा था, लेकिन उस में कुछ कमियां भी थीं. वह

शराब व शबाब का शौकीन था. अपनी आधी कमाई वह शराब और अय्याशी में ही खर्च कर देता था. बाकी बची कमाई से घर का खर्च चलता था. पति की इस कमजोरी से रेखा वाकिफ थी.

जब वह शराब पी कर आता तो रेखा उसे समझाती, लेकिन वह कहता, ''रेखा, जिस तरह तुम मेरी संगिनी हो, उसी तरह यह लाल परी भी मेरी संगिनी है. शाम ढलते ही यह मुझे सताने लगती है, तब मैं बेबस हो जाता हूं.''

रेखा ने पति को लाख समझाया, पर जब समझातेसमझाते थक गई तो उस ने उसे उसी के हाल पर छोड़ दिया. वह केवल घर और बच्चों की परवरिश में लगी रहती. बच्चे जब बड़े हुए तो वह प्रेम के साथ दुकान चलाने का गुर सीखने लगे और बेटियां मां के घरेलू काम में हाथ बंटाने लगीं.

प्रेमप्रकाश के बड़े भाई का नाम ज्वाला प्रसाद था. वह उस के घर से कुछ ही दूरी पर रहता था. ज्वाला प्रसाद की पत्नी का नाम शिवकली था. प्रेमप्रकाश शराबी और अय्याश था, इसलिए वह प्रेमप्रकाश को पसंद नहीं करता था. दरअसल, प्रेमप्रकाश व शिवकली का रिश्ता देवरभाभी का था. इस नाते वह शिवकली से हंसीमजाक, छेड़छाड़ कर लेता था. लेकिन ज्वाला को यह सब पसंद नहीं था. उस ने प्रेमप्रकाश के घर आने पर प्रतिबंध लगा दिया था.

शिवकली की तरह उस की बहन रामकली भी खूबसूरत थी. वह बर्रा-8 निवासी रामप्रकाश से ब्याही थी. रामकली रामप्रकाश की 5वीं पत्नी थी. उस की पहली पत्नी मीरा बर्रा में ही रहती थी. दूसरी और तीसरी पत्नी ने उस का साथ यह कह कर छोड़ दिया था कि वह उम्र में बड़ा है.

चौथी पत्नी सरोज को वह बिहार के दरभंगा से लाया था. लेकिन प्रताड़ना से परेशान हो कर वह भाग गई थी. इस के बाद ही वह रामकली को ब्याह कर लाया था. शादी के 2 साल बाद रामकली एक बच्चे की मां बन गई थी.

एक रोज सीटीआई चौराहा स्थित गुलाब सिंह के शराब ठेके पर बड़े ही नाटकीय ढंग से प्रेमप्रकाश और रामप्रकाश की मुलाकात हुई. उस रोज ठेके पर दोनों शराब पीने आए थे. शराब पीतेपीते बातचीत का सिलसिला शुरू हुआ तो दोनों का रिश्ता साढ़ू भाई का निकला. इस के बाद तो शराब का नशा दोगुना हो गया. उस रोज खानेपीने का पैसा प्रेमप्रकाश ने ही चुकता किया. यद्यपि रामप्रकाश मना करता रहा.

रामप्रकाश और प्रेमप्रकाश दोनों ही पक्के शराबी थे. उन के बीच जल्द ही दोस्ती हो गई. रिश्ते ने उन की दोस्ती और गहरी कर दी. पहले दोनों शराब ठेके पर पीते थे, लेकिन अब उन की महफिल रामप्रकाश के घर जमने लगी.

घर आतेजाते प्रेमप्रकाश की नजर रामप्रकाश की खूबसूरत बीवी रामकली पर पड़ी, जो रिश्ते में उस की साली लगती थी. साली का शबाब पाने के लिए प्रेमप्रकाश जोड़जुगत बैठाने लगा.

जब भी प्रेमप्रकाश का मन रामप्रकाश के घर जाने का होता, वह उसे मोबाइल से सूचना देता और फिर शाम ढलते ही मीट की थैली और शराब की बोतल ले कर रामप्रकाश के घर पहुंच जाता. रामकली मीट पकाती और वे दोनों शराब की महफिल सजाते.

Vikas Prakashan

Vikas Bhadu

जिस स्थान पर लाश मिली थी, वहां जांच करती फोरेंसिक टीम

कभीकभी तो रामकली ही दोनों को पैग बना कर देती. इस दौरान प्रेमप्रकाश की निगाहें रामकली पर ही टिकी रहतीं. वह उस से शरारत भी कर बैठता था.

चूंकि प्रेमप्रकाश और रामकली का रिश्ता जीजासाली का था. इस नाते प्रेमप्रकाश रामकली से हंसीमजाक और छेड़छाड़ करने लगा. कभी एकांत मिलता तो वह उसे बांहों में भी भर लेता और गालों पर चुंबन जड़ देता.

जीजा की इस हरकत पर रामकली तुनक जाती. प्रेमप्रकाश तब उसे यह कह कर मना लेता कि साली तो वैसे भी आधी घरवाली होती है. रामकली का मूड फिर भी ठीक न होता तो वह उसे हजार 5 सौ रुपए दे कर मना लेता.

प्रेमप्रकाश की पत्नी रेखा 4 बच्चों की मां बन चुकी थी. उस का रंगरूप भी सांवला था और स्वभाव से वह कर्कश थी. जबकि साली रामकली रसीली थी. उस का रंग गोरा और शरीर मांसल था. रामकली के आगे रेखा फीकी थी, इसलिए प्रेमप्रकाश उस पर लट्टू था और उसे हर हाल में अपना बनाना चाहता था.

दूसरी तरफ रामकली भी अपने पति रामप्रकाश से खुश नहीं थी. 4 बीवियों को भोगने वाले रामप्रकाश में अब वह पौरुष नहीं रहा था, जिस की रामकली कामना करती थी. इसलिए जब रिश्ते में जीजा प्रेमप्रकाश ने उस से छेड़छाड़ शुरू की तो उसे भी अच्छा लगने लगा और वह भी मन ही मन उसे चाहने लगी.

एक शाम प्रेमप्रकाश रामकली के घर पहुंचा तो वह बनसंवर कर सब्जी लेने सब्जी मंडी जाने वाली थी. प्रेमप्रकाश ने एक नजर इधरउधर डाल कर पूछा, ''भाईसाहब नजर नहीं आ रहे. क्या वह कहीं बाहर गए हैं?''

''नहीं, बाहर तो नहीं गए हैं, लेकिन जाते समय कह गए थे कि देर रात तक आएंगे.''

रामकली की बात सुन कर प्रेमप्रकाश की बांछें खिल उठीं. उस ने लपक कर घर का दरवाजा बंद किया,

फिर साली को बांहों में भर कर बिस्तर पर जा पहुंचा. रामकली ने कुछ देर बनावटी विरोध किया, फिर खुद ही उस का सहयोग करने लगी.

जीजासाली का अवैध रिश्ता कायम हुआ तो वक्त के साथ बढ़ता ही गया. पहले प्रेमप्रकाश, रामप्रकाश की मौजूदगी में ही घर आता था, लेकिन अब वह वक्तबेवक्त और उस की गैरहाजिरी में भी आने लगा.

Vikas Bhadu

दोनों को जब भी मौका मिलता, एकदूसरे की बांहों में समा जाते. जीजासाली के अवैध रिश्तों की भनक रामप्रकाश को भले ही न लगी, लेकिन पड़ोसियों के कान खड़े हो गए. जीजासाली की रासलीला के चर्चे पासपड़ोस की महिलाएं करने लगीं.

रामप्रकाश किराए पर ई-रिक्शा चलाता था. 8-10 घंटे में वह जो भी कमाता था, उस से उस के परिवार का खर्च चलता था. कभीकभी कुछ पैसे पत्नी को भी दे देता था. रामप्रकाश पत्नी पर भरोसा करता था, जबकि रामकली उस के भरोसे को तोड़ रही थी. आखिर एक दिन सच सामने आ ही गया.

उस दिन सुबहसुबह रामकली और पड़ोसन के बीच गली में कूड़ा फेंकने को ले कर तूतू मैंमैं होने लगी. लड़तेझगड़ते दोनों एकदूसरे के चरित्र पर कीचड़ उछालने लगीं.

रामकली ने पड़ोसन को बदचलन कहा तो उस का पारा चढ़ गया, ''अरी जा, बड़ी सतीसावित्री बनती है. मेरा मुंह मत खुलवा, पति के काम पर जाते ही जीजा की बांहों में समा जाती है. खुद बदलचन है और मुझे कह रही है.''

दोनों महिलाओं का वाकयुद्ध थमने का नाम नहीं ले रहा था. संयोग से तभी रामप्रकाश आ गया. उस ने अपनी पत्नी रामकली और पड़ोसन को झगड़ते देखा तो रामकली को ही डांटा, ''आपस में झगड़ते तुम्हें शर्म नहीं आती. चलो, घर के अंदर जाओ.''

रामकली बड़बड़ाती, पैर पटकती घर के अंदर चली गई. इस के बाद रामप्रकाश पड़ोसन से मुखातिब हुआ, ''रामकली तो अनपढ़, गंवार औरत है लेकिन तुम तो पढ़ीलिखी हो. गली में सरेआम ये तमाशा करना अच्छी बात है क्या?''

पड़ोसन का गुस्सा काबू के बाहर था. वह हाथ नचाते हुए बोली, ''भाईसाहब, आप रामकली को सीधा समझते हैं, जबकि वह सीधेपन की आड़ में आप को बेवकूफ बना कर गुलछर्रे उड़ाती है.''

रामप्रकाश की खोपड़ी सांयसांय करने लगी. उसे लगा कि पड़ोसन के सीने में जरूर कोई संगीन राज दफन है, जो गुस्से में बाहर आने को बेताब है. अतः उस ने पूछा, ''मैं कुछ समझा नहीं, साफसाफ कहिए.''

''भाईसाहब, मैं आप से कहना तो नहीं चाहती थी लेकिन आप जब जानना ही चाहते हैं तो सुनिए. दरअसल आप की बीवी रामकली ने मोहल्ले में गंदगी फैला रखी है. आप की गैरमौजूदगी में प्रेमप्रकाश नाम का एक आदमी, जिसे रामकली अपना जीजा बताती है, आ जाता है. उस के आते ही दरवाजा अंदर से बंद हो जाता है. फिर आप के आने से कुछ देर पहले ही दरवाजा खुलता है और वह चला जाता है. बंद दरवाजे के पीछे क्या होता है, यह पूरी गली को मालूम है.''

रामकली ने अपनी चाल से पति का गुस्सा तो ठंडा कर दिया, लेकिन उस के मन में डर बैठ गया. उस ने जीजा प्रेमप्रकाश को सारी जानकारी दे कर पति की गैरमौजूदगी में आने से मना कर दिया.

Vikas Bhadu

रामप्रकाश सन्नाटे में आ गया. उस की गैरमौजूदगी में रामकली ऐसा भी कुछ कर सकती है, वह सोच भी नहीं सकता था. अपमानबोध तथा शर्म से रामप्रकाश का सिर झुक गया. वह बुझी सी आवाज में बोला, ''बहुत अच्छा किया आप ने जो सारी बातें मेरी जानकारी में ला दीं.''

रामप्रकाश की जानकारी में ऐसा बहुत कम हुआ था, जब प्रेमप्रकाश उस की गैरमौजूदगी में आया हो. प्रेमप्रकाश उसे फोन कर के पहले पूछ लेता था कि वह घर में है या नहीं.

उस के बाद ही वह आता था. जबकि उस महिला ने बताया कि प्रेमप्रकाश उस की गैरमौजूदगी में आता है. उस के आते ही रामकली दरवाजा बंद कर लेती है.

इस के बाद रामप्रकाश अपने घर में दाखिल हुआ और रामकली को सीधे सवालों के निशाने पर ले लिया, ''सुना तुम ने, पड़ोसन तुम्हारे बारे में क्या कह रही थी ?''

''हां, उस की भी बात सुनी और तुम्हारी भी सुन ली.'' रामकली पति को ही आंखें दिखाने लगी, ''बड़े शरम की बात है कि वो कलमुंही मुझ पर इलजाम लगाती रही और तुम चुपचाप सुनते रहे. तुम्हें तो उस समय उस का मुंह नोंच लेना चाहिए था.''

रामप्रकाश के सब्र का पैमाना छलक गया. वह दांत किटकिटाते हुए बोला, ''रामकली, यह बताओ तुम पहले से झूठी और बेशर्म थी या मेरे घर आ कर हो गई ?''

रामकली की घबराहट चेहरे पर तैरने लगी. वह बोली, ''तुम कहना क्या चाहते हो ?''

''तुम सच पर परदा डालने की कोशिश मत करो. बताओ, तुम्हारा और प्रेमप्रकाश का चक्कर कब से चल रहा है ?''

रामकली पति के सवालों का जवाब देने के बजाए खुद को सही साबित करने के लिए इधरउधर की बातें करती रही.

पति का गुस्सा देख कर रामकली समझ गई कि अगर उस ने सच नहीं बताया तो रामप्रकाश पीटपीट कर उस की जान ले लेगा. अतः उस ने जमीन पर बैठ कर हाथ जोड़ कर कहा, ''अब बस करो, मैं सब बता देती हूं.''

इस के बाद रामकली का मुंह खुला. उस ने सच्चाई तो बताई लेकिन अपनी चाल का पेंच फंसा दिया. उस ने प्रेमप्रकाश से नाजायज रिश्ता तो मान लिया लेकिन आरोप उसी पर मढ़ दिया कि वह उसे जबरदस्ती अपनी हवस का शिकार बनाता है. उस ने इसलिए मुंह बंद रखा कि उन दोनों की दोस्ती न टूटे.

रामकली ने अपनी चाल से पति का गुस्सा तो ठंडा कर दिया, लेकिन उस के मन में डर बैठ गया. उस ने जीजा प्रेमप्रकाश को सारी जानकारी दे कर पति की गैरमौजूदगी में आने से मना कर दिया. इधर रामप्रकाश ने साढ़ू प्रेमप्रकाश को भी आड़ेहाथों लिया और पत्नी से नाजायज रिश्ता बनाने को धिक्कारा.

लगभग 6 महीने तक दोनों में तनातनी के साथ बोलचाल बंद रही, इस के बाद प्रेमप्रकाश द्वारा गलती के लिए क्षमा मांगने और भविष्य में फिर गलती न करने की शर्त पर रामप्रकाश ने उसे माफ कर दिया. रामप्रकाश ने यह भी शर्त रखी कि वह जब भी घर आएगा, उस की मौजूदगी में ही आएगा.

अब प्रेमप्रकाश जब भी साली के घर आता, उस के पति रामप्रकाश की मौजूदगी में ही आता. प्रेमप्रकाश के आने पर रामकली उस से दूरियां बनाए रखती ताकि पति को उस पर शक न हो.

रामप्रकाश और प्रेमप्रकाश की महफिल जमती. नशे में नोकझोंक भी होती. उस के बाद प्रेमप्रकाश अपने घर चला जाता. प्रेमप्रकाश के जाने के बाद रामप्रकाश नशे में रामकली को खूब गालियां बकता और इलजाम लगाता कि नशे के बहाने वह उसी से मिलने आता है.

3 जून, 2019 की सुबह 8 बजे प्रेमप्रकाश अपने बेटों रवि और पंकज के साथ अपनी मीट की दुकान पर पहुंचा और दुकान खोल कर बिक्री करने लगा. लगभग 10 बजे किसी बात को ले कर उस का पड़ोसी दुकानदार संजू से झगड़ा हो गया.

मूड खराब होने पर उस ने दुकान चलाने की जिम्मेदारी दोनों बेटों पर छोड़ी और मोटरसाइकिल ले कर कहीं चला गया. रास्ते में उस ने साढ़ू रामप्रकाश से फोन पर बात की तो वह घर पर ही था.

प्रेमप्रकाश ने लगभग 11 बजे बर्रा-8 स्थित शराब ठेके से बोतल खरीदी और साली रामकली के घर पहुंच गया. घर पर रामप्रकाश व उस का पड़ोसी दोस्त रमेश यादव मौजूद थे. कुछ देर तीनों आपस में हंसीमजाक, बातचीत करते रहे. फिर तीनों की शराब पार्टी शुरू हुई. कई पैग गले से नीचे उतारने के बाद रामप्रकाश बोला, ''साढ़ू भाई, अभी मजा नहीं आया.''

रमेश ने भी उस की हां में हां मिलाई. इस के बाद प्रेमप्रकाश पर्स से 5 सौ का नोट निकाल कर बोला, ''जाओ, ले कर आओ.''

रामप्रकाश रमेश को साथ ले कर प्रेमप्रकाश की मोटरसाइकिल से शराब

एसएसपी अनंतदेव तिवारी

खरीदने चला गया. उस के जाते ही प्रेमप्रकाश साली को बांहों में भर कर बोला, ''कब से तुम से मिलने को तड़प रहा हूं. आज अच्छा मौका है, मेरी इच्छा पूरी कर दो.''

''नहीं, वह आ गए और तुम्हारे साथ देख लिया तो मारमार कर मेरी जान ही ले लेंगे. अनुज भी घर में है. वह अपने बाप को सब बता देगा.''

''ऐसा नहीं होगा, अनुज को मैं पैसा दे कर समोसे खाने भेज दूंगा और भाईसाहब को आने में समय लगेगा.''

इस के बाद प्रेमप्रकाश ने 10 रुपए दे कर अनुज को समोसा खाने घर से बाहर भेज दिया. फिर वह साली रामकली को कमरे में ले गया और शारीरिक सुख भोगने लगा. दोनों को

Vikas Bindal

कई माह के बाद मौका मिला था, सो असीम आनंद की अनुभूति कर रहे थे. इस आनंद में दोनों भूल गए कि घर का दरवाजा खुला है.

कुछ देर बाद रामप्रकाश शराब ले कर लौटा तो उस ने पत्नी रामकली और प्रेमप्रकाश को आपत्तिजनक स्थिति में देख लिया. फिर क्या था, वह रामकली पर टूट पड़ा और अर्धनग्न अवस्था में ही पीटने लगा.

2-4 लातघूंसे खाने के बाद रामकली ने फिर वही चाल चली और बोली,

एसपी (साउथ) रवीना त्यागी

''मुझे क्यों पीट रहे हो, इस वहशी को पीटो जो मुझे जबरदस्ती अपनी हवस का शिकार बना रहा था. मैं ने तो इसे बहुत समझाया, लेकिन यह वहशी नहीं माना.''

यह सुनते ही रामप्रकाश प्रेमप्रकाश से उलझ गया और दोनों में मारपीट होने लगी. झगड़ा बढ़ता देख पड़ोसी रमेश यादव अपने घर चला गया. उस के बाद रामकली ने मुख्य दरवाजा बंद कर दिया और दोनों में बीचबचाव करने लगी. लेकिन उन दोनों पर नशा हावी था. उन का झगड़ा बंद नहीं हुआ.

जब उस के पति पर प्रेमप्रकाश भारी पड़ने लगा तो खुद को पाकसाफ साबित करने के लिए रामकली लोहे की रौड उठा लाई और पीछे से प्रेमप्रकाश के सिर पर वार कर दिया. इस वार से प्रेमप्रकाश मूर्छित हो कर जमीन पर गिर गया. उसी समय रामप्रकाश उस की छाती पर सवार हो गया और उस का गला दबा कर उसे मार डाला.

हत्या करने के बाद दोनों को लाश ठिकाने लगाने की चिंता हुई. इस के लिए दोनों ने मृत प्रेमप्रकाश के पैर तोड़मरोड़ कर साइकिल ट्यूब से गले से बांध दिए. शव को उन्होंने पहले प्लास्टिक बोरी में, फिर जूट के बोरे में भर कर मुंह बंद कर दिया.

रामप्रकाश ने रात में लाश को ई-रिक्शा पर लादा और सुनसान इलाके पिरौली पुल के पास सड़क किनारे फेंक आया. इस के बाद दोनों ने फर्श पर पड़े खून के धब्बों को साफ किया. मृतक के मोबाइल को तोड़ कर कूड़ेदान में फेंक दिया और रौड घर में छिपा दी. इस के बाद दोनों घर में ताला लगा कर फरार हो गए.

इधर रवि और पंकज शाम तक दुकान पर बैठे रहे, फिर दुकान बंद कर घर पहुंचे और मां को बताया कि पिताजी का संजू से झगड़ा हुआ था. उस के बाद वह कहीं चले गए और वापस नहीं आए. रेखा रात भर पति के वापस आने का इंतजार करती रही. सुबह वह थाना बर्रा पहुंची तो वहां पति की मोटरसाइकिल खड़ी थी, लेकिन पति नहीं था. दूसरे रोज रामप्रकाश की लाश मिल गई थी.

9 जून, 2019 को थाना बर्रा पुलिस ने अभियुक्तों रामप्रकाश तथा रामकली को कानपुर कोर्ट में रिमांड मजिस्ट्रैट की अदालत में पेश किया, जहां से उन दोनों को जिला जेल भेज दिया गया. ●

—कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित

Vikas Bhadauria

साजिश पड़ी भारी

— अशोक शर्मा

Vikas Bhadu

मंगेश रणसिंग रुक्मिणी को बहुत चाहता था. थोड़ी कोशिश के बाद न सिर्फ उस की यह मुराद पूरी हुई बल्कि रुक्मिणी से उस की शादी भी हो गई. शादी के कुछ दिनों बाद ही ऐसा क्या हुआ कि उस ने अपनी पत्नी रुक्मिणी के ऊपर पैट्रोल डाल कर आग लगा दी...

पहली मई, 2019 की बात है. दिन के करीब 12 बजे का समय था, जब महाराष्ट्र के अहमदनगर से करीब 90 किलोमीटर दूर थाना पारनेर क्षेत्र के गांव निधोज में उस समय अफरातफरी मच गई, जब गांव के एक घर में अचानक आग के धुएं, लपटों और चीखनेचिल्लाने की आवाजें आनी शुरू हुईं. चीखनेचिल्लाने की आवाजें सुन कर गांव वाले एकत्र हो गए. लेकिन घर के मुख्यद्वार पर ताला लटका देख खुद को असहाय महसूस करने लगे.

यह बात किसी की समझ में नहीं आ रही थी कि जब घर में लोग हैं तो बाहर से ताला किस ने लगाया. संजय और स्वप्निल नाम के 2 युवक जल्दी से कुल्हाड़ी उठा कर लाए और उन्होंने दरवाजा तोड़ दिया.

दरवाजा टूटते ही घर के अंदर से 3 बच्चे, एक युवक और युवती निकल कर बाहर आए. बच्चों की हालत तो ठीक थी, लेकिन युवती और युवक की स्थिति काफी नाजुक थी. गांव वालों ने आननफानन में एंबुलेंस बुला कर उन्हें स्थानीय अस्पताल पहुंचाया, जहां डाक्टरों ने उन का प्राथमिक उपचार कर के उन्हें पुणे के सेसूनडाक अस्पताल के लिए रेफर कर दिया. साथ ही इस मामले की जानकारी पुलिस कंट्रोल रूम को भी दे दी.

पुलिस कंट्रोल रूम से मिली जानकारी पर थाना पारनेर के इंसपेक्टर बाजीराव पवार ने चार्जरूम में मौजूद ड्यूटी अफसर को बुला कर तुरंत इस मामले की डायरी बनवाई और बिना विलंब के एएसआई विजय कुमार बोत्रो, सिपाही भालचंद्र दिवटे, शिवाजी कावड़े और अन्ना वोरगे के साथ अस्पताल की तरफ रवाना हो गए. रास्ते में उन्होंने अपने मोबाइल फोन से मामले की जानकारी अपने वरिष्ठ अधिकारियों को दे दी.

जिस समय पुलिस टीम अस्पताल परिसर में पहुंची, वहां काफी लोगों की भीड़ जमा हो चुकी थी. इन में अधिकतर उस युवक और युवती के सगेसंबंधी थे. पूछताछ में पता चला कि युवती का नाम रुक्मिणी है और युवक का नाम मंगेश

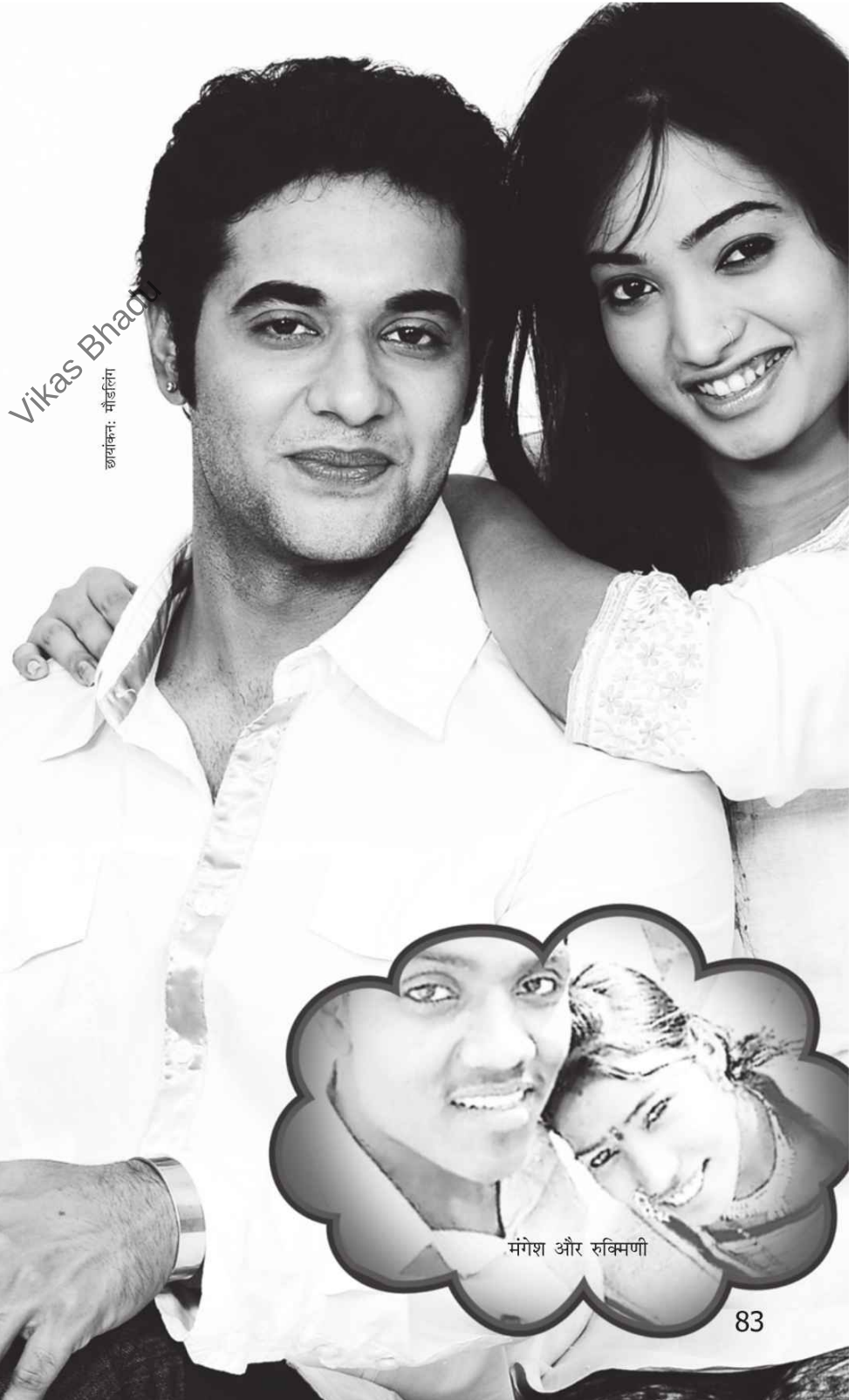

मंगेश और रुक्मिणी

छायांकन: मौडलिंग

Vikas Bhadu

रणसिंग लोहार. रुक्मिणी लगभग 70 प्रतिशत और मंगेश 30 प्रतिशत जल चुका था. अधिक जल जाने के कारण रुक्मिणी बयान देने की स्थिति में नहीं थी. मंगेश रणसिंग भी कुछ बताने की स्थिति में नहीं था.

इंस्पेक्टर बाजीराव पवार ने मंगेश रणसिंग और अस्पताल के डाक्टरों से बात की. इस के बाद वह अस्पताल में पुलिस को छोड़ कर खुद घटनास्थल पर आ गए.

घटना रसोईघर के अंदर घटी थी, जहां उन्हें पैट्रोल की एक खाली बोतल मिली. रसोईघर में बिखरे खाना बनाने के सामान देख कर लग रहा था, जैसे घटना से पहले वहां पर हाथापाई हुई हो.

जांचपड़ताल के बाद उन्होंने आग से बच गए बच्चों से पूछताछ की. बच्चे सहमे हुए थे. उन से कोई खास बात पता नहीं चली. वह गांव वालों से पूछताछ कर थाने आ गए. मंगेश रणसिंग के भाई महेश रणसिंग को वह साथ ले आए थे. उसी के बयान के आधार पर रुक्मिणी के परिवार वालों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी.

इस मामले में रुक्मिणी का बयान महत्त्वपूर्ण था. लेकिन वह कोई बयान दर्ज करवा पाती, इस के पहले ही 5 मई, 2019 को उस की मृत्यु हो गई. मंगेश रणसिंग और उस के भाई महेश रणसिंग के बयानों के आधार पर यह मामला औनर किलिंग का निकला.

रुक्मिणी की मौत के बाद इस मामले ने तूल पकड़ लिया, जिसे ले कर सामाजिक कार्यकर्ता और आम लोग सड़क पर उतर आए और संबंधित लोगों की गिरफ्तारी की मांग करने लगे. इस से जांच टीम पर वरिष्ठ अधिकारियों का दबाव बढ़ गया. उसी दबाव में पुलिस टीम ने रुक्मिणी के चाचा घनश्याम सरोज और मामा सुरेंद्र भारतीय को गिरफ्तार कर लिया. रुक्मिणी के पिता मौका देख कर फरार हो गए थे.

पुलिस रुक्मिणी के मातापिता को गिरफ्तार कर पाती, इस से पहले ही इस केस ने एक नया मोड़ ले लिया. रुक्मिणी और मंगेश रणसिंग के साथ आग में फंसे बच्चों ने जब अपना मुंह खोला तो मामला एकदम अलग निकला. बच्चों के बयान के अनुसार पुलिस ने जब गहन जांच की तो मंगेश रणसिंग स्वयं ही उन के राडार पर आ गया.

मामला औनर किलिंग का न हो कर एक गहरी साजिश का था. इस साजिश के तहत मंगेश रणसिंग ने अपनी पत्नी की हत्या करने की योजना बनाई थी. पुलिस ने जब मंगेश से विस्तृत पूछताछ की तो वह टूट गया. उस ने अपना गुनाह स्वीकार करते हुए रुक्मिणी हत्याकांड की जो कहानी बताई, वह रुक्मिणी के परिवार वालों और रुक्मिणी के प्रति नफरत से भरी हुई थी.

23 वर्षीय मंगेश रणसिंग गांव निधोज का रहने वाला था. उस के पिता चंद्रकांत रणसिंग जाति से लोहार थे. वह एक कंस्ट्रक्शन साइट पर राजगीर का काम करते थे. घर की आर्थिक स्थिति ज्यादा अच्छी नहीं थी. फिर भी गांव में उन की काफी इज्जत थी. सीधेसादे सरल स्वभाव के चंद्रकांत रणसिंग के परिवार में पत्नी कमला के अलावा एक बेटी प्रिया और 3 बेटे महेश रणसिंग और ओंकार रणसिंग थे.

मंगेश रणसिंग परिवार में सब से

Vikas Bhadauria

छोटा था. वह अपने दोस्तों के साथ सारा दिन आवारागर्दी करता था. गांव के स्कूल से वह किसी तरह 8वीं पास कर पाया था. बाद में वह पिता के काम में हाथ बंटाने लगा. धीरेधीरे उस में पिता के सारे गुण आ गए. राजगीर के काम में माहिर हो जाने के बाद उसे पुणे की एक कंस्ट्रक्शन साइट पर सुपरवाइजर की नौकरी मिल गई.

Vikas Bhade

वैसे तो मंगेश को पुणे से गांव आनाजाना बहुत कम हो पाता था, लेकिन जब भी वह अपने गांव आता था तो गांव में अपने आवारा दोस्तों के साथ दिन भर इधरउधर घूमता और सार्वजनिक जगहों पर बैठ कर गप्पें मारता. इसी के चलते जब उस ने रुक्मिणी को देखा तो वह उसे देखता ही रह गया.

मंगेश रणसिंग: गुस्से से उजड़ गया परिवार

20 वर्षीय रुक्मिणी और मंगेश का एक ही गांव था. उस का परिवार भी उसी कंस्ट्रक्शन साइट पर काम करता था, जिस पर मंगेश अपने पिता के साथ काम करता था. इस से मंगेश रणसिंग का रुक्मिणी के करीब आना आसान हो गया था. रुक्मिणी का परिवार उत्तर प्रदेश का रहने वाला था. उस के पिता रामा रामफल भारतीय जाति से पासी थे. सालों पहले वह रोजीरोटी की तलाश में गांव से अहमदनगर आ गए थे. बाद में वह अहमदनगर के गांव निधोज में बस गए थे. यहीं पर उन्हें एक कंस्ट्रक्शन साइट पर काम मिल गया था.

बाद में उन्होंने अपनी पत्नी सरोज और साले सुरेंद्र को भी वहीं बुला लिया था. परिवार में रामा रामफल भारतीय के अलावा पत्नी, 2 बेटियां रुक्मिणी व 5 वर्षीय करिश्मा थीं.

अक्खड़ स्वभाव की रुक्मिणी जितनी सुंदर थी, उतनी ही शोख और चंचल भी थी. मंगेश रणसिंग को वह अच्छी लगी तो वह उस से नजदीकियां बढ़ाने की कोशिश करने लगा.

मंगेश रणसिंग पहली ही नजर में रुक्मिणी का दीवाना हो गया था. वह रुक्मिणी को अपने जीवनसाथी के रूप में देखने लगा था. उस की यह मुराद पूरी भी हुई.

कंस्ट्रक्शन साइट पर रुक्मिणी के परिवार वालों का काम करने की वजह से मंगेश रणसिंग की राह काफी आसान हो गई थी. वह पहले तो 1-2 बार रुक्मिणी के परिवार वालों के बहाने उस के घर गया. इस के बाद वह मौका देख कर अकेले ही रुक्मिणी के घर आनेजाने लगा.

मंगेश रुक्मिणी से मीठीमीठी बातें कर उसे अपनी तरफ आकर्षित करने की कोशिश करता. साथ ही उसे पैसे भी देता और उस के लिए बाजार से उस की जरूरत का सामान भी लाता. जब भी वह रुक्मिणी से मिलने उस के घर जाता, उस के लिए कुछ न कुछ ले कर जाता. साथ ही उस के भाई और बहन के लिए भी खानेपीने की चीजें ले जाता था.

मांबाप की जानपहचान और उस का व्यवहार देख कर रुक्मिणी भी मंगेश की इज्जत करती थी. रुक्मिणी उस के लिए चायनाश्ता करा कर ही भेजती थी. मंगेश रणसिंह तो रुक्मिणी का दीवाना

था ही, रुक्मिणी भी इतनी नादान नहीं थी. 20 वर्षीय रुक्मिणी सब कुछ समझती थी.

वह भी धीरेधीरे मंगेश रणसिंग की ओर खिंचने लगी थी. फिर एक समय ऐसा भी आया कि वह अपने आप को संभाल नहीं पाई और परकटे पंछी की तरह मंगेश की बांहों में आ गिरी.

अब दोनों की स्थिति ऐसी हो गई थी कि एकदूसरे के लिए बेचैन रहने लगे. उन के प्यार की ज्वाला जब तेज हुई तो उस की लपट उन के घर वालों तक ही नहीं बल्कि अन्य लोगों तक भी जा पहुंची.

मामला नाजुक था, दोनों परिवारों ने उन्हें काफी समझाने की कोशिश की, लेकिन दोनों शादी करने के अपने फैसले पर अड़े रहे.

आखिरकार मंगेश रणसिंग के परिवार वालों ने उस की जिद की वजह से अपनी सहमति दे दी. लेकिन रुक्मिणी के पिता को यह रिश्ता मंजूर नहीं था. फिर भी वह पत्नी के समझाने पर राजी हो गए. अलगअलग जाति के होने के कारण दोनों की शादी में उन का कोई नातेरिश्तेदार शामिल नहीं हुआ.

एक सादे समारोह में दोनों की शादी हो गई. शादी के कुछ दिनों तक तो सब ठीकठाक चलता रहा, लेकिन बाद में दोनों के रिश्तों में दरार आने लगी. दोनों के प्यार का बुखार उतरने लगा था. दोनों छोटीछोटी बातों को ले कर आपस में उलझ जाते थे. अंततः नतीजा मारपीट तक पहुंच गया.

30 अप्रैल, 2019 को मंगेश रणसिंग ने किसी बात को ले कर रुक्मिणी को बुरी तरह पीट दिया था. रुक्मिणी ने इस की शिकायत मां निर्मला से कर दी, जिस की वजह से रुक्मिणी की मां ने उसे अपने घर बुला लिया. उस समय रुक्मिणी 2 महीने के पेट से थी. इस के बाद जब मंगेश रणसिंग रुक्मिणी को लाने के लिए उस के घर गया तो रुक्मिणी के परिवार वालों ने उसे आड़ेहाथों लिया. इतना ही नहीं, उन्होंने उसे धक्के मार कर घर से निकाल दिया.

रुक्मिणी के परिवार वालों के इस व्यवहार से मंगेश रणसिंग नाराज हो गया. उस ने इस अपमान के लिए रुक्मिणी के घर वालों को अंजाम भुगतने की धमकी दे डाली.

बदमाश प्रवृत्ति के मंगेश रणसिंग की इस धमकी से रुक्मिणी के परिवार वाले डर गए, जिस की वजह से वे रुक्मिणी को न तो घर में अकेला छोड़ते थे और न ही बाहर आनेजाने देते थे. रुक्मिणी का परिवार सुबह काम पर जाता तो रुक्मिणी को उस के छोटे भाइयों और छोटी बहन के साथ घर के अंदर कर बाहर से दरवाजे पर ताला डाल देते थे, जिस से मंगेश उन की गैरमौजूदगी में वहां आ कर रुक्मिणी को परेशान न कर सके.

इस सब से मंगेश को रुक्मिणी और उस के परिवार वालों से और ज्यादा नफरत हो गई. उस की यही नफरत एक क्रूर फैसले में बदल गई. उस ने रुक्मिणी की हत्या कर पूरे परिवार को फंसाने की साजिश रच डाली.

घटना के दिन जब रुक्मिणी के परिवार वाले अपनेअपने काम पर निकल गए तो अपनी योजना के अनुसार मंगेश पहले पैट्रोल पंप पर जा कर इस बहाने से एक बोतल पैट्रोल खरीद लाया कि रास्ते में उस के दोस्त की मोटरसाइकिल

Vikas Bhadauria

Vikas Bhadu

रुक्मिणी: जिसे दिल दिया वही जान ले गया

बंद हो गई है. यही बात उस ने रास्ते में मिले अपने दोस्त सलमान से भी कही.

फिर वह रुक्मिणी के घर पहुंच गया. उस समय रुक्मिणी रसोईघर में अपने भाई और बहन के लिए खाना बनाने की तैयारी कर रही थी. घर के दरवाजे पर पहुंच कर मंगेश रणसिंग जोरजोर दरवाजा पीटते हुए रुक्मिणी का नाम ले कर चिल्लाने लगा. वह ताले की चाबी मांग रहा था.

दरवाजे पर आए मंगेश से न तो रुक्मिणी ने कोई बात की और न दरवाजे की चाबी दी. वह उस की तरफ कोई ध्यान न देते हुए खाना बनाने में लगी रही.

रुक्मिणी के इस व्यवहार से मंगेश रणसिंग का पारा और चढ़ गया. वह किसी तरह घर की दीवार फांद कर रुक्मिणी के पास पहुंच गया और उस से मारपीट करने लगा. बाद में उस ने अपने साथ लाई बोतल का सारा पैट्रोल रुक्मिणी के ऊपर डाल कर उसे आग के हवाले कर दिया.

मंगेश की इस हरकत से रुक्मिणी के भाईबहन बुरी तरह डर गए थे. वे भाग कर रसोई के एक कोने में छिप गए. जब आग की लपटें भड़कीं तो रुक्मिणी दौड़ कर मंगेश से कुछ इस तरह लिपट गई कि मंगेश को उस के चंगुल से छूटना मुश्किल हो गया. इसीलिए वह भी रुक्मिणी के साथ 30 प्रतिशत जल गया.

इस के बावजूद भी मंगेश का शातिरपन कम नहीं हुआ. अस्पताल में उस ने रुक्मिणी के परिवार वालों के विरुद्ध बयान दे दिया. उस का कहना था कि उस की इस हालत के लिए उस के ससुराल वाले जिम्मेदार हैं.

उस की शादी लवमैरिज और अंतरजातीय हुई थी. यह बात रुक्मिणी के घर वालों को पसंद नहीं थी, इसलिए उन्होंने उसे घर बुला कर पहले उसे मारापीटा और जब रुक्मिणी उसे बचाने के लिए आई तो उन्होंने दोनों पर पैट्रोल डाल कर आग लगा दी.

अपमान और नफरत की आग में जलते मंगेश रणसिंग की योजना रुक्मिणी के परिवार वालों के प्रति काफी हद तक कामयाब हो गई थी. लेकिन रुक्मिणी के भाई और उस के दोस्त सलमान के बयान से मामला उलटा पड़ गया.

अब यह केस औनर किलिंग का न हो कर पति और पत्नी के कलह का था, जिस की जांच पुलिस ने गहराई से कर मंगेश रणसिंग को अपनी हिरासत में ले लिया.

उस से विस्तृत पूछताछ करने के बाद उस के विरुद्ध भादंवि की धारा 302, 307, 34 के तहत मुकदमा दर्ज कर लिया. कानूनी प्रक्रिया पूरी करने के बाद रुक्मिणी के परिवार वालों को रिहा कर दिया गया. ●

खूनी नशा

— हरमिंदर खोजी

Vikas Bhadu

नशे की लत इंसान का विवेक हर लेती है. नशे के सामने वह रिश्तेनाते, अच्छाबुरा सब भूल जाता है. अजय पटियाल का भी ऐसा ही हाल था. यही वजह थी कि जब पूजा उस से अपने जेवर छीनने लगी तो उसे लगा जैसे वह उस की दुनिया छीन रही हो. इसीलिए उस ने...

मनमोहन गली नंबर-24, बस्ती टोकावली, फिरोजपुर निवासी सुभाष ठाकुर का पुत्र था. मनमोहन की शादी 4 साल पहले बी1-5/6, गली नंबर-3, जनता कालोनी, जालंधर में रहने वाले चानन सिंह राजपूत की बेटी पूजा के साथ हुई थी. दोनों राजपूत परिवारों से थे, दोनों के बीच आपसी प्रेमप्यार था.

पूजा के पिता चानन सिंह आर्मी में थे. उन की 2 ही संतानें थीं, बेटा विनोद और बेटी पूजा. दोनों ही शादीशुदा थे और अपनेअपने परिवारों के साथ खुश थे. पूजा की शादी चानन सिंह ने 4 साल पहले मनमोहन के साथ की थी.

पूजा बीए पास और अच्छे संस्कारों वाली समझदार लड़की थी. ससुराल आ कर उस ने पति ही नहीं, बल्कि सब का मन मोह लिया था. मनमोहन ने एमबीए कर रखा था. कोई अच्छी सरकारी नौकरी न मिलने के कारण वह हिंदुस्तान हाइड्रोलिक कंपनी में नौकरी कर रहा था.

मनमोहन की मां के निधन के बाद वह और उस के पिता जब काम पर चले जाते थे, तो पूजा दिन भर घर में अकेली रहती थी. घर का मुख्यद्वार पूरे दिन बंद रहता था, क्योंकि उन के यहां किसी का आनाजाना नहीं था.

शाम को मनमोहन या उस के पिता के घर लौटने पर ही मुख्यद्वार खोला जाता था. लेकिन उस दिन मनमोहन घर लौटा तो ऐसा नहीं हुआ. मनमोहन के 2-3 बार डोरबैल बजाने के बाद भीतर से कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई. उस ने दरवाजा थपथपाया तो दरवाजा हाथ रखते ही खुल गया.

यह देख कर मनमोहन को और अधिक आश्चर्य हुआ. असमंजस की स्थिति में अपनी पत्नी पूजा को आवाज देते हुए उस ने घर के भीतर जा कर देखा तो कमरे का दृश्य देख उस के होश उड़ गए. भीतर पूरा सामान बिखरा पड़ा था. देख कर ऐसा लग रहा था जैसे कमरे में 2 लोगों का आपस में जबरदस्त संघर्ष हुआ हो.

Vikas Bhadu

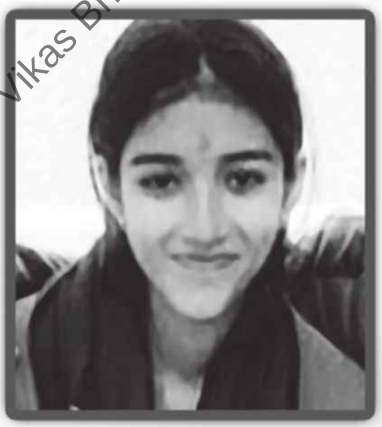

पूजा: नशेड़ी देवर की मंशा भांप नहीं सकी

छायांकन: मौडलिंग

घर के सभी कमरे खुले हुए थे और उन का सामान बिखरा पड़ा था. घर में ऐसा क्या हुआ, यह जानने के लिए वह पूजा को लगातार आवाज देता रहा, पर पूजा कहीं नहीं दिखी. पहले ऐसा कभी नहीं हुआ था. उस के काम से लौटने पर पूजा होंठों पर मुसकान लिए दरवाजा खोलती थी.

Vikas Bhagat

मनमोहन किसी अनहोनी की आशंका से कांप उठा. पागलों की तरह पूजा को आवाज देते हुए वह घर से बाहर निकल आया. उस की पड़ोसन ने बताया कि दोपहर को उन के घर कोई रिश्तेदार आया था और पूजा ने उस के लिए दरवाजा खोला था.

आने वाला कौन था, यह वह नहीं बता सकी. हां, उस ने इतना जरूर बताया कि शाम को उसी ने दरवाजा अंदर की ओर धकेला था, क्योंकि कुत्ते घर के अंदर जाने की कोशिश कर रहे थे.

पड़ोसन की बात सुन कर मनमोहन को चिंता हुई. उस की समझ में यह बात नहीं आ रही थी कि आखिर ऐसा कौन रिश्तेदार था, जिस के घर आने के बाद यह हालत हुई. इस से भी बड़ा सवाल यह था कि पूजा कहां गई ?

उस की समझ में यह भी नहीं आ रहा था कि घर बैठ कर पूजा का इंतजार करे या उस की तलाश में कहीं जाए. लेकिन जाए तो कहां जाए. फिर भी मनमोहन ने पड़ोसियों के साथ पूजा की तलाश की, उसे अस्पतालों में भी देखा. पर पूजा का पता नहीं चला.

मनमोहन बदहवासी में कुछ सोचने का प्रयास कर रहा था कि तभी उस के पिता सुभाष भी घर पहुंच गए. वह पिछले एक सप्ताह से संगत के लिए हिमाचल स्थित बाबा बालक नाथ के डेरे पर गए हुए थे.

बेटे को यूं बदहवास देख और पूजा के गायब होने की बात सुन कर उन्हें भी चिंता होने लगी. इस के बाद पूरे मोहल्ले में पूजा के घर से लापता होने की बात फैल गई. सांत्वना और सहयोग के लिए पूरा मोहल्ला उन के घर आ जुटा था.

अचानक एक पड़ोसी की नजर मनमोहन के कमरे में पड़े पर बैड पर गई तो वह चौंका. बंद बैड पर गद्दे के नीचे से किसी औरत की चोटी के बाल बाहर झांक रहे थे. उस के बताने पर वहां मौजूद सभी लोगों ने बैड को देखा.

पूजा का पिता चानन सिंह

गद्दे को उठा कर बैड का बौक्स खोला गया तो बौक्स के भीतर का दृश्य देख सभी लोगों के मुंह से चीख निकल गई. बैड के भीतर पूजा की लाश पड़ी थी. एकाएक किसी को भी अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था.

उस समय मनमोहन की जो हालत थी, उस का अनुमान लगाना मुश्किल था. वह बैड पकड़ कर वहीं फर्श पर बैठ गया. वह समझ नहीं पा रहा था कि पूजा की हत्या कर के लाश बैड में किस ने छिपाई.

Vikas Bhadu

हत्यारोपी अजय पटियाल पुलिस हिरासत में

काफी देर बाद लोगों के सांत्वना देने पर जब वह सामान्य हुआ. घर के अंदर के किसी भी सामान को छुए बिना सब से पहले उस ने इस घटना की सूचना थाना कैंट, फिरोजपुर पुलिस को दी. साथ ही उस ने पूजा की हत्या की खबर अपने ससुर चानन सिंह को भी दे दी. यह घटना 27 नवंबर, 2018 की है.

पूजा की हत्या की खबर मिलते ही उस के मातापिता वहां पहुंच गए. पुलिस ने क्राइम टीम सहित वहां पहुंच कर अपनी काररवाई शुरू कर दी. पूरे घर को सील कर दिया गया. फिंगरप्रिंट एक्सपर्ट ने जगहजगह से अंगुलियों के निशान उठाए.

सबूतों की तलाश में घर की बारीकी से तलाशी ली गई. थाना कैं ट एसएचओ इंसपेक्टर जसबीर सिंह ने बड़ी बारीकी से लाश का मुआयना किया. पूजा की हत्या गला घोंट कर की गई थी. उस के गले पर दबाव के निशान स्पष्ट नजर आ रहे थे.

इस घटना की सूचना मिलते ही एसपी (डी) बलजीत सिंह सिद्धू, डीएसपी जसपाल सिंह ढिल्लों, सीआईए प्रभारी तरलोचन सिंह ने भी घटनास्थल पर पहुंच कर मुआयना किया. क्राइम टीम का काम खत्म हो गया तो इंसपेक्टर जसबीर सिंह पूजा के पिता चानन सिंह को थाने ले गए. वहां उन के बयान पर अज्ञात लोगों के खिलाफ धारा 302 के तहत पूजा की हत्या का मुकदमा दर्ज किया गया. इस के बाद पूजा की लाश को पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भेज दिया गया.

शुरुआती जांच में इंसपेक्टर जसबीर सिंह को मनमोहन के बयानों से पता चला कि उस के घर में किसी बाहरी व्यक्ति का आनाजाना बिलकुल नहीं था. रिश्तेदारों का आनाजाना भी न के बराबर था. इस परिवार की किसी से कोई दुश्मनी भी नहीं थी.

बापबेटा अपने काम से काम रखने वाले थे. ऐसे में शहर के व्यस्ततम इलाके में दिनदहाड़े किसी के घर में घुस कर उस की हत्या करने जैसी बात न तो पुलिस को हजम हो रही थी और न ही मोहल्ले वालों को.

इंसपेक्टर जसबीर को एक बात शुरू से ही खटक रही थी कि यह काम घर के ही किसी आदमी का हो सकता है. किसी बाहरी व्यक्ति की संभावना कम नजर आ रही थी. बहरहाल, पुलिस ने

मनमोहन को शक के दायरे में रख कर जांच शुरू कर दी.

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, घटना के समय मनमोहन और उस के पिता सुभाष भले ही अपने घर के आसपास नहीं थे, पर यह काम पैसे दे कर किसी किराए के हत्यारे से भी करवा सकते थे.

घटना वाले दिन मनमोहन और सुभाष घटनास्थल से दूर थे. उन के फोन रिकौर्ड से भी पुलिस को कुछ हाथ नहीं लगा. मृतका पूजा के फोन रिकौर्ड भी चैक किए गए, सब बेदाग थे. पोस्टमार्टम के अनुसार पूजा की हत्या गला घोंट कर की गई थी. पोस्टमार्टम के बाद उस की लाश घर वालों के हवाले कर दी गई. उसी शाम उस का अंतिम संस्कार कर दिया गया.

पूजा की हत्या की खबर शहर भर में चर्चा का विषय बन गई थी. एसपी साहब खुद पलपल की रिपोर्ट ले रहे थे. लेकिन अभी तक पुलिस के हाथ खाली थे. पूजा का पति मनमोहन शुरू से ही शक के दायरे में था, इसलिए पुलिस ने मनमोहन और उस के पिता से कई बार अलगअलग घुमाफिरा कर पूछताछ की, लेकिन वे लोग निर्दोष लग रहे थे.

पूजा के पति पर शक करने की वजह यह थी कि पूजा संतानहीन थी. शादी के 4 साल बाद भी उस की गोद नहीं भरी थी. पुलिस सोच रही थी कि कहीं संतानहीन पत्नी से पीछा छुड़ाने के लिए मनमोहन ने ही तो पूजा की हत्या नहीं कर दी.

पुलिस ने मनमोहन के अलावा उस के खास दोस्तों और करीबी रिश्तेदारों से भी पूछताछ की. लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला. इस केस पर जिले के स्पैशल स्टाफ के अलावा और भी कई टीमें काम कर रही थीं. पुलिस के मुखबिर इस मामले में कोई खास जानकारी नहीं जुटा पाए थे.

इंसपेक्टर जसबीर सिंह ने इस मामले को लूटपाट के नजरिए से भी देखा और इलाके के छोटेबड़े सभी हिस्ट्रीशीटरों से ले कर चोरों, जेबतराशों और उठाईगीरों को भी राउंडअप किया. लेकिन नतीजा कुछ नहीं निकला. पूजा की हत्या हुए एक महीने से ऊपर का

पूजा का पति मनमोहन

वक्त गुजर चुका था. धीरेधीरे यह केस ठंडे बस्ते की ओर बढ़ने लगा था.

हालांकि इंसपेक्टर जसबीर सिंह ने अभी उम्मीद का दामन नहीं छोड़ा था. यह अलग बात है कि उन के तमाम प्रयासों के बाद भी कोई ऐसा सूत्र हाथ नहीं लगा था, जिस से इस मामले की कोई भी कड़ी जुड़ती नजर आती.

लोग भी धीरेधीरे इस घटना को भूलने लगे थे. 2 महीने से भी ज्यादा गुजर चुके थे, तभी एक दिन एक ऐसा सूत्र खुद सामने से चल कर आया कि जसबीर सिंह की बांछें खिल गईं. इस सूत्र ने इस केस को एक नई दिशा दे दी थी.

इस घटना के लगभग 2 महीने बाद

Vikas Bhadauria

मनमोहन घर की अलमारी के लौकर में कोई जरूरी कागजात ढूंढ रहा था, तभी अचानक उसे झटका सा लगा. अलमारी के लौकर में रखे कीमती जेवरात गायब थे.

मनमोहन ने इस बात की खबर इंसपेक्टर जसबीर सिंह को दी. जेवरात कैसे गायब हुए, यह तो वह ठीक से नहीं बता पाया, पर यह बात उस ने दावे के साथ कही कि जेवरात पूजा की हत्या से पहले ही गायब हुए थे. क्योंकि उस

पूजा का ससुर सुभाष

के और पूजा के अतिरिक्त जेवरातों की जानकारी किसी को नहीं थी.

पूजा मरने के बाद जेवरात अपने साथ नहीं ले जा सकती थी. जाहिर है उस के सामने या उस की हत्या के बाद ही जेवरात गायब हुए होंगे.

यह भी संभव थी कि इन्हीं जेवरातों की वजह से पूजा की हत्या की गई हो. यह जबरदस्त पौइंट इंसपेक्टर जसबीर के सामने था. उन्होंने अपनी जांच का दायरा बदलते हुए शहर के सुनारों, खासकर उन सुनारों की तरफ मोड़ दिया जो चोरी का माल खरीदते थे. इंसपेक्टर जसबीर सिंह ने उन्हें मनमोहन के घर से गायब सामान की लिस्ट देते हुए सख्त चेतावनी दी कि अगर कोई चोर चोरी का सामान बेचने आए तो उन्हें खबर दें. और फिर एक दिन पुलिस की मेहनत रंग लाई.

20 फरवरी, 2019 को शहर के एक सुनार ने फोन द्वारा इंसपेक्टर जसबीर सिंह को सूचना दी कि अजय पटियाल नाम का एक व्यक्ति उस की दुकान पर मनमोहन के घर से चोरी हुए गहनों से मिलतेजुलते गहने बेचने आया है. इस सूचना पर इंसपेक्टर जसबीर सिंह एएसआई जसपाल सिंह, बलविंदर सिंह, हवलदार गुरतेज सिंह और जसवीर सिंह के साथ सुनार की दुकान पर पहुंचे.

अजय को देख कर सभी चौंके. अजय मनमोहन का ही रिश्तेदार था. वह वीर नगर गली नंबर-1 निवासी उस के मामा का बेटा था. मजे की बात यह कि इंसपेक्टर जसबीर सिंह शक के आधार पर उसे 3 बार पूछताछ के लिए थाने बुला चुके थे, लेकिन ठोस सबूतों के अभाव में उसे छोड़ना पड़ा था. बहरहाल, वे गहनों सहित अजय को गिरफ्तार कर थाने ले आए.

पूछने पर अजय ने बताया कि गहने उस के अपने हैं. फिर बताया कि गहने उस के किसी दोस्त के हैं और उस ने अपनी बीमार मां का इलाज करवाने के लिए उसे बेचने के लिए दिए थे. किस दोस्त ने गहने दिए थे, यह बात वह नहीं बता पाया.

इंसपेक्टर जसबीर सिंह ने मनमोहन और उस के पिता सहित मृतक पूजा के मातापिता को भी थाने बुलवा कर जब गहनों की शिनाख्त करवाई तो उन्होंने तुरंत गहने पहचान लिए.

अजय से बरामद गहने पूरे नहीं थे, इसलिए इंसपेक्टर जसबीर ने अजय को

Vikas Bhadu

अदालत में पेश कर उस का 2 दिन का रिमांड ले लिया. रिमांड के दौरान अजय से बाकी गहने भी बरामद कर लिए गए जो उस ने अपने घर में छिपा कर रखे थे.

दरअसल, अजय नशे का आदी था. पूजा की हत्या उस ने नशे की पूर्ति के लिए की थी. इसे इत्तफाक समझा जाए

पूजा द्वारा विरोध करने पर अजय को ऐसा लगा जैसे वह उस की दुनिया छीन लेना चाहती हो. इसी छीनाझपटी में अजय ने पूजा का गला दबा कर उसे मौत के घाट उतार दिया.

या कुछ और कि घटना वाले दिन वह पूजा की हत्या के इरादे से मनमोहन के घर नहीं गया था. अजय के नशेड़ी होने की वजह से कोई रिश्तेदार उसे पसंद नहीं करता था. न ही कोई उसे अपने घर में घुसने देता था.

पूछताछ के दौरान अजय ने बताया कि उस दिन वह मनमोहन से कुछ रुपए उधार लेने उस के घर गया था. लेकिन मनमोहन अपने काम पर जा चुका था. पूजा घर में अकेली थी.

पूजा ने अजय को इज्जत से बिठाया और उस के लिए चाय बनाने रसोईघर में चली गई. क्योंकि अजय रिश्ते में मनमोहन के मामा का बेटा था, चायपानी के लिए पूछना उस का फर्ज था. जिस समय अजय मनमोहन के घर आया था, उस समय पूजा अलमारी खोल कर उस में कुछ सामान रख रही थी. अजय के आ जाने की वजह से वह अलमारी खुली छोड़ कर चाय बनाने चली गई.

अचानक अजय की नजर खुली अलमारी पर पड़ी तो वह यह सोच कर अलमारी की ओर चला गया कि संभव है उस में रखे कुछ रुपए उस के हाथ लग जाएं. लेकिन अलमारी में रखे जेवर देख कर उस की आंखें चमक उठीं.

गहने देख कर उसे लगा जैसे उस की कई दिन की नशापूर्ति का इंतजाम हो गया हो. उस ने अलमारी में रखे सारे गहने उठा लिए. तभी पूजा ने चाय ले कर कमरे में प्रवेश किया.

अजय को गहने चोरी करते देख वह भौचक्की रह गई. हैरान हो कर उस ने अजय के हाथों से गहने छीनने की कोशिश करते हुए कहा, ''भैयाजी, यह आप क्या कर रहे हैं?''

अजय के सिर पर तो नशे का भूत सवार था, सो उस ने पूजा को एक ओर धकेलते हुए घर से भाग जाने की कोशिश की. पर पूजा ने उस का रास्ता रोक लिया. वह किसी भी कीमत पर अजय को वहां से गहने ले कर नहीं जाने देना चाहती थी.

पूजा द्वारा विरोध करने पर अजय को ऐसा लगा जैसे वह उस की दुनिया छीन लेना चाहती हो. इसी छीनाझपटी में अजय ने पूजा का गला दबा कर उसे मौत के घाट उतार दिया. पूजा की हत्या करने के बाद अजय घबरा गया. उस ने पूजा की लाश को एक सूटकेस में भरा और सूटकेस बैड में रख कर वहां से चुपचाप निकल आया.

काररवाई और पूछताछ के बाद पुलिस ने 22 फरवरी, 2019 को अजय को अदालत में पेश किया, जहां से अदालत के आदेश पर उसे जिला जेल भेज दिया गया. ●

—पुलिस सूत्रों पर आधारित

Vikas Bhadauria

ज्यों ज्यों रात बीतती जा रही थी, त्योंत्यों महाराज सिंह की चिंता बढ़ती जा रही थी. उन की निगाह कभी घड़ी की सुइयों पर टिक जाती तो कभी दरवाजे पर. बात ही कुछ ऐसी थी, जिस से वह बेहद परेशान थे.

उन का बेटा सुनील कुमार जो उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में टीचर था, घर नहीं लौटा था. वह घर से यह कह कर कार से निकला था कि घंटे 2 घंटे में लौट जाएगा, लेकिन आधी रात बीत जाने पर भी वह वापस नहीं आया था. उस का मोबाइल फोन भी बंद था. यह बात 30 मई, 2019 की है.

सुबह हुई तो महाराज सिंह ने अपने कुनबे वालों को सुनील कुमार के लापता होने की जानकारी दी तो वे भी चिंतित हो उठे और महाराज सिंह के साथ सुनील को ढूंढने में जुट गए. महाराज सिंह ने मोबाइल से फोन कर के नातेरिश्तेदारों से बेटे के बारे में पूछा. लेकिन सुनील कुमार का कोई पता नहीं चला.

दुर्घटना की आशंका को देखते हुए इटावा, भरथना, सैफई आदि के अस्पतालों में भी जा कर देखा गया, लेकिन सुनील की कोई जानकारी नहीं मिली.

अपनी हवस के लिए पति की हत्या करा के उस के पूरे परिवार को पलीता लगाने वाली औरतों की कमी नहीं है. यह अलग बात है कि जिंदगी भर पछताने के अलावा उन्हें कुछ हासिल नहीं होता. रेखा के साथ भी यही हुआ. उस ने...

घर वालों के साथ बेटे की खोजबीन कर महाराज सिंह शाम को घर लौटे तो उन की बहू रेखा दरवाजे पर ही खड़ी थी. उस ने महाराज सिंह से पूछा, ''पिताजी, उन का कहीं कुछ पता चला?''

जवाब में 'नहीं' सुन कर रेखा फूटफूट कर रोने लगी. महाराज सिंह ने उसे धैर्य बंधाया, ''बहू, सब्र करो. सुनील जल्द ही वापस आ जाएगा.''

सुनील कुमार का एक दोस्त था सुखवीर सिंह यादव. वह भी टीचर था और कुसैली गांव में रहता था. उस का सुनील के घर खूब आनाजाना था. महाराज सिंह ने उसे सुनील के लापता होने की जानकारी दी तो वह तुरंत उन

रेखा और सुनील: प्रेमी के लिए पति को ठिकाने लगवा दिया

Vikas Bhadauria

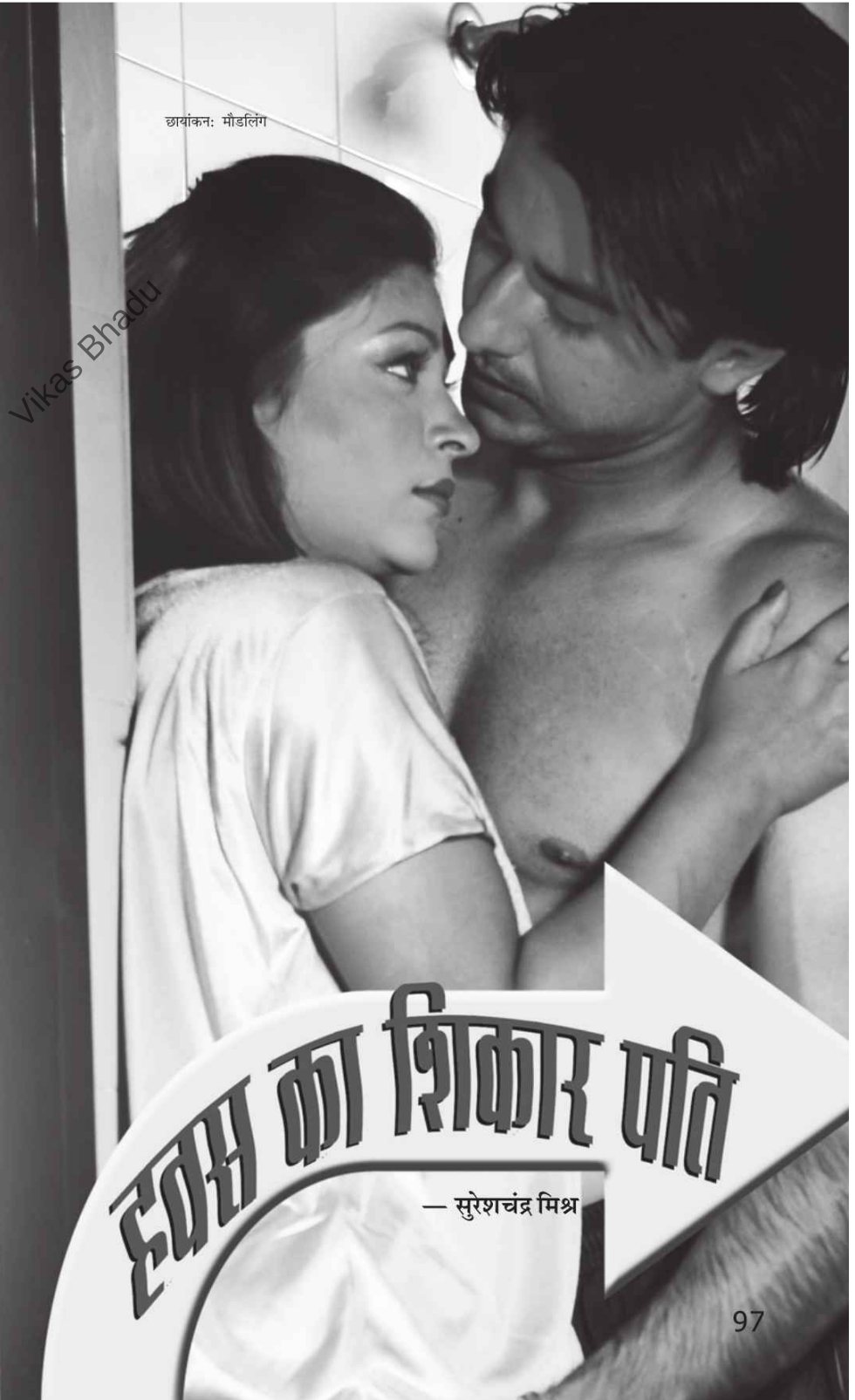

छायांकनः मौडलिंग

Vikas Bhadu

हवस का शिकार पति

— सुरेशचंद्र मिश्र

Vikas Bhadu

सुनील की मृत्यु की खबर सुन कर घर में पसरा मातम

के यहां आ गया और महाराज सिंह के साथ सुनील की खोज में जुट गया. वह उन के साथ जरूरत से कुछ ज्यादा ही अपनत्व दिखा रहा था.

उस ने महाराज सिंह से कहा कि वह परेशान न हों, सुनील मनमौजी है इसलिए बिना कुछ बताए कहीं घूमनेफिरने चला गया होगा. कुछ दिन घूमघाम कर वापस लौट आएगा.

महाराज सिंह की बहू रेखा जो अब तक आंसू बहा रही थी, सुखवीर के आने के बाद उस के आंसू रुक गए. वह भी सुखवीर की हां में हां मिलाने लगी थी. वह अपने ससुर महाराज सिंह को तसल्ली दे रही थी कि पिताजी सुखवीर भाईसाहब सही कह रहे हैं. वह कहीं घूमने चले गए होंगे जल्दी ही लौट आएंगे. घबराने की जरूरत नहीं है.

बहू के इस बदले हुए व्यवहार से महाराज सिंह को आश्चर्य तो हुआ लेकिन उन्होंने उस से कुछ कहासुना नहीं. महाराज सिंह बेटे की खोज कर ही रहे थे कि एक अज्ञात नंबर से उन के मोबाइल पर काल आई. फोन करने वाले ने बताया कि सुनील की कार कानपुर सेंट्रल रेलवे स्टेशन पर कार पार्किंग में खड़ी है.

यह बताने के बाद उस ने फोन डिसकनेक्ट कर दिया. महाराज सिंह ने कुछ और जानकारी के लिए काल बैक की तो स्विच्ड औफ मिला. इस के बाद उन्होंने कई बार बात करने की कोशिश की, लेकिन नाकाम रहे.

रेखा के पास पति की कार की डुप्लीकेट चाबी थी. वह पति के दोस्त सुखवीर सिंह तथा ससुर महाराज सिंह के साथ कानपुर सेंट्रल स्टेशन पहुंची. वहां पार्किंग में सुनील की कार खड़ी थी. पार्किंग वालों को उन लोगों ने सुनील के बारे में बताया, फिर तीनों वहां से कार ले कर लौट आए. घर पहुंच कर सुखवीर सिंह और रेखा ने महाराज सिंह को एक बार फिर धैर्य बंधाया.

लेकिन जब एक सप्ताह बीत गया और सुनील वापस नहीं आया तो

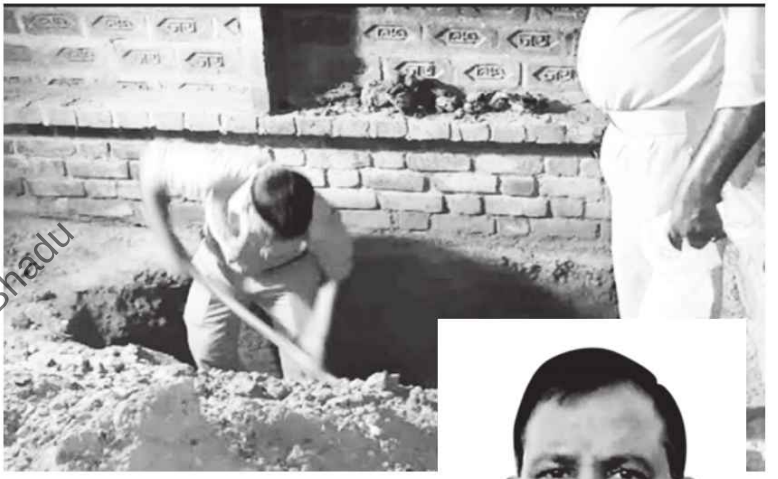

Vikas Bhadu

सुखवीर के घर में दफन सुनील कुमार (इनसेट दाहिने) की लाश निकलवाती पुलिस

महाराज सिंह का धैर्य जवाब देने लगा. उन्होंने बहू रेखा पर दबाव डाला कि वह थाने जा कर सुनील की गुमशुदगी दर्ज कराए. रेखा रिपोर्ट दर्ज कराना नहीं चाहती थी, लेकिन दबाव में उसे तैयार होना पड़ा.

8 जून, 2019 को रेखा अपने ससुर महाराज सिंह के साथ थाना चौबिया पहुंची और थानाप्रभारी सतीश यादव को अपना परिचय देने के बाद पति सुनील कुमार के सप्ताह भर पहले लापता होने की जानकारी दी. बहू के साथ आए महाराज सिंह ने भी थानाप्रभारी से बेटे को खोजने की गुहार लगाई.

थानाप्रभारी सतीश यादव ने सुनील कुमार की गुमशुदगी दर्ज कर के उन दोनों से कुछ जरूरी जानकारियां हासिल कीं, फिर उन्हें भरोसा दिया कि वह सुनील को ढूंढने की पूरी कोशिश करेंगे.

सुनील कुमार गांव केशवपुर राहिन के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में प्रधानाध्यापक था. उस का समाज में अच्छा सम्मान था. उस के अचानक लापता होने से विद्यालय में पढ़ाने वाले शिक्षकों व आसपास के कई गांवों के शिक्षकों में बेचैनी थी. पुलिस की निष्क्रियता से उन का रोष बढ़ता जा रहा था. शिक्षक भी अपने स्तर से सुनील कुमार की खोज कर रहे थे, पर उन्हें सफलता नहीं मिल रही थी.

आखिर जब शिक्षकों के सब्र का बांध टूट गया तो उन्होंने और माखनपुर गांव के लोगों ने थाना चौबिया के सामने धरनाप्रदर्शन शुरू कर दिया. सूचना पा कर इटावा के एसएसपी संतोष कुमार मिश्रा, एडिशनल एसपी (सिटी) डा. रामयश सिंह तथा एडिशनल एसपी (ग्रामीण) रामबदन सिंह थाना चौबिया पहुंच गए.

Vikas Bhadu

सुनील की हत्या की सूचना मिलने पर घटनास्थल पर जुटी भीड़

उन्होंने धरनाप्रदर्शन कर रहे शिक्षकों को समझा कर आश्वासन दिया कि सुनील कुमार की खोज के लिए एक स्पैशल टीम गठित की जाएगी ताकि जल्द से जल्द उन का पता चल सके. एसएसपी के इस आश्वासन के बाद शिक्षकों ने आंदोलन समाप्त कर दिया.

इस के बाद एसएसपी संतोष कुमार मिश्रा ने एक स्पैशल टीम गठित कर दी. टीम में थाना चौबिया प्रभारी सतीश यादव, क्राइम ब्रांच प्रभारी सत्येंद्र यादव, सीओ (सैफई), अपराध शाखा तथा फौरैंसिक टीम के सदस्यों को शामिल किया गया. टीम का संचालन एडिशनल एसपी (ग्रामीण) रामबदन सिंह तथा एडिशनल एसपी (सिटी) डा. रामयश सिंह को सौंपा गया.

पुलिस टीम ने जांच शुरू की तो पता चला कि लापता शिक्षक सुनील कुमार की दोस्ती कुसैली गांव के शिक्षक सुखवीर सिंह यादव से है. उस का सुनील के घर बेधड़क आनाजाना था.

पुलिस टीम ने गुप्त रूप से पड़ोसियों से पूछताछ की तो पता चला कि सुखवीर सिंह यादव सुनील की गैरमौजूदगी में भी उस के घर आता था. यह भी पता चला कि सुनील की पत्नी रेखा और सुखवीर के बीच नाजायज संबंध हैं. रेखा सुखवीर के साथ घूमने भी जाती थी.

अवैध रिश्तों की जानकारी मिली तो पुलिस टीम का माथा ठनका. टीम को शक हुआ कि कहीं अवैध रिश्तों के चलते इन दोनों ने सुनील को ठिकाने तो नहीं लगा दिया.

बहरहाल, पुलिस टीम को पक्का विश्वास हो गया था कि सुनील के लापता होने का भेद रेखा और सुखवीर के पेट में ही छिपा है. लिहाजा पुलिस ने 15 जून, 2019 को शक के आधार पर रेखा और सुखवीर को उन के घरों से हिरासत में ले लिया.

थाने ले जा कर पुलिस ने उन दोनों के मोबाइल कब्जे में ले कर उन की काल डिटेल्स की जांच की तो 30 मई की शाम से ले कर रात तक दोनों की कई बार बात होने की पुष्टि हुई. सुखवीर

Vikas Bhadu

अभियुक्त रामप्रकाश और सुखवीर

के मोबाइल से एक और नंबर पर कई बार बात हुई थी. उस नंबर के बारे में पूछने पर सुखवीर ने बताया कि यह नंबर उस के रिश्तेदार रामप्रकाश यादव का है, जो औरैया जिले के ऐरवा कटरा थाना के बंजाराहारा गांव में रहता है.

पुलिस टीम ने रेखा और सुखवीर सिंह से लापता शिक्षक सुनील कुमार के संबंध में पूछताछ शुरू की. सख्ती करने पर दोनों टूट गए.

उस के बाद सुखवीर सिंह ने जो बताया, उसे सुन कर सभी के रोंगटे खड़े हो गए. उस ने बताया कि सुनील कुमार अब इस दुनिया में नहीं है. उस ने अपने रिश्तेदार रामप्रकाश की मदद से उस की हत्या कर शव के टुकड़ेटुकड़े कर गड्ढे में डाल कर जला दिए. फिर झुलसे हुए शव को गड्ढे में ही दफन कर दिया.

पुलिस टीम सुनील कुमार के शव को बरामद करने के लिए सुखवीर को साथ ले कर उस के गांव कुसैली पहुंची. गांव में उस के 2 मकान थे. एक मकान में वह स्वयं रहता था तथा दूसरा खाली पड़ा था.

इसी खाली मकान में उस ने अपने दोस्त का शव दफनाया था. सुखवीर की निशानदेही पर पुलिस टीम ने एक कमरे में खुदाई कराई तो गड्ढे से सुनील कुमार की लाश के जले हुए टुकड़े बरामद हो गए.

टीम ने शव बरामद होने की जानकारी एसएसपी संतोष कुमार मिश्रा को दी तो वह मौकामुआयना करने वहां पहुंच गए. बुलाई गई फोरैंसिक टीम ने भी साक्ष्य जुटाए. जिस फावड़े से हत्या की गई थी, उसे भी बरामद कर लिया गया.

यह जानकारी जब गांव वालों को हुई तो वहां भीड़ जुट गई. मृतक के घर वाले भी वहां आ पहुंचे. बढ़ती भीड़ को देखते हुए एसएसपी ने आसपास के थानों से भी पुलिस फोर्स बुला ली. महाराज सिंह बेटे का शव देख कर बदहवास थे. उन की आंखों से आंसू थमने का नाम ही नहीं ले रहे थे.

पुलिस टीम ने भारी पुलिस सुरक्षा के बीच मौके की जरूरी काररवाई निपटा कर लाश पोस्टमार्टम के लिए

इटावा भेज दी. सुखवीर सिंह की निशानदेही पर हत्या में शामिल उस के रिश्तेदार रामप्रकाश को भी उस के घर से गिरफ्तार कर लिया. थाने में जब रेखा और सुखवीर से उस का सामना हुआ तो उस ने सहज ही हत्या का जुर्म कबूल कर लिया. रामप्रकाश ने बताया कि सुखवीर सिंह ने उसे हत्या करने में सहयोग करने के लिए 10 हजार रुपए दिए थे.

इस के बाद एसएसपी संतोष कुमार मिश्रा ने पुलिस लाइन सभागार में

> एसएसपी संतोष कुमार मिश्रा ने पुलिस लाइन सभागार में प्रैसवार्ता की और तीनों कातिलों को पत्रकारों के सामने पेश कर शिक्षक सुनील कुमार की हत्या का खुलासा कर दिया.

प्रैसवार्ता की और तीनों कातिलों को पत्रकारों के सामने पेश कर शिक्षक सुनील कुमार की हत्या का खुलासा कर दिया. पुलिस कप्तान ने केस का खुलासा करने वाली टीम को 10 हजार रुपए के ईनाम की घोषणा की.

कानपुर देहात जिले का बड़ी आबादी वाला एक कस्बा है रूरा. इसी रूरा कस्बे में भगवानदीन अपने परिवार के साथ रहते थे. उन के परिवार में पत्नी रुचि के अलावा 2 बेटियां रेखा व बरखा थीं. भगवानदीन गल्ले का व्यापार करते थे. इस धंधे में उन्हें अच्छी कमाई होती थी. उन की आर्थिक स्थिति मजबूत थी.

भगवानदीन स्वयं तो ज्यादा पढ़लिख नहीं पाए थे, लेकिन वह बेटियों को पढ़ालिखा कर योग्य बनाना चाहते थे. उन की बड़ी बेटी रेखा खूबसूरत और पढ़नेलिखने में तेज थी. वह बीए में पढ़ रही थी, उसी दौरान उसे शिक्षा मित्र के पद पर नौकरी मिल गई. वह गुलाबपुर भोरा गांव के प्राथमिक स्कूल में पढ़ाने लगी.

जब रेखा शादी योग्य हुई तो भगवानदीन उस के लिए वर की खोज में जुट गए. रेखा चूंकि शिक्षक थी, इसलिए भगवानदीन उस के लिए शिक्षक वर की ही तलाश रहे थे. काफी दौड़धूप के बाद भगवान दीन को रेखा के लिए सुनील कुमार पसंद आ गया.

सुनील कुमार इटावा जिले के माखनपुर गांव के रहने वाले महाराज सिंह का बेटा था. सुनील के अलावा महाराज सिंह की एक बेटी थी, जिस की वह शादी कर चुके थे. सुनील उच्चतर माध्यमिक विद्यालय केशवपुर रोहिन में पढ़ाता था.

उम्र में सुनील रेखा से करीब 7 साल बड़ा था, पर वह सरकारी नौकरी पर था इसलिए रेखा को भी उस से शादी करने में कोई आपत्ति नहीं थी. अंततः जनवरी 2008 में उन का विवाह हो गया.

ससुराल में रेखा खुश थी. दोनों का दांपत्य जीवन सुखमय बीतने लगा. सुनील के पास कार थी. छुट्टी वाले दिनों में वह रेखा को कार से घुमाने के लिए निकल जाता था, जिस से उस की खुशियां और भी बढ़ जाती थीं.

समय बीतता गया और रेखा एक के बाद एक 2 बेटों और एक बेटी की मां बन गई. बच्चों के जन्म से घर में किलकारियां गूंजने लगी थीं. रेखा के

Vikas Bhadauria

केस का खुलासा होने पर प्रैस कौन्फ्रैंस करते एसएसपी संतोष कुमार मिश्र (दाहिने)

Vikas Bhadu

ससुर महाराज सिंह घर में केवल खाना खाने के लिए ही आते थे. उन का ज्यादातर समय खेतों पर ही बीतता था. वहां उन्होंने एक कमरा भी बनवा लिया था. वह उसी कमरे में रहते थे. वहां रह कर वे ट्यूबवेल तथा फसल की रखवाली करते थे.

रेखा 3 बच्चों की मां जरूर बन गई थी, लेकिन उस की सुंदरता में कमी नहीं आई थी. इस के अलावा वह बिस्तर पर पति का रोजाना ही साथ चाहती थी. लेकिन सुनील उस का साथ नहीं दे पाता था, जिस की वजह से रेखा के स्वभाव में बदलाव आ गया था. वह बातबेबात पति से झगड़ने लगी.

सुनील कुमार का एक शिक्षक दोस्त सुखवीर सिंह यादव था. वह चौबिया थाने के कुसैली गांव का रहने वाला था. दोनों दोस्तों में खूब पटती थी. सुखवीर की आर्थिक स्थिति सुनील से बेहतर थी. वह ठाटबाट से रहता था.

एक रोज सुनील ने अपने दोस्त सुखवीर सिंह यादव को पार्टी देने के लिए अपने घर बुलाया. उस रोज पहली बार सुखवीर ने रेखा को देखा था. पहली नजर में ही रेखा उस की आंखों में रचबस गई. खानेपीने के दौरान सुखवीर की निगाहें रेखा की खूबसूरती पर ही टिकी रहीं. रेखा भी अपनी खूबसूरती का जादू चला कर सुखवीर के दिल को घायल करती रही. पार्टी के बाद सुखवीर जब जाने लगा तो उस ने रेखा से कहा, ''भाभी, आप बेहद खूबसूरत हैं.''

यह सुन रेखा सुखवीर को गौर से निहारने लगी फिर उस ने मुसकरा कर सिर झुका लिया. रेखा को दिल में बसा कर सुखवीर चला गया.

इस के बाद सुनील व सुखवीर जब कभी मिलते तो सुनील उसे घर ले आता. सुखबीर चाहता भी यही था. रेखा व उस के बच्चों को रिझाने के लिए कभी वह खानेपीने की चीजें लाता तो कभी खिलौने.

रेखा इन चीजों को थोड़ा नानुकुर के बाद स्वीकार कर लेती थी. सुनील को शक न हो या बुरा न लगे, इस के लिए वह सुनील की भी खातिरदारी करता. दरअसल, सुखवीर बियर पीने का शौकीन था. उस ने इस का चस्का सुनील को भी लगा दिया था.

30-32 वर्षीय सुखवीर शरीर से

हृष्टपुष्ट व हंसमुख स्वभाव का था. रेखा से नजदीकी बनाने के लिए वह खूब खर्च करता था. कभीकभी वह रेखा के हाथ पर भी हजार 2 हजार रुपए रख देता था. रेखा मुसकरा कर उन्हें रख लेती थी.

बाद में सुखवीर सुनील की गैरमौजूदगी में भी आने लगा था. वह रेखा को भाभी कहता था. इस बहाने वह उस से खुल कर हंसीमजाक भी करनेलगा. रेखा उस की हंसीमजाक का बुरा नहीं मानती थी, बल्कि सुखवीर की रसीली बातें उस के दिल में हलचल पैदा करने लगी थीं.

सच तो यह है कि रेखा भी सुखवीर को चाहने लगी थी. क्योंकि सुखवीर एक तो उम्र में उस के बराबर था, दूसरे वह हंसमुख स्वभाव का था.

एक रोज सुखवीर स्कूल न जा कर रेखा के घर जा पहुंचा. उस समय रेखा घर में अकेली थी. बच्चे स्कूल गए थे और पति सुनील अपनी ड्यूटी पर. घर का कामकाज निपटा कर रेखा नहाधो कर सजीसंवरी बैठी थी कि सुखवीर आ गया. रेखा की खूबसूरती पर रीझ कर सुखवीर बोला, ''भाभी, बनसंवर कर किस का इंतजार कर रही हो. क्या सुनील भैया जल्दी घर आने वाले हैं?''

''उन्हें मेरी फिक्र ही कब रहती है, जो जल्दी घर आएंगे.'' रेखा तुनक कर बोली.

''भैया को फिक्र नहीं तो क्या हुआ, मुझे तो आप की फिक्र है. मैं तो रातदिन तुम्हारी ही खूबसूरती में डूबा रहता हूं.'' कहते हुए सुखवीर ने दरवाजा बंद किया और रेखा को अपनी बांहों में भर लिया. इस के बाद उस ने रेखा से छेड़छाड़ शुरू कर दी.

प्रेमी से पति की हत्या कराने वाली रेखा

दिखावे के लिए रेखा ने उस की छेड़छाड़ का हलका विरोध किया, लेकिन जब उसे सुखद अनुभूति होने लगी तो वह भी उस का सहयोग करने लगी. इस तरह दोनों ने अपनी हसरतें पूरी कर लीं.

एक ओर सुखवीर जहां रेखा से मिले सुख से निहाल था, वहीं रेखा भी थकी सांसों वाले पति सुनील से ऊब गई थी. सुखवीर का साथ पा कर वह फूली नहीं समा रही थी. उन दोनों ने एक बार मर्यादा की सीमा लांघी तो फिर लांघते ही चले गए. दोनों को जब भी मौका मिलता, एकदूसरे में समा जाते.

सुनील पत्नी के प्रेम प्रसंग से अनभिज्ञ था. उसे पत्नी व दोस्त दोनों पर भरोसा था. लेकिन दोनों ही उस के विश्वास का गला घोंट रहे थे.

सुनील भले ही पत्नी के प्रेम प्रसंग से अनभिज्ञ था, लेकिन पासपड़ोस के लोगों में रेखा और सुखवीर के नाजायज रिश्तों की चर्चा चल पड़ी थी. लेकिन उन दोनों ने इस की परवाह नहीं की.

Vikas Bhadauria

Vikas Bhadu

सुखवीर ने इसी मकान में दफन किए थे सुनील की लाश के टुकड़े

सुखवीर रेखा का दीवाना था तो रेखा उस की मुरीद. रेखा पत्नी तो सुनील की थी, लेकिन उस पर अधिकार उस के प्रेमी सुखवीर का हो गया था.

रेखा और सुखवीर के संबंधों के चर्चे गांव की हर गली के मोड़ पर होने लगे तो बात सुनील के कानों तक पहुंची. उस ने इस बारे में पत्नी से पूछा, ''रेखा, आजकल तुम्हारे और सुखवीर के बारे में गांव में जो चर्चा है, क्या वह सच है?''

''कैसी चर्चा?''

''यही कि तुम्हारे और सुखवीर के बीच नाजायज संबंध हैं.''

''गांव वाले हमें बदनाम करने के लिए तुम्हारे कान भर रहे हैं. इस के बाद भी अगर तुम्हें अपने दोस्त पर भरोसा नहीं तो उस से साफसाफ कह दो कि वह घर न आया करे.''

सुनील ने उस समय पत्नी की बात पर भरोसा कर लिया, लेकिन उस के मन में शक जरूर बैठ गया. अब वह दोनों को रंगेहाथ पकड़ने की जुगत में लग गया. उसे यह मौका जल्द ही मिल गया.

उस रोज रविवार था. सुनील ने रेखा से कहा कि वह किसी काम से इटावा जा रहा है, देर शाम तक ही वापस आ पाएगा.

इधर सुनील घर से निकला उधर रेखा ने फोन कर के सुखवीर को घर बुला लिया. आते ही सुखवीर ने रेखा को बांहों में कैद किया और बिस्तर पर जा पहुंचा. इसी दौरान रेखा को दरवाजा पीटने की आवाज सुनाई दी. रेखा ने कपड़े दुरुस्त करने के बाद दरवाजा खोला तो सामने पति को देख कर उस के चेहरे का रंग उड़ गया और उस की घिग्घी बंध गई.

सुनील पत्नी की घबराहट भांप गया. रेखा को परे ढकेल कर सुनील घर के अंदर गया तो कमरे में उस का दोस्त सुखवीर बैठा मिला. उस के चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं.

सुनील को देख कर सुखवीर चेहरे पर बनावटी मुसकान बिखेरते हुए बोला, ''आप तो इटावा गए थे. रेखा ने चंद मिनट पहले ही बताया था. मैं इधर से चौबिया जा रहा था तो सोचा आप से मिलता चलूं.''

सुनील बोला, ''हां दोस्त, गया तो इटावा था लेकिन यह सोच कर वापस आ गया कि तुम दोनों घर में क्या गुल खिला रहे हो, यह भी देख लूं. बहरहाल, तुम ने दोस्ती का अच्छा फर्ज निभाया और मेरी ही इज्जत पर डाका डाल दिया. तुम दोस्त नहीं, दुश्मन हो. अब तुम्हारी खैरियत इसी में है कि आज के बाद हमारे घर में कदम मत रखना.''

Vikas Bhadu

सुखवीर एक तरह से रंगेहाथ पकड़ा गया था. इसलिए वह बिना जवाब दिए ही घर से चला गया. उस के बाद सुनील

सूचना पा कर इटावा के एसएसपी संतोष कुमार मिश्रा, एडिशनल एसपी (सिटी) डा. रामयश सिंह तथा एडिशनल एसपी (ग्रामीण) रामबदन सिंह थाना चौबिया पहुंच गए.

का सारा गुस्सा रेखा पर उतरा. उस ने पत्नी को बेतहाशा पीटा. रेखा पिटती रही लेकिन अपराध बोध के कारण उस ने जवाब नहीं दिया.

उस दिन के बाद रेखा और सुखवीर का मिलना बंद हो गया. सुनील और सुखवीर की दोस्ती में भी गांठ पड़ गई. लेकिन यह दूरियां अधिक दिनों तक नहीं चल पाईं. एक दिन जब दोनों का सामना हुआ तो सुखवीर ने पैर पकड़ कर सुनील से माफी मांग ली.

सुनील साफ दिल का था इसलिए उस ने उसे माफ कर दिया. इस के बाद दोनों में पहले जैसी दोस्ती हो गई. फिर से सुखवीर के घर आनेजाने लगा. रेखा इस से बहुत खुश थी.

एक रोज सुनील घर से निकला तो

एसएसपी संतोष कुमार मिश्र

इत्तफाक से सुखवीर आ गया. रेखा और सुखवीर अपने प्यार के सिलसिले में बातें करने लगे. तभी रेखा बोली, ''सुखवीर इस तरह लुकाछिपी का खेल कब तक चलेगा?''

''जब तक तुम चाहोगी.''

''नहीं, मुझे यह पसंद नहीं. अब मैं कोई स्थाई समाधान चाहती हूं.'' रेखा ने कहा.

''मतलब?'' सुखवीर चौंकते हुए बोला.

''मतलब यह कि मैं सुनील से छुटकारा चाहती हूं. अब मैं तुम से तभी बात करूंगी, जब तुम सुनील से छुटकारा दिला दोगे.''

सुखवीर कुछ पल गहरी सोच में डूबा रहा फिर बोला, ''ठीक है, मुझे तुम्हारी शर्त मंजूर है.''

इस के बाद रेखा और सुखवीर ने मिल कर सुनील की हत्या की योजना बनाई. अपनी इस योजना में सुखवीर ने अपने एक रिश्तेदार रामप्रकाश को 10 हजार रुपए का लालच दे कर शामिल कर लिया.

योजना के अनुसार, 30 मई, 2019 की शाम 4 बजे सुखवीर सिंह अपने दोस्त सुनील कुमार के घर पहुंचा और उस ने

उसे पार्टी की दावत दी. सुनील राजी हो गया तो सुखवीर ने अपने रिश्तेदार रामप्रकाश को फोन कर घर पहुंचने को कहा.

शाम लगभग 6 बजे सुखवीर, सुनील को साथ ले कर अपने गांव कुसैली आ गया. सुनील अपनी कार से आया था. सुखवीर ने सुनील को अपने खाली पड़े मकान में ठहराया. फिर वहीं

एएसपी (ग्रामीण) रामबदन सिंह

पर पार्टी की व्यवस्था की. रात 8 बजे के लगभग रामप्रकाश भी कुसैली पहुंच गया. उस के बाद तीनों ने मिल कर बियर की पार्टी की. खानेपीने के बाद सुनील वहीं चारपाई पर सो गया.

आधी रात को जब गांव में सन्नाटा पसर गया तब सुखवीर और रामप्रकाश ने गहरी नींद सो रहे सुनील को दबोच लिया और फावड़े से गरदन काट कर उसे मौत की नींद सुला दी. इस के बद उन दोनों ने शव को दफनाने के लिए कमरे में गहरा गड्ढा खोदा और शव को फावड़े से काट कर कई टुकड़ों में विभाजित कर गड्ढे में डाल दिया.

लाश के उन टुकड़ों पर उस ने केरोसिन उड़ेल कर आग लगा दी फिर उन अवशेषों को गड्ढे में दफन कर दिया. सुबह होने से पहले रामप्रकाश ने गड्ढे को समतल कर गोबर से लीप दिया और उस के ऊपर चारपाई बिछा दी.

लोगों को गुमराह करने के लिए सुखवीर सुनील की कार को कानपुर ले आया और कानपुर सेंट्रल रेलवे स्टेशन के बाहर पार्किंग में खड़ी कर वापस आ गया. 3 दिन बाद उस ने ही अज्ञात फोन नंबर से फोन कर कार पार्किंग में खड़ी होने की सूचना सुनील के पिता महाराज सिंह को दे दी.

एएसपी डा. रामयश सिंह यादव

इधर रात 8 बजे महाराज सिंह खेत से घर भोजन करने आए तो पता चला कि सुनील कार ले कर कहीं गया है और वापस नहीं आया. महाराज सिंह यह सोच कर घर में रुक गए कि बच्चेबहू घर में अकेले हैं. जब तक सुनील वापस नहीं आया तो उन की चिंता बढ़ती गई.

धीरेधीरे एक सप्ताह बीत गया पर सुनील का पता न चला, तब महाराज सिंह ने बहू रेखा पर दबाव डाल कर थाना चौबिया में गुमशुदगी दर्ज कराई.

17 जून, 2019 को थाना चौबिया पुलिस ने सुखवीर सिंह यादव, रामप्रकाश यादव तथा रेखा से विस्तार से पूछताछ करने के बाद तीनों को 17 जून को गिरफ्तार कर लिया. उन्हें इटावा की कोर्ट में रिमांड मजिस्ट्रैट के समक्ष पेश किया गया, जहां से उन्हें जिला जेल भेज दिया गया. ●

—कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित

Vikas Bhadauria

बेरहम बदला

Vikas Bhadu

विजय माथुर

दिल्ली के पुल प्रह्लादपुर में रहने वाली विवाहिता गीता के नाजायज संबंध पड़ोसी कालूचरण से हो गए थे, जिस की वजह से उस ने अपने पति घनश्याम से भी दूरी बना ली थी. इसी दौरान ऐसा क्या हुआ कि कालूचरण ने गीता को सबक सिखाने के लिए उस की 6 साल की बेटी गुनीषा की हत्या कर दी...

दिन-29 मई, बुधवार
समय- रात साढ़े 3 बजे
स्थान- राजस्थान का कोटा शहर

कोटा के तुल्लापुर स्थित पुरानी रेलवे कालोनी के सेक्टर-3 के क्वार्टर नंबर 169 से गुनीषा नाम की 6 साल की बच्ची गायब हो गई. यह क्वार्टर श्रीकिशन कोली का था जो रेलवे कर्मचारी था.

6 वर्षीय गुनीषा श्रीकिशन की बेटी गीता की बेटी थी. रात को जब परिवार के सभी सदस्य गहरी नींद में थे, तभी कोई गुनीषा को उठा ले गया था. बच्ची के गायब होने से सभी हैरान थे, क्योंकि गीता अपनी बेटी गुनीषा के साथ दालान में सो रही थी. क्वार्टर का मुख्य दरवाजा बंद था. किसी के भी अंदर आने की संभावना नहीं थी.

श्रीकिशन के क्वार्टर में शोरशराबा हुआ तो अड़ोसपड़ोस के सब लोग एकत्र हो गए. पता चला घर में 9 सदस्य थे, जिन में गुनीषा गायब थी. जिस दालान में ये लोग सो रहे थे, उस के 3 कोनों में कूलर लगे थे. रात में करीब एक बजे गीता की मां पुष्पा पानी पीने उठी तो उस ने गुनीषा को सिकुड़ कर सोते देखा. कूलरों की वजह से उसे ठंड लग रही होगी, यह सोच कर पुष्पा ने उसे चादर ओढ़ा दी और जा कर अपने बिस्तर पर सो गई.

रात को साढ़े 3 बजे गीता जब बाथरूम जाने के लिए उठी तो बगल में लेटी गुनीषा को गायब देख चौंकी. उस ने मम्मीपापा को उठाया. उन का शोर सुन कर बाकी लोग भी उठ गए. गुनीषा को घर के कोनेकोने में ढूंढ लिया गया, लेकिन वह नहीं मिली. उन लोगों के

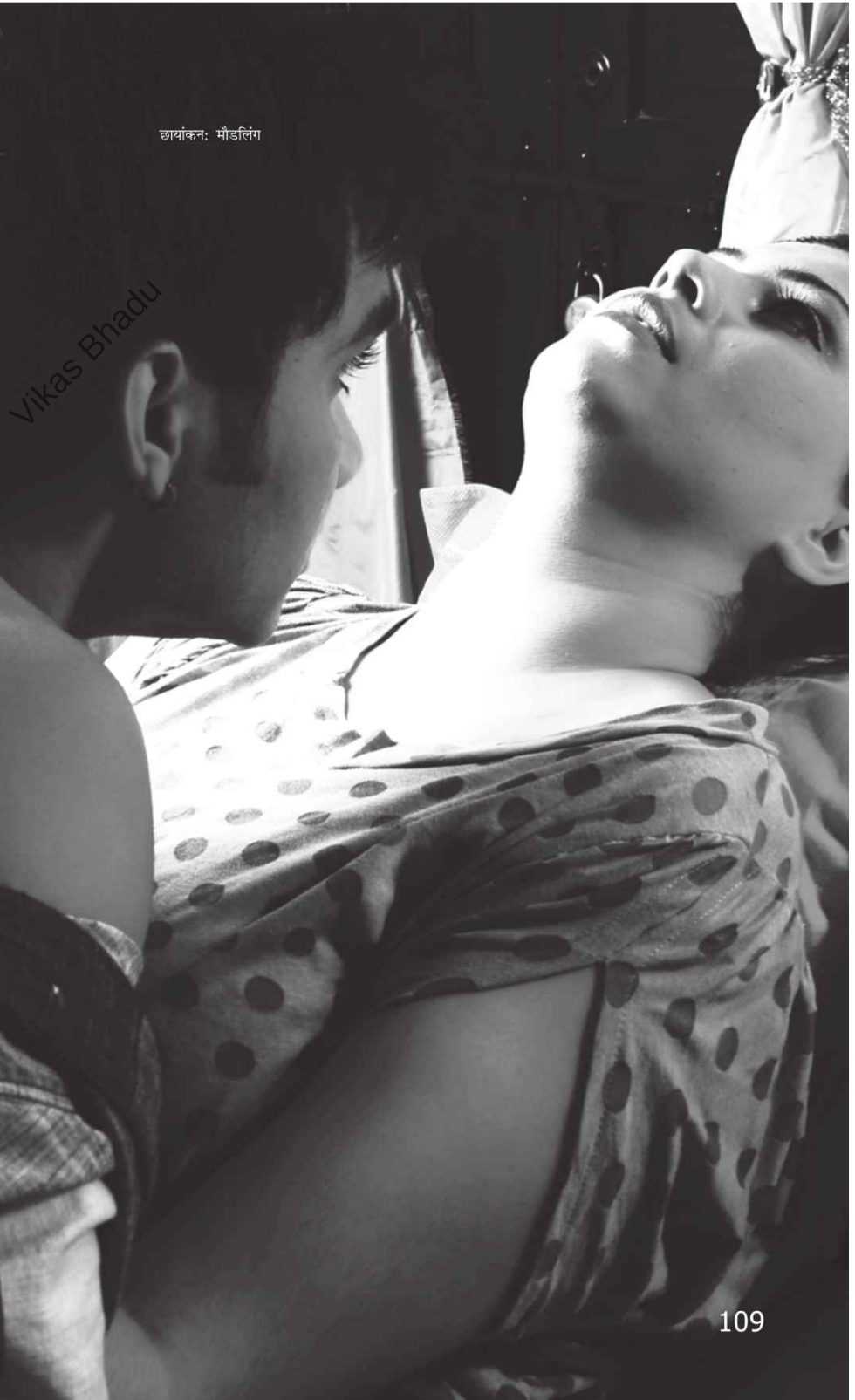

छायांकन: मौडलिंग

Vikas Bhadu

Vikas Bhadu

हत्यारोपी कालूचरण बेहरा पुलिस हिरासत में

रोनेचीखने की आवाजें सुन कर पासपड़ोस के लोग भी आ गए.

मासूम बच्चियों के साथ हो रही दरिंदगी की सोच कर लोगों ने श्रीकिशन कोली को सलाह दी कि हमें तुरंत पुलिस के पास जाना चाहिए.

पड़ोसियों और घर वालों के साथ श्रीकिशन कोली जब रेलवे कालोनी थाने पहुंचा, तब तक सुबह के 4 बज चुके थे. गुनीषा की गुमशुदगी दर्ज करने के बाद थानाप्रभारी अनीस अहमद ने इस की सूचना एसपी सुधीर भार्गव को दी और श्रीकिशन के साथ पुलिस की एक टीम घटनास्थल की छानबीन के लिए भेज दी.

अनीस अहमद ने पुलिस कंट्रोल रूम को सूचना देते हुए अलर्ट भी जारी करवा दिया. मौके पर पहुंची पुलिस टीम ने पूरे मकान को खंगाला. पुलिस टीम को श्रीकिशन की इस बात पर नहीं हुआ कि मकान का मुख्य दरवाजा भीतर से बंद रहते कोई अंदर नहीं आ सकता. लेकिन जब पुलिस की नजर पिछले दरवाजे पर पड़ी तो उन की धारणा बदल गई.

पिछले दरवाजे की कुंडी टूटी हुई थी. दरवाजा तकरीबन आधा खुला हुआ था. 3 कमरों वाले उस क्वार्टर में एक रसोई के अलावा बीच में दालान था. मकान की छत भी करीब 10 फीट से ज्यादा ऊंची नहीं थी. पूरे मकान का मुआयना करते हुए एसआई मुकेश की निगाहें बारबार पिछले दरवाजे पर ही अटक जाती थीं.

इसी बीच एक पुलिसकर्मी रामतीरथ का ध्यान छत की तरफ गया तो उस ने श्रीकिशन से छत पर जाने का रास्ता पूछा. लेकिन उस ने यह कह कर इनकार कर दिया कि ऊपर जाने के लिए सीढ़ियां नहीं हैं.

आखिर पुलिसकर्मी कुरसी लगा कर छत पर पहुंचा तो उसे पानी की टंकी नजर आई. उस ने उत्सुकतावश टंकी का ढक्कन उठा कर देखा तो उस के होश उड़ गए. रस्सियों से बंधा बच्ची का शव टंकी के पानी में तैर रहा था.

बच्ची की लाश देख कर

Vikas Bhadauria

छत पर रखी पानी की इसी टंकी में मिली थी गुनीषा की लाश

पुलिसकर्मी रामतीरथ वहीं से चिल्लाया, ''सर, बच्ची की लाश टंकी में पड़ी है.''

रामतीरथ की बात सुन कर सन्नाटे में आए एसआई मुकेश तुरंत छत पर पहुंच गए. यह रहस्योद्घाटन पूरे परिवार के लिए बम विस्फोट जैसा था. बालिका की हत्या और शव की बरामदगी की सूचना मिली तो थानाप्रभारी अनीस अहमद भी मौके पर पहुंच गए. उन्होंने देखा कि बच्ची का गला किसी बनियाननुमा कपड़े से बुरी तरह कसा हुआ था. गुनीषा की हत्या ने घर में हाहाकार मचा दिया.

यह खबर कालोनी में आग की तरह फैली. पुलिस टीम ने गुनीषा के शव को कब्जे में कर तत्काल रेलवे हौस्पिटल पहुंचाया, जहां डाक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया. बच्ची की लाश को पोस्टमार्टम के लिए भिजवाने के बाद पुलिस ने यह मामला धारा 302 में दर्ज कर लिया.

एडिशनल एसपी राजेश मील और डीएसपी भगवत सिंह हिंगड़ भी घटनास्थल पर पहुंच गए थे. पुलिस ने मौके पर पहुंचे अपराध विशेषज्ञों तथा डौग स्क्वायड टीम की भी सहायता ली. लेकिन ये प्रयास निरर्थक रहे. न तो अपराध विशेषज्ञ घटनास्थल से कोई फिंगरप्रिंट ही उठा सके और न ही खोजी कुत्ते कोई सुराग ढूंढ सके.

लेकिन एडिशनल एसपी राजेश मील को 3 बातें चौंकाने वाली लग रही थीं, पहली यह कि जब घर में पालतू कुत्ता था तो वह भौंका क्यों नहीं. इस का मतलब बच्ची का अपहर्त्ता परिवार के लिए कोई अजनबी नहीं था.

दूसरी बात यह थी कि गीता का अपने पति घनश्याम यानी गुनीषा के पिता से तलाक का केस चल रहा था. कहीं

इस वारदात के पीछे घनश्याम ही तो नहीं था. श्रीकिशन कोली ने भी घनश्याम पर ही शक जताया. उस ने मौके से 3 मोबाइल फोन के गायब होने की बात बताई. राजेश मील यह नहीं समझ पा रहे थे कि आखिर उन मोबाइलों में क्या राज छिपा था कि किसी ने उन्हें गायब कर दिया.

गुरुवार 30 मई को पोस्टमार्टम के बाद बच्ची का शव घर वालों को सौंप दिया गया. पोस्टमार्टम रिपोर्ट में बच्ची का गला घोंटा जाना ही मृत्यु का मुख्य कारण बताया गया.

जिस निर्ममता से बच्चों की हत्या की गई थी, उस का सीधा मतलब था कि किसी पारिवारिक रंजिश के चलते ही उस की हत्या की गई थी. पुलिस अधिकारियों के साथ विचारविमर्श के बाद एसपी सुधीर भार्गव ने एडिशनल एसपी राजेश मील के नेतृत्व में एक टीम गठित की, जिस में डीएसपी भगवत सिंह हिंगड़, रोहिताश्व कुमार और सीआई अनीस अहमद को शामिल किया गया.

पूरे घटनाक्रम का अध्ययन करने के बाद एएसपी राजेश मील ने हर कोण से जांच करने के लिए पहले श्रीकिशन के उन नातेरिश्तेदारों को छांटा, जो परिवार के किसी भलेबुरे को प्रभावित कर सकते थे. साथ ही इलाके के ऐसे बदमाशों की लिस्ट भी तैयार की, जिन की वजह से परिवार के साथ कुछ अच्छाबुरा हो सकता था.

पुलिस ने गीता से उस के पति घनश्याम से चल रहे विवाद के बारे में पूछा तो वह सुबकते हुए बोली, ''वह शराब पी कर मुझ से मारपीट करता था. इसलिए मुझे उस से नफरत हो गई

गुनीषा: मां के अवैध संबंधों में गई जान

थी. मैं तलाक दे कर उस से अपना रिश्ता खत्म कर लेना चाहती थी.''

उस का कहना था कि उस की वजह से मैं पहले ही अपनी एक औलाद खो चुकी हूं. यह बात संदेह जताने वाली थी, इसलिए डीएसपी भगवत सिंह हिंगड़ ने फौरन पूछा, ''क्या घनश्याम पहले भी तुम्हारे बच्चे की हत्या कर चुका है?''

गीता ने जवाब दिया तो हिंगड़ हैरान हुए बिना नहीं रहे. उस ने बताया, ''साहबजी, उस के साथ लड़ाईझगड़े के दौरान मेरा गर्भपात हो गया था.''

पुलिस संभवतः इस विवाद की छानबीन कर चुकी थी, इसलिए हिंगड़ ने पूछा कि तुम ने तो घनश्याम के खिलाफ दहेज उत्पीड़न का मामला दर्ज करा रखा है.

गीता जवाब देने के बजाए इधरउधर देखने लगी तो हिंगड़ को लगा कि कुछ न कुछ ऐसा है, जिसे छिपाया जा रहा है.

थाने में चली लगातार 12 घंटे की पुलिस पूछताछ में श्रीकिशन यह तो नहीं बता पाया कि गुनीषा के गले में कसा

Vikas Bhadauria

बेटी की मौत पर रोरो कर बेहोश हुई गीता

Vikas Bhadu

पाया गया बनियान किस का था, लेकिन 2 बातें पुलिस के लिए काफी अहम थीं. पहली, जब आरोपी गुनीषा को उठा कर ले जा रहा था तो उस ने चीखनेचिल्लाने की कोशिश की होगी. लेकिन उस की आवाज किसी को सुनाई क्यों नहीं दी?

इस सवाल पर श्रीकिशन सोचते हुए बोला, ''साहबजी, आवाज तो जरूर हुई होगी, लेकिन अपहरण करने वाले ने बच्ची का मुंह दबा दिया होगा. यह भी संभव है कि हलकीफुलकी चीख निकली भी होगी, तो 3 कूलरों की आवाज में सुनाई नहीं दी होगी.''

पुलिस ने श्रीकिशन से पूछा कि मौके से जो 3 मोबाइल गायब हुए, वे किसकिस के थे. इस बात पर श्रीकिशन ने भी हैरानी जताई. फिर उस ने बताया कि उस का, गीता का और उस के बेटे राजकुमार के मोबाइल गायब थे.

पुलिस अधिकारियों ने घटना के समय घर में मौजूद सभी परिजनों के अलावा अन्य नातेरिश्तेदारों, इलाके में नामजद अपराधियों सहित करीब 100 लोगों से पूछताछ की, लेकिन कोई ठोस जानकारी नहीं मिल पाई.

संदेह के घेरे में आए गीता के पति घनश्याम की टोह लेने के लिए थानाप्रभारी अनीस अहमद गुरुवार 30 मई को तड़के उड़िया बस्ती स्थित उस के घर जा पहुंचे. उस का पता भी श्रीकिशन कोली ने ही बताया था. पुलिस जब घनश्याम तक पहुंची तो वह अपने घर में सो रहा था.

इतनी सुबह आधीअधूरी नींद से जगाए जाने और एकाएक सिर पर खड़े पुलिस दस्ते को देख कर घनश्याम के होश फाख्ता हो गए. अजीबोगरीब स्थिति से हक्काबक्का घनश्याम बुरी तरह सन्नाटे में आ गया. उस के घर वाले भी जाग गए. घनश्याम के पिता मच्छूलाल और परिवार के लोगों ने ही पूछने का साहस जुटाया, ''साहब, आखिर हुआ क्या? क्या कर दिया घनश्याम ने?''

उसे जवाब देने के बजाए थानाप्रभारी अनीस अहमद ने उसे डांट दिया. मच्छूलाल ने एक बार अपने रोआंसे बेटे की तरफ देखा, फिर हिम्मत कर के

बोला, ''साहब, आप बताओ तभी तो पता चलेगा?''

''गुनीषा बेटी है न घनश्याम की?'' थानाप्रभारी ने कड़कते स्वर में कहा, ''तुम्हारा बेटा सुबह 3 बजे उस की हत्या कर के यहां आ कर सो गया.''

मछोलाल तड़प कर बोला, ''क्या कहते हो साहब, घनश्याम तो रात एक बजे ही दिल्ली से आया है. वहीं नौकरी करता है. खानेपीने के बाद हमारे साथ बातें करते हुए सुबह 4 बजे सोया था.''

थानाप्रभारी अनीस अहमद के चेहरे पर असमंजस के भाव तैरने लगे. लेकिन उन का शक नहीं गया. उन्होंने घनश्याम को थाने चलने को कहा. घनश्याम के साथ तमाम लोग थाने आए.

भीड़ में उन्हें दिलीप नामक शख्स ऐतबार के काबिल लगा. उस का कहना था, ''साहब, खूनखराबा घनश्याम के बस का नहीं है. यह तो अपनी बेटी से इतना प्यार करता था कि उस के बारे में बुरा करना तो दूर, सोच भी नहीं सकता. वैसे भी यह दिल्ली रेलवे में नौकरी करता है. कल रात ही तो आया था. नहीं साहब, किसी ने आप को गलत सूचना दी है.''

घनश्याम के पक्ष की बातें सुन कर अनीस अहमद को उस की डोर ढीली छोड़ना ही बेहतर लगा. उन्होंने उसे अगले दिन सुबह आने को कह कर जाने दिया.

शुक्रवार 31 मई को घनश्याम नियत समय पर थाने पहुंच गया. इस से पहले कि पुलिस उस से कुछ पूछती, उस की आंखों में आंसू आ गए, ''साहब, गीता से तो मेरी नहीं पटी पर अपनी बेटी गुनीषा से मुझे बहुत प्यार था. मुझे गीता से अलग होने का कोई दुख नहीं था लेकिन मुझे बेटी गुनीषा की बहुत याद आती थी. इतना घिनौना काम तो मैं...''

''तुम्हारे बीच अलगाव कैसे हुआ?'' पूछने पर घनश्याम कुछ देर जमीन पर नजरें गड़ाए रहा. उस ने डबडबाई आंखों को छिपाने की कोशिश करते हुए कहा, ''सर, छोटी तनख्वाह में बड़े अरमान कैसे पूरे हो सकते हैं?''

कोटा शहर में रेलवे कर्मचारियों के लिए बनाए गए आवास 2 कालोनियों में बंटे हुए हैं. अधिकारी और उन के मातहत

एसपी (सिटी) दीपक भार्गव

कर्मचारी नई कालोनी में रहते हैं. यह कालोनी कोटा रेलवे जंक्शन से सटी हुई है. नई कालोनी करीब 2 रकबों में फैली है. जबकि चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों को नजदीक की तुल्लापुर इलाके में आवास आवंटित किए गए हैं.

रेलवे स्टेडियम के निकट बनी इस कालोनी को पुरानी रेलवे कालोनी के नाम से जाना जाता है. लगभग 300 क्वार्टरों वाली इस कालोनी में क्वार्टर नंबर 169 में श्रीकिशन रह रहा था. श्रीकिशन की पत्नी का नाम पुष्पा था.

इस दंपति के गीता और मीनाक्षी 2 बेटियों के अलावा 2 बेटे राजकुमार और राहुल थे. श्रीकिशन की संगीता और जैमा नाम की 2 बहनें भी थीं. दोनों बहनें विवाहित थीं. लेकिन घटना के दिन श्रीकिशन के घर आई हुई थीं.

Vikas Blog

लगभग 25 साल की सब से बड़ी बेटी गीता विवाहित थी. लापता हुई 6 वर्षीया गुनीषा उसी की बेटी थी. करीब 7 साल पहले गीता का विवाह तुल्लापुरा के निकट ही उड़िया बस्ती में रहने वाले मच्छूलाल के बेटे घनश्याम से हुआ था.

घनश्याम दिल्ली स्थित तुगलकाबाद रेलवे स्टेशन पर नौकरी कर रहा था. घनश्याम और गीता का दांपत्य जीवन करीब 4 साल ही ठीकठाक चला. बाद में उन के बीच झगड़े शुरू हो गए.

एडिशनल एसपी राजेश कुमार मील

पतिपत्नी के रिश्ते इतने तनावपूर्ण हो गए थे कि नौबत तलाक तक आ पहुंची.

गीता पिछले 3 सालों से अपने पिता के पास कोटा में ही रह रही थी. तलाक का मामला कोटा अदालत में विचाराधीन था. गीता ने कोटा के महिला थाने में घनश्याम के खिलाफ दहेज प्रताड़ना का मामला भी दर्ज करा रखा था.

छानबीन के इस दौर में पुलिस के सामने 3 बातें आईं. इन गुत्थियों को सुलझा कर ही हत्यारे तक पहुंचा जा सकता था. पहली यह कि आरोपी जो भी था, घर के चप्पेचप्पे से वाकिफ था. ऐसा कोई परिवार का सदस्य भी हो सकता था और परिवार से बेहद घुलामिला व्यक्ति भी, जिस निर्दयता से मासूम बच्ची की हत्या की गई थी, निश्चित रूप से वह गीता से गहरी नफरत करता होगा.

गीता ज्यादा कुछ बोलनेबताने की स्थिति में नहीं थी. वह सदमे में थी और बारबार बेहोश हो रही थी. वैवाहिक विवाद की स्थिति में घनश्याम सब से ज्यादा संदेहास्पद पात्र था. पुलिस ने हर कोण और हर तरह से उस से पूछताछ की लेकिन वह कहीं से भी अपराधी नहीं लगा. आखिर उसे इस हिदायत के साथ जाने दिया गया कि वह पुलिस को बताए बिना कोटा से बाहर न जाए.

राजेश मील को यह बात बारबार कचोट रही थी कि गीता जवान है, कमोबेश खूबसूरत भी है. लेकिन ऐसा क्या था कि अपनी बसीबसाई गृहस्थी छोड़ कर पिता के पास रह रही थी. पति घनश्याम के बारे में जो जानकारी पुलिस ने जुटाई थी, उस से उस का हत्या का कोई ताल्लुक नहीं दिखाई दे रहा था.

इस बीच पुलिस को यह भी पता चल चुका था कि वह सीधासादा नेकनीयत का आदमी था. इतना सीधा कि उसे कोई भी घुड़की दे कर डराधमका सकता था.

सवाल यह था कि दिल्ली जैसे शहर में रहते हुए क्या पतिपत्नी के बीच कोई तीसरा भी था ? ऐसे किस्से की तसदीक तो मोबाइल ही हो सकती है. लिहाजा राजेश मील ने फौरन सीआई को हिदायत देते हुए कहा, ''अनीस, गीता के गायब हुए मोबाइल का नंबर है न तुम्हारे पास ? फौरन उस की काल डिटेल्स ट्रैस करने का बंदोबस्त करो.''

अनीस अहमद फौरन इस काम पर लग गए. काल ट्रैसिंग के नतीजे वाकई

Vikas Bhadauria

चौंकाने वाले थे. अनीस अहमद ने जो कुछ बताया, उस ने एसपी राजेश मील की आंखों में चमक पैदा कर दी. गीता के मोबाइल की मौजूदगी दिल्ली के तुगलकाबाद में होने की तसदीक कर रही था. साफ मतलब था कि आरोपी दिल्ली के तुगलकाबाद में मौजूद था.

एसआई अनीस अहमद के नेतृत्व में दिल्ली पहुंची पुलिस टीम ने जो जानकारी जुटाई, उस के मुताबिक आरोपी का नाम कालूचरण बेहरा था. कालूचरण को पुलिस ने घनश्याम के पुल प्रह्लादपुर स्थित घर के पास वाले मकान से धर दबोचा.

थानाप्रभारी अनीस अहमद

कालूचरण घनश्याम का पड़ोसी निकला. गीता के दिल्ली में रहते हुए कालूचरण से प्रेमिल संबंध बन गए थे. घनश्याम और गीता के बीच अलगाव की बड़ी वजह यह भी थी. दिल्ली गई पुलिस टीम ने घनश्याम के मकान सहित अन्य जगहों से कई महत्त्वपूर्ण सुराग एकत्र किए. कालूचरण दिल्ली स्थित कानकोर में औपरेटर था.

पुलिस कालूचरण बेहरा को दिल्ली से हिरासत में ले कर सोमवार 3 जून को कोटा पहुंची. यहां शुरुआती पूछताछ के बाद पुलिस ने उस की गिरफ्तारी दिखा कर मंगलवार 4 जून को न्यायालय में पेश कर 3 दिन के रिमांड पर ले लिया. पुलिस की शुरुआती पूछताछ में मासूम गुनीषा की हत्या को ले कर कालूचरण ने जो खुलासा किया, वह चौंकाने वाला था.

दक्षिणपूर्वी दिल्ली के पुल प्रह्लादपुर में घनश्याम के पड़ोस में रहने के दौरान ही कालूचरण के घनश्याम की पत्नी गीता से प्रेमिल संबंध बन गए थे. गीता के कोटा चले जाने के बाद भी कालू कोटा आ कर गीता से मिलताजुलता रहा. लेकिन पिछले कुछ दिनों से गीता के किसी अन्य युवक से संबंध बन गए थे. नतीजतन उस ने कालू से कन्नी काटनी शुरू कर दी थी.

कालू ने जब उसे समझाने की कोशिश की तो उस ने उसे बुरी तरह दुत्कार दिया था. बेवफाई और अपमान की आग में सुलगते कालू ने गीता को सबक सिखाने की ठान ली. इस रंजिश की बलि चढ़ी मासूम गुनीषा.

पड़ोसी होने के नाते घनश्याम और कालू के बीच अच्छा दोस्ताना था. पतिपत्नी के बीच अकसर होने वाले झगड़े में कालू गीता का पक्ष लेता था. नतीजतन गीता का झुकाव कालू की तरफ होने लगा. गीता का रंगरूप बेशक गेहुआं था, लेकिन भरे हुए बदन की गीता के नैननक्श काफी कटीले थे.

कालू से निकटता बढ़ी तो गीता पति की अनुपस्थिति में कालू के कमरे पर भी आने लगी. यहीं दोनों के बीच अनैतिक संबंध बने. अनैतिक संबंध बनाने के लिए कालू ने उसे अपने प्यार का भरोसा दिलाते हुए कहा था कि वह शादी नहीं करेगा और सिर्फ उसी का हो कर रहेगा.

दिल्ली में पतिपत्नी के बीच झगड़े

VikasBhadauria

डीएसपी भगवत सिंह हिंगड़

Vikas Bhadu

इस कदर बढ़े कि गीता ने घनश्याम को छोड़ने का फैसला कर लिया और बेटी गुनीषा को ले कर कोटा आ गई.

पिता के लिए बेटी का साझा दुख था. इसलिए उस ने भी बेटी का साथ दिया. यह 3 साल पहले की बात है. इस बीच गीता ने घनश्याम पर दहेज उत्पीड़न का आरोप लगाते हुए तलाक का मुकदमा दायर कर दिया था. यह मामला अभी अदालत में विचाराधीन है.

गीता के कोटा आ जाने के बावजूद कालू के साथ उस के संबंध बने रहे. कालू अकसर कोटा आता रहता था और 4-5 दिन गीता के घर पर ही रुकता था. कालू ने गीता को खुश रखने के लिए पैसे लुटाने में कोई कसर नहीं रखी थी.

पिछले करीब 6 महीने से कालू को अपने और गीता के रिश्तों में कुछ असहजता महसूस होने लगी. दिन में 10 बार फोन करने वाली गीता न सिर्फ उस का फोन काटने लगी थी, बल्कि अपने फोन को व्यस्त भी दिखाने लगी थी. कालू ने गीता की बेरुखी का सबब जानने की जुगत लगाई तो पता चला कि उस की माशूका किसी और के हाथों में खेल रही है. उस ने अपने रसूखों से इस बात की तसदीक भी कर ली.

हालात भांपने के लिए जब वह कोटा पहुंचा तो गीता में पहले जैसा जोश नहीं था. उस ने कालू को यहां तक कह दिया कि अब वह यहां न आया करे. गुस्से में उबलता हुआ कालू दिल्ली लौटा तो इसी उधेड़बुन में जुट गया कि गीता को कैसे उस की बेवफाई का ताजिंदगी याद रखने वाला सबक सिखाए. उस ने गीता की बेटी और पूरे परिवार की चहेती गुनीषा को मारने का तानाबाना बुन लिया.

अपनी योजना को अंजाम देने के लिए वह 29 मई की रात को ट्रेन से कोटा आया. घर का चप्पाचप्पा उस का देखाभाला था. 30 मई की देर रात वह करीब 2 बजे पीछे के रास्ते से घर में घुसा और सब से पहले उस ने तख्त पर पड़े तीनों मोबाइल कब्जे में किए. फिर गीता के पास सोई गुनीषा को चद्दर समेत ही उठा लिया.

नींद में गाफिल गुनीषा कुनमुनाई भी, लेकिन कालू ने उस का मुंह बंद कर दिया. कूलरों के शोर में वैसे भी गुनीषा की कुनमुनाहट दब गई. गुनीषा का गला घोंट कर टंकी में डालने की योजना वह पहले ही बना चुका था. छत पर जाने का रास्ता भी उसे पता था.

गुनीषा को दबोचे हुए वह छत पर पहुंचा. अलगनी से उठाई गई बनियान से उस का गला घोंट कर कालू ने उसे पानी की टंकी में डाल दिया फिर वह जिस खामोशी से आया था, उसी खामोशी से बाहर निकल गया. मोबाइल इस मंशा से उठाए थे, ताकि इस बात की तह तक पहुंचा जा सके कि गीता के आजकल किस से संबंध थे. लेकिन मोबाइल ही उस की गिरफ्तारी का कारण बन गए. ●

—कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित

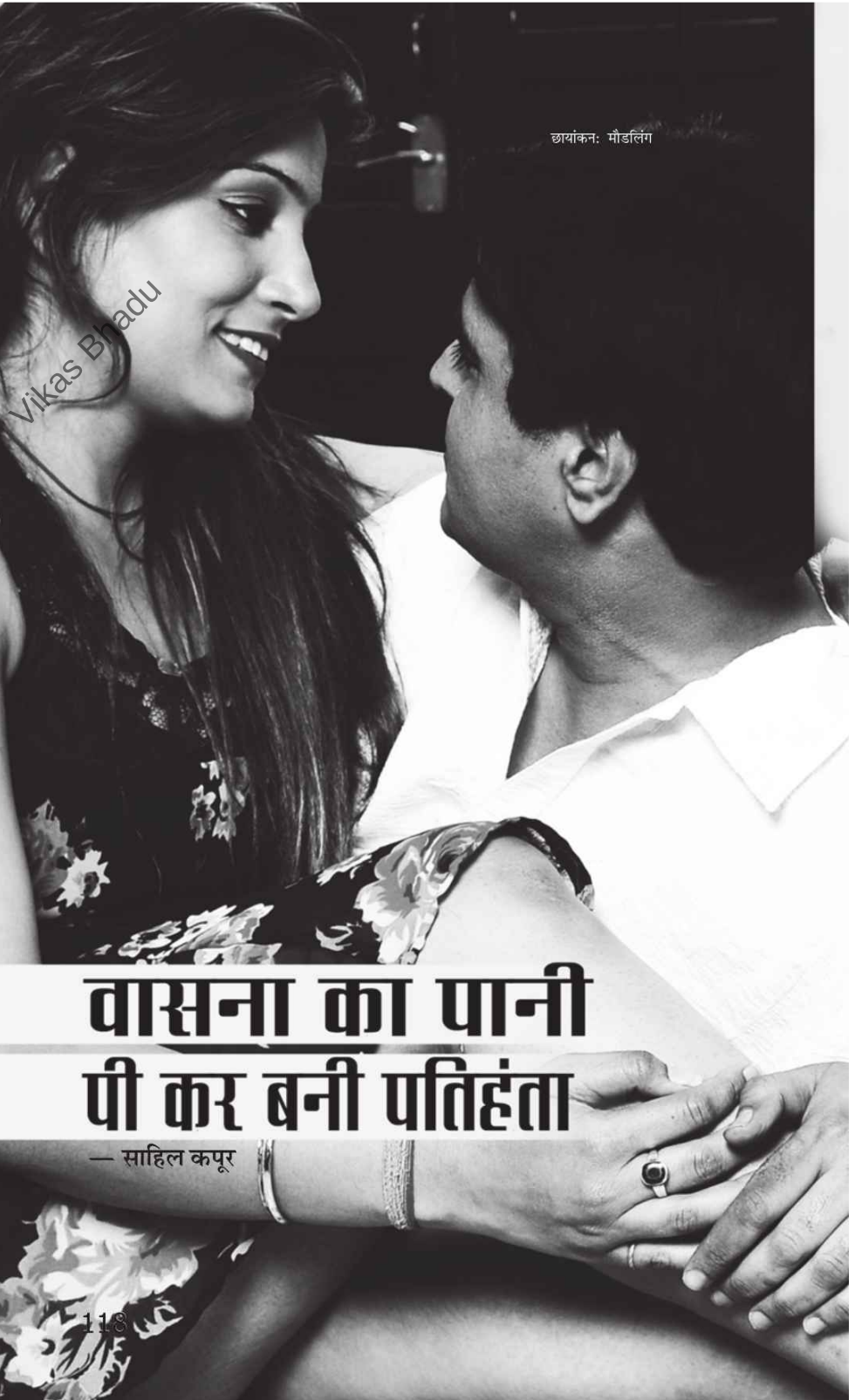

छायांकनः मौडलिंग

Vikas Bhadu

वासना का पानी पी कर बनी पतिहंता

— साहिल कपूर

सुनील अपनी ड्यूटी से रोजाना रात 9 बजे तक अपने घर वापस पहुंच जाता था. पिछले 12 सालों से उस का यही रूटीन था. लेकिन 21 मई, 2019 को रात के 10 बज गए, वह घर नहीं लौटा.

पत्नी सुनीता को उस की चिंता होने लगी. उस ने पति को फोन मिलाया तो फोन भी स्विच्ड औफ मिला. वह परेशान हो गई कि करे तो क्या करे. घर से कुछ दूर ही सुनीता का देवर राहुल रहता था. सुनीता अपने 18 वर्षीय बेटे नवजोत के साथ देवर राहुल के यहां पहुंच गई. घबराई हुई हालत में आई भाभी को देख कर राहुल ने पूछा, ''भाभी, क्या हुआ, आप इतनी परेशान क्यों हैं ?''

''तुम्हारे भैया अभी तक घर नहीं आए. उन का फोन भी नहीं मिल रहा. पता नहीं कहां चले गए. मुझे बड़ी चिंता हो रही है. तुम जा कर उन का पता लगाओ. मेरा तो दिल घबरा रहा है. उन्होंने 8 बजे मुझे फोन पर बताया था कि थोड़ी देर में घर पहुंच रहे हैं, खाना तैयार रखना. लेकिन अभी तक नहीं आए.''

45 वर्षीय सुनील मूलरूप से उत्तर प्रदेश के रहने वाले मोहनलाल का बड़ा बेटा था. सुनील के अलावा उन के 3 बेटे और एक बेटी थी. सभी शादीशुदा थे. सुनील लगभग 13 बरस पहले काम की तलाश में लुधियाना आया था. कुछ दिनों बाद यहीं के जनकपुरी इंडस्ट्रियल एरिया स्थित प्रवीण गर्ग की धागा फैक्ट्री में उस की नौकरी लग गई. फिर वह यहीं के थाना सराभा नगर के अंतर्गत आने वाले गांव सुनेत में किराए का घर ले कर रहने लगा. बाद में उस ने अपनी पत्नी और बच्चों को भी लुधियाना में अपने पास बुला लिया.

जब सुनील ने धागा फैक्ट्री में अपनी पहचान बना ली तो अपने छोटे भाई राहुल को भी लुधियाना बुलवा लिया. उस ने राहुल की भी एक दूसरी फैक्ट्री में नौकरी लगवा दी. राहुल भी अपने बीवीबच्चों को लुधियाना ले आया और सुनील से 2 गली छोड़ कर किराए के मकान में रहने लगा.

पिछले 12 सालों से सुनील का रोज का नियम था कि वह रोज ठीक साढ़े 8 बजे काम के लिए घर से अपनी इलैक्ट्रिक साइकिल पर निकलता था और पौने 9 बजे अपने मालिक प्रवीण गर्ग की गुरुदेव नगर स्थित कोठी पर पहुंच जाता. वह अपनी साइकिल कोठी पर खड़ी कर के वहां से फैक्ट्री की बाइक द्वारा फैक्ट्री जाता था. इसी तरह वह शाम को भी साढ़े 8 बजे छुट्टी कर फैक्ट्री

किशोर हो चुके बच्चों की मां अपनी हवस के लिए अगर अपने उस पति को ठिकाने लगवा दे, जिस के कंधों पर पूरे परिवार का बोझ हो, तो दुख भी होता है और आश्चर्य भी. सुनीता ने यही किया. आखिर उसे...

Vikas Bhadauria

Vikas Bhadu

हत्यारोपी मनदीप उर्फ दीपा और उस की प्रेमिका सुनीता

से मालिक की कोठी जाता और वहां बाइक खड़ी कर अपनी इलैक्ट्रिक साइकिल द्वारा 9 बजे तक अपने घर पहुंच जाता था.

पिछले 12 सालों में उस के इस नियम में 10 मिनट का भी बदलाव नहीं आया था. 21 मई, 2019 को भी वह रोज की तरह काम पर गया था पर वापस नहीं लौटा. इसलिए परिजनों का चिंतित होना स्वाभाविक था. राहुल अपने भतीजे नवजोत और कुछ पड़ोसियों को साथ ले कर सब से पहले अपने भाई के मालिक प्रवीण गर्ग की कोठी पर पहुंचा.

प्रवीण ने उसे बताया कि सुनील तो साढ़े 8 बजे कोठी पर फैक्ट्री की चाबियां दे कर घर चला गया था. प्रवीण ने राहुल को सलाह दी कि सब से पहले वह थाने जा कर इस बात की खबर करे. प्रवीण गर्ग की सलाह मान कर राहुल सीधे थाना डिवीजन नंबर-5 पहुंचा और अपने सुनील के लापता होने की बात बताई.

उस समय थाने में तैनात ड्यूटी अफसर ने राहुल से कहा, ''अभी कुछ देर पहले सिविल अस्पताल में एक आदमी की लाश लाई गई थी, जिस के शरीर पर चोटों के निशान थे. लाश अस्पताल की मोर्चरी में रखी है, आप अस्पताल जा कर पहले उस लाश को देख लें. कहीं वह लाश आप के भाई की न हो.''

राहुल पड़ोसियों के साथ सिविल अस्पताल पहुंच गया. अस्पताल में जैसे ही राहुल ने स्ट्रेचर पर रखी लाश देखी तो उस की चीख निकल गई. वह लाश उस के भाई सुनील की ही थी.

राहुल ने फोन द्वारा इस बात की सूचना अपनी भाभी सुनीता को दे कर अस्पताल आने के लिए कहा. उधर लाश की शिनाख्त होने के बाद आगे की काररवाई के लिए डाक्टरों ने यह खबर थाना दुगरी के अंतर्गत आने वाली पुलिस चौकी शहीद भगत सिंह नगर को दे दी. सुनील की लाश उसी चौकी के क्षेत्र में मिली थी.

दरअसल, 21 मई 2019 की रात 10 बजे किसी राहगीर ने लुधियाना पुलिस कंट्रोलरूम को फोन द्वारा यह खबर दी थी कि पखोवाल स्थित सिटी सेंटर के पास सड़क किनारे एक आदमी की लाश पड़ी है. कंट्रोलरूम ने यह खबर संबंधित पुलिस चौकी शहीद भगत सिंह नगर को दे दी थी.

सूचना मिलते ही चौकी इंचार्ज एएसआई सुनील कुमार, हवलदार गुरमेल सिंह, दलजीत सिंह और सिपाही

Vikas Bhadu

हत्यारोपी रमन और प्रकाश

हरपिंदर सिंह के साथ मौके पर पहुंचे. उन्होंने इस की सूचना एडिशनल डीसीपी-2 जस किरनजीत सिंह, एसीपी (साउथ) जश्नदीप सिंह के अलावा क्राइम टीम को भी दे दी थी.

लाश का निरीक्षण करने पर उस की जेब से बरामद पर्स से 65 रुपए और एक मोबाइल फोन मिला. फोन टूटीफूटी हालत में था, जिसे बाद में चंडीगढ़ स्थित फौरेंसिक लैब भेजा गया था. लाश के पास ही एक बैग भी पड़ा था, जिस में खाने का टिफिन था. मृतक के सिर पर चोट का निशान था, जिस का खून बह कर उस के शरीर और कपड़ों पर फैल गया था.

उस समय लाश की शिनाख्त नहीं हो पाने पर एएसआई सुनील कुमार ने मौके की कारवाई पूरी कर लाश सिविल अस्पताल भेज दी थी.

अस्पताल द्वारा लाश की शिनाख्त होने की सूचना एएसआई सुनील कुमार को मिली तो वह सिविल अस्पताल पहुंच गए. उन्होंने अस्पताल में मौजूद मृतक की पत्नी सुनीता और भाई राहुल से पूछताछ कर उन के बयान दर्ज किए और राहुल के बयानों के आधार पर सुनील की हत्या का मुकदमा अज्ञात हत्यारों के खिलाफ दर्ज कर आगे की तहकीकात शुरू कर दी.

एएसआई सुनील कुमार ने मृतक की फैक्ट्री में उस के साथ काम करने वालों के अलावा उस के मालिक प्रवीण गर्ग से भी पूछताछ की. यहां तक कि मृतक के पड़ोसियों से भी मृतक और उस के परिवार के बारे में जानकारी हासिल की गई, पर कोई क्लू हाथ नहीं लगा.

सब का यही कहना था कि सुनील सीधासादा शरीफ इंसान था. उस की न तो किसी से कोई दुश्मनी थी और न कोई लड़ाईझगड़ा. अपने घर से काम पर जाना और वापस घर लौट कर अपने बच्चों में मग्न रहना ही दिनचर्या थी.

एएसआई सुनील की समझ में एक बात नहीं आ रही थी कि मृतक की लाश इतनी दूर सिटी सेंटर के पास कैसे पहुंची, जबकि उस के घर आने का रूट चीमा चौक की ओर से था. उस की इलैक्ट्रिक साइकिल भी नहीं मिली. महज साइकिल के लिए कोई किसी की हत्या करेगा, यह बात किसी को हजम नहीं हो रही थी.

बहरहाल, अगले दिन मृतक की पोस्टमार्टम रिपोर्ट भी आ गई. रिपोर्ट में बताया गया कि मृतक के सिर पर किसी भारी चीज से वार किया गया था और उस का गला चेन जैसी किसी चीज से घोटा गया था. मृतक के शरीर पर चोट के भी निशान थे. इस से यही लग रहा था कि हत्या से पहले मृतक की खूब पिटाई की गई थी. उस की हत्या का कारण दम घुटना बताया गया.

पोस्टमार्टम के बाद लाश मृतक के घर वालों के हवाले कर दी गई. सुनील की हत्या हुए एक सप्ताह बीत चुका था. अभी तक पुलिस के हाथ कोई ठोस सबूत नहीं लगा था. मृतक की साइकिल का भी पता नहीं चल पा रहा था.

एएसआई सुनील कुमार ने एक बार फिर इस केस पर बड़ी बारीकी से गौर किया. उन्होंने मृतक की पत्नी, भाई और अन्य लोगों के बयानों को ध्यान से पढ़ा. उन्हें पत्नी सुनीता के बयानों में झोल नजर आया तो उन्होंने उस के फोन की कालडिटेल्स निकलवा कर चैक कीं.

सुनीता की काल डिटेल्स में 2 बातें सामने आईं. एक तो उस ने पुलिस को यह झूठा बयान दिया था कि पति ने उसे 8 बजे फोन कर कहा था कि वह घर आ रहा है, खाना तैयार रखना.

लेकिन कालडिटेल्स से पता चला कि मृतक ने नहीं बल्कि खुद सुनीता ने उसे सवा 8 बजे और साढ़े 8 बजे फोन किए थे. दूसरी बात यह कि सुनीता की कालडिटेल्स में एक ऐसा नंबर था, जिस पर सुनीता की दिन में कई बार घंटों तक बातें होती थीं. घटना वाली रात 21 मई को भी मृतक को फोन करने के अलावा सुनीता की रात साढ़े 7 बजे से ले कर रात 11 बजे तक लगातार बातें हुई थीं.

यह फोन नंबर किस का था, यह जानने के लिए एएसआई सुनील कुमार ने मृतक के भाई और बेटे से जब पूछा तो उन्होंने अनभिज्ञता जाहिर की. बहरहाल, एएसआई सुनील कुमार ने 2

मृतक सुनील (फाइल फोटो)

महिला सिपाहियों को सादे लिबास में सुनीता पर नजर रखने के लिए लगा दिया. साथ ही मुखबिरों को सुनीता की जन्मकुंडली पता लगाने के लिए कहा. इस के अलावा उन्होंने उस फोन नंबर की काल डिटेल्स निकलवाई तो पता चला कि वह नंबर आई ब्लौक निवासी मनदीप सिंह उर्फ दीपा का है.

मनदीप पेशे से आटो चालक था. सन 2018 में वह जालसाजी के केस में जेल भी जा चुका था. मनदीप शादीशुदा था और उस की 3 साल की एक बेटी भी थी. हालांकि उस की शादी 4 साल पहले ही हुई थी, लेकिन उस की पत्नी से नहीं बनती थी. पत्नी ने उस के खिलाफ वूमन सेल में केस दायर कर रखा था.

सुनीता पर नजर रखने वाली महिला और मुखबिरों ने यह जानकारी दी कि सुनीता और मनदीप के बीच नाजायज संबंध हैं. इस बीच फौरैंसिक लैब भेजा

Vikas Bhadauria

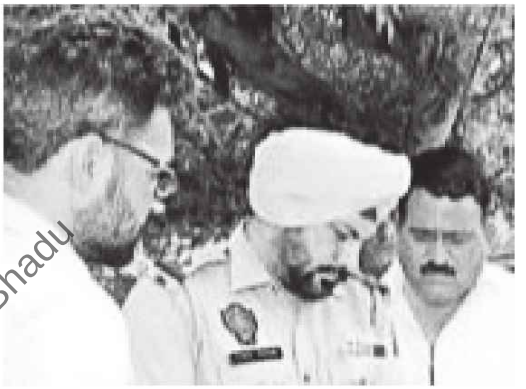

मौके पर जांच करते एएसआई सुनील कुमार

Vikas Bhadu

गया मृतक का फोन ठीक हो कर आ गया, जिस ने इस हत्याकांड को पूरी तरह बेनकाब कर दिया.

एएसआई सुनील कुमार ने उसी दिन सुनीता को हिरासत में ले कर पूछताछ की तो वह अपने आप को निर्दोष बताते हुए पुलिस को गुमराह करने के लिए तरहतरह की कहानियां सुनाने लगी. जब उसे महिला हवलदार सुरजीत कौर के हवाले किया गया तो उस ने पूरा सच उगल दिया.

सुनीता की निशानदेही पर उसी दिन 3 जून को 30 वर्षीय मनदीप सिंह उर्फ दीपा, 18 वर्षीय रमन राजपूत, 23 वर्षीय सन्नी कुमार और 21 वर्षीय प्रकाश को भाई रणधीर सिंह चौक से जेन कार सहित गिरफ्तार कर लिया. पूछताछ में सभी ने अपना अपराध स्वीकार करते हुए बताया कि उन्होंने सुनीता और मनदीप के कहने पर सुनील की हत्या की थी.

पांचों अभियुक्तों को उसी दिन अदालत में पेश कर 3 दिनों के पुलिस रिमांड पर लिया गया. रिमांड के दौरान हुई पूछताछ में सुनील हत्याकांड की जो कहानी सामने आई, वह पति और जवान बच्चों के रहते परपुरुष की बांहों में देहसुख तलाशने वाली एक औरत के मूर्खतापूर्ण कारनामे का नतीजा थी.

सुनील जब धागा फैक्ट्री में अपनी नौकरी पर चला जाता था तो सुनीता घर पर अकेली रह जाती थी. इसी के मद्देनजर उस ने पास ही स्थित प्ले वे स्कूल में चपरासी की नौकरी कर ली. पतिपत्नी के कमाने से घर ठीक से चलने लगा.

इसी प्ले वे स्कूल में मनदीप उर्फ दीपा की बेटी भी पढ़ती थी. पहले मनदीप की पत्नी अपनी बेटी को स्कूल छोड़ने और लेने आया करती थी, पर एक बार मनदीप अपनी बेटी को स्कूल छोड़ने आया तब उस की मुलाकात सुनीता से हुई.

सुनीता को देखते ही वह उस का दीवाना हो गया. हालांकि सुनीता उस से उम्र में 10-11 साल बड़ी थी, पर उस में ऐसी कशिश थी, जो मनदीप के मन भा गई. यह बात करीब 9 महीने पहले की है.

सुनीता से नजदीकियां बढ़ाने के लिए मनदीप रोज बेटी को स्कूल छोड़ने के लिए आने लगा. इधर सुनीता भी मनदीप पर पूरी तरह फिदा हो थी. आग दोनों तरफ बराबर लगी थी. इस का एक कारण यह था कि अपनी उम्र के 40वें पड़ाव पर पहुंचने के बाद और 3 युवा बच्चों की मां होने के बावजूद सुनीता के शरीर में गजब का आकर्षण था.

दिन भर हाड़तोड़ मेहनत करने के बाद पति सुनील जब घर लौटता तो खाना

खाते ही सो जाता था. जबकि उस की बगल में लेटी सुनीता उस से कुछ और ही अपेक्षा करती थी. लेकिन सुनील उस की जरूरत को नहीं समझता था. उसे मनदीप जैसे ही किसी पुरुष की तलाश थी, जो उस की तमन्नाओं को पूरा कर सके.

यही हाल मनदीप का भी था. पत्नी से मनमुटाव होने के कारण वह उसे अपने पास फटकने नहीं देती थी, इसलिए जल्दी ही सुनीता और मनदीप में दोस्ती हो गई, जिसे नाजायज रिश्ते में बदलते देर नहीं लगी थी. पति और बच्चों को स्कूल भेजने के बाद सुनीता स्कूल जाने के बहाने घर से निकलती और मनदीप के साथ घूमतीफिरती. कई महीनों तक दोनों के बीच यह संबंध चलते रहे.

इसी बीच अचानक सुनील को सुनीता के बदले रंगढंग ने चौंका दिया. उस ने अपने बच्चों से इस बारे में पूछा तो उन्होंने बताया कि स्कूल से लौटने के बाद मम्मी बनसंवर कर न जाने कहां जाती हैं और आप के काम से लौटने के कुछ देर पहले वापस लौट आती हैं. सुनील को तो पहले से ही शक था, उस ने सुनीता का पीछा किया और उसे मनदीप के साथ बातें करते पकड़ लिया. यह 2 मई, 2019 की बात है.

मनदीप की बात को ले कर सुनील का सुनीता से खूब झगड़ा हुआ और उस ने सुनीता का स्कूल जाना बंद करवा दिया. यहां तक कि उस ने उस का फोन भी उस से ले लिया.

बाद में सुनीता ने माफी मांग कर भविष्य में ऐसी गलती दोबारा न करने की कसम खाई और स्कूल जाना शुरू कर दिया था. बात करने के लिए मनदीप ने उसे एक नया फोन और सिमकार्ड दे दिया था. वे दोनों फोन पर बातें करते, मिल भी लेते थे. पर अब वे पहले जैसे आजाद नहीं थे.

इस तरह चोरीछिपे मिलने से सुनीता परेशान हो गई. एक दिन सुनीता ने अपने मन की पीड़ा जाहिर करते हुए मनदीप से कहा, ''मनदीप, तुम कैसे मर्द हो, जो एक मरियल से आदमी को भी ठिकाने नहीं लगा सकते. तुम भी जानते हो कि सुनील के जीते जी हमारा मिलना मुश्किल हो गया है.''

मनदीप ने उसे भरोसा दिया कि काम हो जाएगा. फिर दोनों ने मिल कर सुनील की हत्या की योजना बनाई. अब मनदीप के सामने समस्या यह थी कि वह यह काम अकेले नहीं कर सकता था.

नवंबर, 2019 में मनदीप जब जालसाजी के केस में जेल गया था, तब उस की मुलाकात जेल में बंद पंकज राजपूत से हुई थी. पंकज लुधियाना के थाना टिब्बा में दर्ज दफा 307 के केस में बंद था.

दोनों की जेल में मुलाकात हुई और दोस्ती हो गई थी. कुछ दिन बाद मनदीप की जमानत हो गई और वह जेल से बाहर आ गया. बाहर आने के बाद वह बीचबीच में पंकज से जेल में मुलाकात करने जाता रहता था.

सुनील की हत्या की योजना बनाने के बाद उस ने जेल जा कर पंकज को अपनी समस्या के बारे में बताया. पंकज ने उसे अपने 2 साथियों रमन और प्रकाश के बारे में बताया.

उस ने मनदीप के फोन से रमन को फोन कर मनदीप का साथ देने को कह दिया. रमन ने इस काम के लिए 10 हजार रुपए मांगे, जो मनदीप ने दे दिए थे. रमन

Vikas Bhadauria

Vikas Bhadauria

पांचों अभियुक्तों की गिरफ्तारी के बाद प्रैस कौन्फ्रैंस करते पुलिस कमिश्नर सुखचैन सिंह गिल

और प्रकाश ने अपने साथ सन्नी को भी शामिल कर लिया था.

सुनीता ने किराए के हत्यारों को सुनील का पूरा रुटीन बता दिया कि वह कितने बजे काम पर जाता है, कितने बजे किस रास्ते से घर लौटता है, वगैरह.

इन बदमाशों ने तय किया कि सुनील को घर लौटते समय रास्ते में कहीं घेर लिया जाएगा. सुनील की हत्या के लिए 20 मई, 2019 का दिन चुना गया था पर टाइमिंग गलत होने से उस दिन सुनील बच गया.

अगले दिन 21 मई को रात 8 बजे मनदीप सन्नी को अपने साथ ले कर बीआरएस नगर से अपनी जेन कार द्वारा एक धार्मिक स्थल पर पहुंचा. रमन और प्रकाश भी बाइक से वहां पहुंच गए थे. इस के बाद चारों सुनील के मालिक की कोठी के पास मंडराने लगे.

सुनील अपने मालिक की कोठी पर फैक्ट्री की चाबियां देने के बाद अपनी इलैक्ट्रिक साइकिल से घर के निकला तो चीमा चौक के पास चारों ने उसे घेर कर जेन कार में डाल लिया. उस की साइकिल सन्नी ले कर चला गया जो उस ने लेयर वैली में फेंक दी थी.

सुनील को कार में डालने के बाद मनदीप ने उस के सिर पर लोहे की रौड से वार कर उसे घायल कर दिया. फिर सब ने मिल कर उस की खूब पिटाई की. इस के बाद साइकिल की चेन उस के गले में डाल कर उस का गला घोंट दिया.

सुनील की हत्या करने के बाद वे उस की लाश को सिटी सेंटर ले आए और सड़क किनारे सुनसान जगह पर फेंक कर रात 11 बजे तक सड़कों पर घूमते रहे. इस के बाद सभी अपनेअपने घर चले गए. शाम साढ़े 7 बजे से रात के 11 बजे तक सुनीता लगातार फोन द्वारा मनदीप के संपर्क में थी. वह उस से पलपल की खबर ले रही थी.

रिमांड अवधि के दौरान पुलिस ने हत्या में प्रयुक्त चेन भी बरामद कर ली, लेकिन कथा लिखे जाने तक मृतक की साइकिल बरामद नहीं हो सकी.

रिमांड खत्म होने के बाद पुलिस ने सुनील की हत्या के अपराध में उस की पत्नी सुनीता, सुनीता के प्रेमी मनदीप उर्फ दीपा, रमन, प्रकाश और सन्नी को अदालत में पेश किया, जहां से उन्हें जिला जेल भेज दिया गया. ●

—कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित

जुए का जहर

— वेणीशंकर पटेल 'ब्रज'

Vikas Bhadu

अनिल गिरि उर्फ अन्नू 6 भाई थे. उन के पास 40 एकड़ जमीन थी, जिस से गांव में परिवार का अच्छा रुतबा था. लेकिन अनिल को जुआ खेलने की लत थी, जिस की वजह से उस पर लाखों रुपए का कर्ज भी हो गया था. कर्ज उतारने के लिए उस ने साथियों के साथ मिल कर फिरौती के लिए छोटे भाई उत्तम गिरि के बेटे बादल का अपहरण कर लिया...

मध्य प्रदेश के जबलपुर जिले में चरगवां पुलिस थाने के अंतर्गत एक छोटा सा गांव है सगड़ा. इस गांव की आबादी बमुश्किल 700-800 होगी. गांव के अधिकांश लोग खेतीबाड़ी का काम करते हैं. सगड़ा गांव में उत्तम गिरि का 6 भाइयों का परिवार रहता है. उत्तम गिरि और सब से बड़े भाई सतमन गिरि एक साथ रहते हैं. जबकि 4 अन्य भाई घर से कुछ दूरी पर बने मकान में रहते हैं. मूलतः किसानी करने वाले इस परिवार के पास लगभग 40 एकड़ खेती की जमीन है.

8 अप्रैल, 2019 की बात है. उत्तम गिरि की पत्नी ममता परिवार के लिए खाना बना रही थी. ममता का 10 साल का बेटा बादल खेलने की बात कह कर घर से बाहर चला गया था, जबकि 5 साल की बेटी मानवी घर पर ही खेल रही थी.

ममता खाना बना कर रसोई के सारे काम निपटा चुकी थी. तब तक दोपहर के 12 बज गए थे. लेकिन उस का बेटा बादल खेल कर नहीं लौटा था. वह बुदबुदाई, ''खेल में इतना डूब जाता है कि खानेपीने का भी खयाल नहीं रहता.''

उसी समय ममता का पति उत्तम गिरि भी खेत से घर आ गया. जब उसे पता चला कि बादल बाहर खेलने गया है तो उस ने उसे बुलाने के लिए बेटी मानसी को भेजा ताकि वह भी सब के साथ खाना खा ले.

कुछ देर बाद मानसी अकेली ही लौट आई. उस ने बताया कि बादल बाहर नहीं है. यह सुन कर उत्तम गिरि खुद बेटे को खोजने के लिए निकल गया. आसपड़ोस में रहने वाले लोगों ने उत्तम को बताया कि बादल खेलने आया तो था. सुबह साढ़े 10 बजे के आसपास वह मोहल्ले

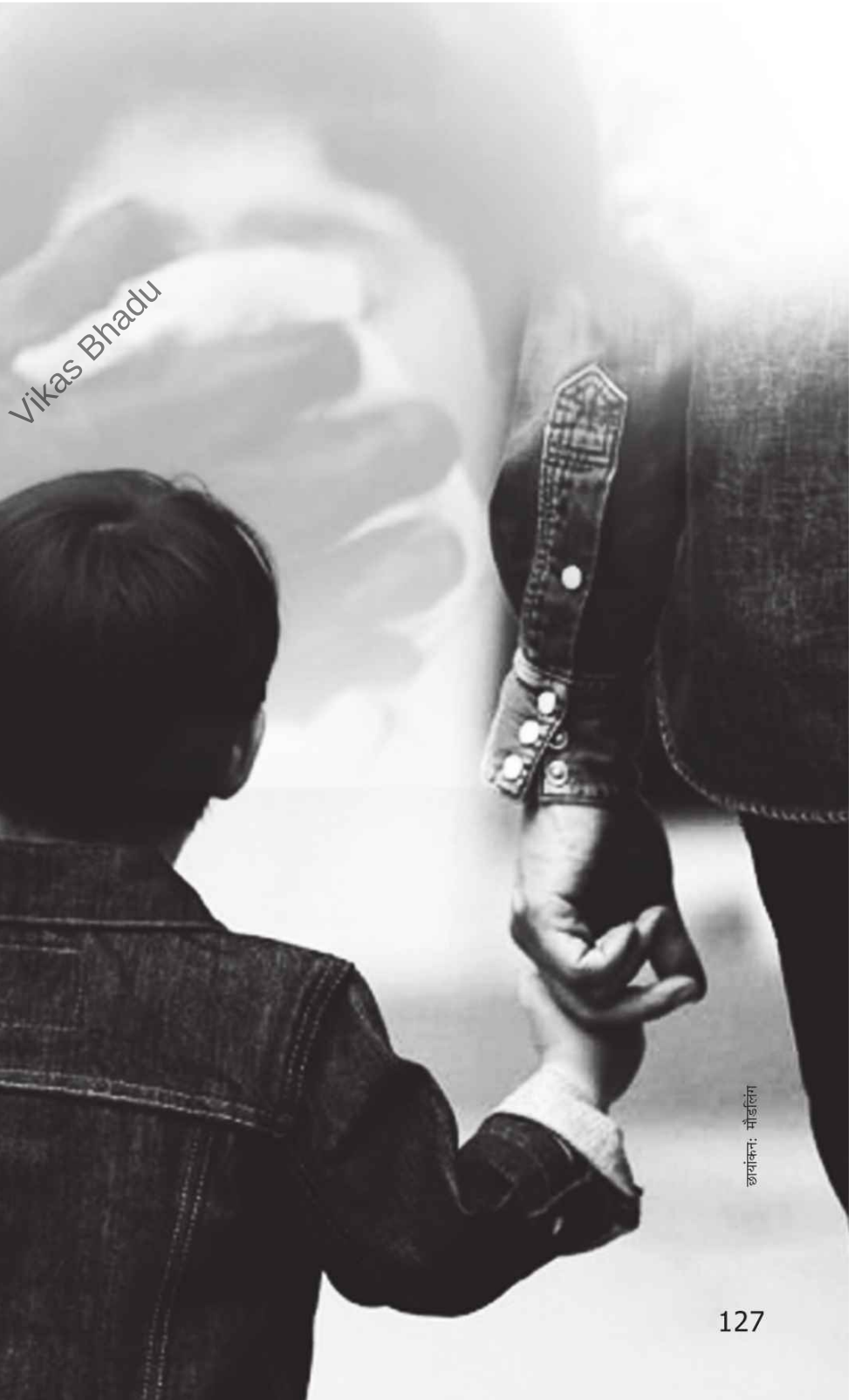

छायांकन: मौडलिंग

में ही साहबलाल के घर के सामने खेल रहा था.

चूंकि साहबलाल का बेटा भी बादल के साथ स्कूल में पढ़ता था, इसलिए दोनों प्राय: रोज ही साथ खेलते रहते थे. उन्होंने साहबलाल के घर जा कर बेटे के बारे में पूछा तो उस के बेटे ने बताया कि आज वह खेलने के लिए घर से निकला ही नहीं है. इस के बाद बादल की मम्मी, पापा के अलावा उस के बड़े पापा (ताऊ) सतमन गिरि की चिंता बढ़ गई.

रामजी के मकान में इस तरह बोरे में मिली थी बादल की लाश

जैसे ही गांव वालों को उत्तम के 10 वर्षीय बेटे बादल के गुम होने की जानकारी मिली तो उत्तम के घर लोगों की भीड़ जुटने लगी. जब शाम तक बादल का पता नहीं चला तो उत्तम गिरि के बड़े भाई सतमन गिरि ने शाम को चरगवां थाने पहुंच कर बादल के अपहरण की रिपोर्ट दर्ज करा दी.

चूंकि फरवरी माह में मध्य प्रदेश के चित्रकूट में 2 बच्चों के अपहरण के बाद हत्या करने की घटना हो चुकी थी, इसलिए थानाप्रभारी ने इस मामले को गंभीरता लिया. उन्होंने इस की सूचना पुलिस कप्तान निमिष अग्रवाल को भी दे दी. उन्होंने थानाप्रभारी को इस मामले में त्वरित काररवाई करने के निर्देश दिए.

एसएसपी के निर्देश पर एसपी (ग्रामीण) रायसिंह नरवरिया थाना चरगवां प्रभारी नितिन कमल के साथ सगड़ा गांव पहुंच गए.

पुलिस ने बादल के मातापिता को भरोसा दिया कि पुलिस बहुत जल्द बादल का पता लगा लेगी. लेकिन अगले दिन सोशल मीडिया और स्थानीय अखबारों में घटना की खबर प्रकाशित होते ही पुलिस की नींद उड़ गई.

एसपी के निर्देश पर पुलिस टीम ने 2 दिन और 2 रात गांव सगड़ा में कैंप कर गांव में घरघर जा कर करीब 100 से अधिक महिलाओं, पुरुषों व बादल के हमउम्र बच्चों से सघन पूछताछ की, लेकिन बादल का कहीं कोई सुराग नहीं मिला.

घटना को ले कर गांव में तरहतरह की चर्चाएं होने लगीं. कोई कहता कि बादल का अपहरण हो गया है तो कोई नवरात्रि में किसी तांत्रिक क्रिया के लिए

Vikas Bhadu

बेटे की हत्या के बाद गम में बेसुध मां ममता और पिता उत्तम गिरि

देवी मां को बलि चढ़ाने की बात कहता. पुलिस किसी से जाती दुश्मनी और अन्य पहलुओं पर भी छानबीन कर रही थी. उसे यह भी शक था कि कहीं किसी ने बादल के साथ कुकर्म कर हत्या न कर दी हो.

10 अप्रैल की रात गांव में पुलिस बल की मौजूदगी में बादल के परिजनों और गांव के प्रमुख लोगों ने रात 2 बजे तक बादल की खोजबीन की, लेकिन उस का कोई अतापता नहीं लग सका. बादल के गायब होने की गुत्थी पुलिस के लिए चुनौती बनी हुई थी. इस बीच एसपी साहब ने बादल की सूचना देने वाले को 25 हजार रुपए का ईनाम देने की घोषणा कर दी.

उधर बादल की मां ममता का रोरो कर बुरा हाल था. किसी अज्ञात आशंका के डर से उस का कलेजा रहरह कर कांप उठता.

गुरुवार 11 अप्रैल, 2019 की सुबह साढ़े 8 बजे के लगभग गांव के कुछ लोगों को पास में बने एक खाली मकान से अजीब सी बदबू आती महसूस हुई. जब उत्तम और गांव के लोग उस मकान के अंदर पहुंचे तो उन्हें एक जर्जर कमरे में प्लास्टिक की बोरी नजर आई. तत्काल बोरी खोल कर देखी गई तो उस के अंदर बादल की लाश मिली. उस के दोनों हाथ और पैर तार से बंधे हुए थे. बौडी गल चुकी थी.

जिस मकान में बादल की लाश मिली, वह मकान रामजी नाम के व्यक्ति का था, जो कुछ साल से पास के गांव कमतिया में रह रहा था. उस का यह घर खाली पड़ा रहता था. रामजी के 3 भाइयों का परिवार गांव में रहता था.

कमरे के अंदर गोबर से लिपाई की गई जगह पर एक कोने में पत्थर पर उकेरी गई देवी की मूर्ति रखी थी. मूर्ति के पास ही त्रिशूल, मोर पंख, बुझे हुए दीपक के साथ 2 नारियल भी थे. घर के आंगन और पिछले दरवाजे तक खून के धब्बे मिले. पिछले दरवाजे में बाहर की ओर से ताला लगा हुआ था, लेकिन रामजी और गांव वालों ने बताया कि पिछले दरवाजे में सिर्फ सांकल लगी रहती थी.

गांव वालों ने आशंका प्रकट की कि शायद लाश को छिपाने वाले बाहर से ताला लगा कर गए होंगे. बादल के गायब होने के बाद से उत्तम गिरि के परिवार के लोग रामजी के इस घर में कई बार बच्चे को ढूंढने पहुंचे थे, लेकिन उस समय वहां कुछ नहीं मिला था.

Vikas Bhadauria

बादल की लाश मिलते ही उस के परिजनों के साथ गांव के लोग आक्रोशित हो गए. इसलिए रामजी के भाइयों के परिवार को गांव वालों ने घेर लिया. सुबह साढ़े 8 बजे रामजी के भतीजे मुकेश ने फोन पर अपने चाचा रामजी को बताया कि उन के घर में बादल की लाश मिली है, जिस के कारण गोस्वामी परिवार के लोग उन सभी को परेशान कर रहे हैं.

यह जानकारी मिलते ही रामजी भी सगड़ा पहुंच गया. उधर गोस्वामी परिवार के साथ गांव के कई युवकों ने गांव की घेराबंदी कर रखी थी. इस बीच किसी ने पुलिस को खबर की तो चरगवां थाने की पुलिस वहां पहुंच गई.

गांव में उस समय तनाव जैसा माहौल था. तनाव की स्थिति को देख एसपी निमिष अग्रवाल, एएसपी (ग्रामीण) रायसिंह नरवरिया के साथ पुलिस के सभी अधिकारी भारी फोर्स ले कर गांव पहुंच गए और एफएसएल टीम ने लाश मिलने वाली जगह का निरीक्षण कर सबूत इकट्ठा किए.

एसपी ने मौके पर मौजूद थानाप्रभारी (चरगवां) नितिन कमल, थानाप्रभारी (ओमती) नीरज वर्मा और थानाप्रभारी (शहपुरा) घनश्याम सिंह मर्सकोले एवं एफएसएल, साइबर सेल, क्राइम ब्रांच के साथ जवानों की टीमें बनाईं और

बादल: घर में ही बैठे ताऊरूपी नाग ने डसा

गांव के एकएक घर की तलाशी लेने के निर्देश दिए. इस तलाशी अभियान के बाद भी हत्यारों के बारे में कोई जानकारी नहीं मिली.

चरगवां थानाप्रभारी नितिन कमल द्वारा की गई जांच एवं पूछताछ में एक बात तो तय मानी जा रही थी कि बादल के अपहरण एवं हत्या में किसी करीबी का हाथ है. विवेचना के दौरान गांव की महिलाओं एवं पुरुषों और बच्चों से लगातार सघन पूछताछ की गई. पूछताछ के आधार पर संदेह की सुई मुकेश श्रीपाल के इर्दगिर्द घूमने लगी.

बादल का शव जिस मकान में मिला, उस के मालिक रामजी के भतीजे मुकेश श्रीपाल के बारबार बयान बदलने से पुलिस को संदेह हुआ. पुलिस ने जब मुकेश के बारे में जानकारी जुटाई तो पता चला कि मुकेश अपने पुराने साथी गुड्डू उर्फ मनोहरलाल तिवारी और अनिल उर्फ अन्नू गोस्वामी के साथ रहता है.

अनिल उर्फ अन्नू गोस्वामी मृतक

Vikas Bhadauria

गांव में तनाव बढ़ने पर तैनात पुलिस बल

बादल का ताऊ यानी उस के पिता का बड़ा भाई था. तीनों जुआ खेलने के आदी थे और उन पर लाखों रुपयों का कर्ज था. मुकेश के साथ रहने वाला गुड्डू तिवारी भेड़ाघाट में हुई एक हत्या का आरोपी भी है.

पुलिस टीम ने जब मुकेश से पूछताछ की तो वह इस मामले में खुद पाकसाफ बताता रहा लेकिन पुलिस की सख्ती पर वह टूट गया. मुकेश ने पुलिस को जो कहानी बताई, वह दिल दहला देने वाली थी. पता चला कि मासूम बादल के अपहरण और हत्या की साजिश में बादल का सगा ताऊ अनिल गोस्वामी उर्फ अन्नू और उस का दोस्त मनोहर तिवारी शामिल थे.

जुए, सट्टे की गलत आदत के चलते लाखों रुपए के कर्ज में डूबे इन दरिंदों ने पैसे के लिए मासूम बादल का कत्ल किया था. मुकेश की निशानदेही पर पुलिस ने अनिल और गुड्डू तिवारी को भी हिरासत में ले कर उन से सघन पूछताछ की.

पुलिस पूछताछ में जो कहानी सामने आई, उस के अनुसार गांव सगड़ा निवासी मुकेश श्रीपाल, गुड्डू उर्फ मनोहरलाल तिवारी और अनिल गिरि को जुआ खेलने और शराब पीने की लत थी. कुछ दिन पहले ही तीनों नरसिंहपुर जिले की सीमा से सटे नगर गोटेगांव में जुआ खेलने गए थे.

वहां बड़ी रकम हारने के कारण तीनों पर लाखों रुपए का कर्ज हो गया था. जब कर्जदारों ने उन्हें धमकाना शुरू किया तो तीनों परेशान रहने लगे. कर्ज से मुक्ति पाने के लिए तीनों लूट, डकैती और अपहरण की योजना बनाने लगे.

तीनों को जब कोई रास्ता नजर नहीं आया तो इस के लिए अनिल उर्फ अन्नू ने सुझाव दिया कि उस के छोटे भाई उत्तम के बेटे बादल का अपहरण कर लिया जाए तो 10-12 लाख की फिरौती मिल सकती है. उत्तम कुछ भी कर के रुपए दे देगा. यह सुन कर मुकेश, गुड्डू और अन्नू ने योजना बनानी शुरू कर

दी. इस के बाद वे तीनों बादल के अकेले घर से निकलने का इंतजार करने लगे.

8 अप्रैल, 2019 की सुबह लगभग पौने 11 बजे गुड्डू, मुकेश और अन्नू गांव में खाली पड़ी दलान पर जुआ खेल रहे थे. तभी उन की नजर अकेले घर जाते हुए बादल पर पड़ी तो उन्होंने जुआ खेलना बंद कर दिया और अनिल गिरि उर्फ अन्नू बादल के पास पहुंच गया. उस ने बड़े प्यार से बादल से घूमने चलने को कहा तो वह ताऊ की बात नहीं टाल सका.

जैसे ही बादल को ले कर अनिल वहां से जाने लगा तो लोगों से नजर चुरा कर मुकेश और गुड्डू तिवारी भी उस के पीछेपीछे चलने लगे. गांव से बाहर निकलते ही तीनों बादल से मीठीमीठी बातें करने लगे. बादल इन तीनों को पहले से जानता था, इसलिए वह बातें करता रहा.

तीनों बड़ी सफाई और चालाकी से उसे गांव के बाहर खेत में बने सूने मकान में ले गए. यह मकान लखन गौड़ का था, जिस में कोई नहीं रहता था. काफी देर तक वहां रहने के बाद जब बादल ने घर जाने की जिद की तो तीनों ने पास में पड़े बिजली के तार से उस के हाथपैर बांध कर मुंह पर कपड़ा बांध दिया ताकि उस की आवाज न निकल सके.

बादल को वहीं छोड़ कर तीनों गांव आ कर यह योजना बनाने लगे कि उत्तम गिरि से कैसे फिरौती मांगी जाए. गांव में जब पुलिस बादल की तलाश करने पहुंची तो बादल के परिजनों और गांव वालों के साथ तीनों लोग भी बादल की खोज के बहाने पुलिस और परिवार की गतिविधियों पर नजर रखने लगे.

पुलिस के साथ बादल के पिता उत्तम और परिजन बादल की तलाश करने लगे. यह देख कर तीनों अपहर्त्ता डर गए. माहौल देख कर उन्हें लगने लगा कि उत्तम से फिरौती की रकम वसूलना अब मुश्किल है.

तीनों अपहर्त्ता एक बार फिर से खेत में बने मकान में आ गए. उन्हें भय लगा कि अगर बादल को छोड़ दिया तो वे पकड़े जाएंगे. क्योंकि बादल तीनों को पहचानता था. हाथपैर और मुंह बंधा बादल हाथपैर पटक कर छूटने का प्रयास कर रहा था कि उसी समय गुड्डू तिवारी ने बादल की गला दबा कर हत्या कर दी.

गुड्डू शातिर अपराधी था. पहले भी वह एक युवक की हत्या कर के शव को नदी में फेंकने के आरोप में जेल की हवा खा चुका था. गुड्डू ने कहा कि अगर बादल की लाश नहीं मिली तो वे सभी बच जाएंगे. इस के बाद तीनों आरोपियों ने बादल के शव को बोरी में भर कर नर्मदा नदी में फेंकने की योजना बनाई.

8 और 9 अप्रैल को पुलिस और गांव वालों ने बादल को सभी जगह तलाशा, जिस से कारण तीनों को लाश ठिकाने लगाने का मौका नहीं मिला. 10 अप्रैल की रात वे तीनों लखन गौड़ के सूने मकान में पहुंचे और बादल के शव को बोरी में भर कर बाइक से नदी में फेंकने के लिए ले जाने लगे.

तीनों गांव के बाहरी रास्ते से जा रहे थे, तभी खेत की ओर से किसी ने बाइक पर तीनों को जाते देख कर टौर्च जलाई, जिसे देख कर तीनों डर गए और शव को ले कर गांव के अंदर सुनसान जगह में घुस गए. इस के बाद शव वाली बोरी को एक मकान में रख कर बैठ गए. इस

Vikas Bhadauria

Vikas Bhadu

बादल की हत्या का खुलासा होने के बाद प्रैस कौन्फ्रैंस करते एसपी निमिष अग्रवाल

दौरान कुछ खून बोरी से इधरउधर टपक गया.

तीनों ने कुछ लोगों को आते देखा तो जल्दबाजी में शव की बोरी को मुकेश श्रीपाल के घर के पास उस के चाचा रामजी के खंडहरनुमा मकान में छिपा दिया. इस के बाद तीनों वहां से भाग कर अपनेअपने घर आ गए.

गांव के चप्पेचप्पे पर पुलिस बल की मौजूदगी और सर्चिंग के कारण मुकेश लाश की बोरी को ठिकाने नहीं लगा पाया और 11 अप्रैल की सुबह साढ़े 8 बजे रामजी के मकान से बदबू आने के कारण गोस्वामी परिवार को प्लास्टिक की बोरी में बादल का शव मिल गया.

जब पुलिस ने गांव में उत्तम गोस्वामी, सतमन गोस्वामी और उस के अन्य भाइयों को अनिल उर्फ अन्नू गोस्वामी के बारे में बताया तो उन्हें यकीन ही नहीं हुआ कि उन का भाई बादल का अपहरण और कत्ल कर सकता है. इस के बाद पुलिस ने सभी भाइयों से एक कमरे में अनिल से बातचीत करने के लिए कहा तो बातचीत में अनिल ने हत्या करना स्वीकार कर लिया, जिसे सुन कर उत्तम और अन्य भाई सहम गए.

उत्तम और उस के अन्य भाइयों को यह तो मालूम था कि अनिल कर्ज में डूबा है, जिसे चुकाने के लिए वे सभी उसे रुपए भी दे चुके थे. साथ ही दूसरी फसल पर रुपए देने का वादा किया था, लेकिन उन्हें यह नहीं पता था कि कर्ज चुकाने के लिए वह उन के कलेजे के टुकड़े का ही कत्ल कर देगा.

अनिल के जुर्म कबूलने के बाद गोस्वामी परिवार के लोग मायूस हो कर कमरे से बाहर निकल आए और पुलिस से उसे गिरफ्तार कर सख्त काररवाई करने को कहा.

जबलपुर जिले के एसपी निमिष अग्रवाल ने 18 अप्रैल, 2019 को प्रैस कौन्फ्रैंस में बताया कि चरगवां थाना अंतर्गत 10 वर्षीय बादल की हुई नृशंस हत्या के हत्यारे मोहनलाल उर्फ गुड्डू तिवारी, मुकेश श्रीपाल, अनिल उर्फ अन्नू गोस्वामी को गिरफ्तार कर उन की निशानदेही पर उन के पहने हुए कपड़े मोटरसाइकिल और घटनास्थल से मिले तार के टुकड़ों को जब्त कर लिया.

पुलिस ने तीनों आरोपियों को भादंवि की धारा 363, 364, 302, 201 के तहत गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया, जहां से उन्हें जेल भेज दिया गया. ●

—कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित

धरती का स्वर्ग कहे जाने वाले कश्मीर को आतंकियों ने जहन्नुम बना दिया है. सरकार से छूट मिलने के बाद सुरक्षा बल तेजी से आतंकवादियों का सफाया कर रहे हैं. लेकिन आतंकी रक्तबीज की तरह साबित हो रहे हैं. एक मरता है तो कई पैदा हो जाते हैं. फिर भी...

जाकिर मूसा : एक रक्तबीज का अंत

— शैलेंद्र कुमार 'शैल'

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पाकिस्तान के आतंक प्रेम के अड़ियल रवैये के बाद सेना और अर्द्धसैनिक बलों को खुली छूट दे दी है कि कश्मीर की खूबसूरत जमीन से दहशतगर्दों का सफाया होने तक न उन्हें चैन से बैठने दें और न सुकून की सांस लेने दें. धरती का स्वर्ग कहे जाने वाले कश्मीर से आतंकवाद को समूल नष्ट किए बिना खुद भी चैन से न बैठें.

यह छूट मिलने के बाद सेना और अर्द्धसैनिक बल आतंकवाद के सफाए के अभियान में जुट गए. इस अभियान के तहत 8 जुलाई, 2016 को पुलवामा जिले के त्राल इलाके में हिज्बुल मुजाहिदीन के एरिया कमांडर बुरहान वानी को मुठभेड़ में मारा गया था. बुरहान वानी के मारे जाने से कश्मीर की धरती पत्थरबाजों के गुस्से से सुलग उठी थी. उन्होंने अपना आक्रोश व्यक्त करते हुए जगहजगह सरकारी संपत्तियों को आग के हवाले कर दिया था. बड़ी मुश्किल से हालात पर काबू पाया गया था.

दुर्दांत आतंकी बुरहान वानी के मारे

Vikas Bhadauria

जाने के कुछ ही दिनों बाद 17 जुलाई, 2016 को उस के अधूरे कामों को पूरा करने के लिए आतंक के आकाओं ने जाकिर मूसा उर्फ जाकिर राशिद इलियास भट मूसा को आतंकी संगठन हिज्बुल मुजाहिदीन का एरिया कमांडर बना दिया गया. वह पुलवामा जिले के नुरपुरा का रहने वाला था.

जाकिर मूसा की ताजपोशी के बाद उस का एक वीडियो सामने आया, वीडियो में जाकिर मूसा भारत के खिलाफ भड़काऊ भाषण दे रहा था और साथ ही धमकी भी. यह वीडियो जारी होने से उस का इरादा साफ हो चुका था कि घाटी में हिंसा की फसल उगाने के लिए वह नफरत की खाद डालेगा.

आतंक के काले साम्राज्य की गद्दी संभाले जाने और वीडियो के जरिए धमकी दिए जाने के बाद उस का नाम सेना ने हिटलिस्ट में लिख दिया था. खूंखार आतंकी बुरहान वानी के साथ मिल कर जाकिर

Vikas Bhadauria

मूसा ने अनगिनत आतंकी घटनाओं को अंजाम दिया था. सेना ने जब उस के जुर्म की कुंडली तैयार की तो ऐसा लगा जैसे उस के पैरों तले से जमीन खिसक गई हो.

खूंखार जाकिर मूसा की अल्प जिंदगी जुर्म के पन्नों से भरी पड़ी थी. जांचपड़ताल के दौरान सीआरपीएफ के 40 जवानों की फिदायीन हत्या में भी जाकिर मूसा का नाम आया था. इसलिए उस के जहरीले फन को कुचलने के लिए सरकार ने उस पर 15 लाख का ईनाम घोषित करने के साथसाथ उसे ए डबल प्लस कैटेगरी की श्रेणी में रखा था.

15 लाख का ईनाम घोषित किए जाने के बाद सेना, एसओजी और सीआरपीएफ ने उस की तलाश तेज कर दी थी. सेना के तलाशी अभियान से डरा जाकिर मूसा भूमिगत हो गया.

उस की तलाश जारी रही. इसी बीच 23 मई, 2019 की शाम करीब 3 बजे जम्मूकश्मीर पुलिस को सूचना मिली कि पुलवामा जिले के त्राल इलाके के दादसरा गांव में मूसा एक दवा बेचने वाले दुकानदार के घर में छिपा हुआ है.

जम्मूकश्मीर पुलिस ने यह सूचना सेना को दे दी. सूचना मिलने के बाद 42 राष्ट्रीय राइफल्स, सीआरपीएफ और जम्मूकश्मीर पुलिस की एसओजी की टीमों ने त्राल के दादसरा गांव को चारों ओर से घेर लिया.

सेना ने औपरेशन के बीच जाकिर मूसा से सरेंडर करने को कहा. इस पर उस की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं आई तो सुरक्षाबलों ने इस के लिए घर के मालिक को उस से बात के लिए अंदर भेजा, लेकिन जाकिर मूसा ने सरेंडर करने से इनकार कर दिया.

सरेंडर कराने की कोशिशों के बीच मूसा घर में छिप कर ही सुरक्षाबलों को निशाना बना कर उन पर फायरिंग करने लगा. अब क्या था? सुरक्षाबलों, एसओजी और सीआरपीएफ की टीम ने भी जवाबी फायरिंग शुरू कर दी.

कई घंटों तक दोनों तरफ से गोलीबारी होती रही. शाम से जब रात हो गई और दोनों तरफ से गोलीबारी होती रही तो एसओजी अधिकारियों को लगा कि रात के अंधेरे का फायदा उठा कर मूसा भाग सकता है. मूसा इसी फिराक में था भी कि रात होते ही वह पुलिस को चकमा दे कर वहां से फरार हो जाएगा.

मूसा की नीयत को सुरक्षाबलों ने भांप लिया था. वह किसी भी कीमत पर उसे वहां से बच कर नहीं जाने देना चाहते थे. लिहाजा सेना और एसओजी के अधिकारियों ने उस घर को बम से उड़ाने का फैसला कर लिया, जिस में जाकिर मूसा छिप कर गोलियां चला रहा था. सेना ने तैयारी की और उस घर को धमाके से उड़ा दिया. घर के साथ ही जाकिर मूसा का भी अंत हो गया.

यह वही इलाका था जहां जुलाई, 2016 में बुरहान वानी सुरक्षाबलों के हाथों मुठभेड़ में ढेर हुआ था. उसी इलाके में खूंखार आतंकवादी जाकिर मूसा का भी खात्मा हुआ. मूसा को कश्मीर घाटी में आतंक का पोस्टर बौय कहा जाता था. कश्मीर में तमाम आतंकियों के जनाजे में मूसा के समर्थन में नारे लगाए जाते थे.

खैर, अगली सुबह 6 बजे सुरक्षाबलों ने ब्लास्ट किए गए घर के मलबे के नीचे दबे शव को निकाला और शव

Vikas Bhadauria

Vikas Bhadu

खालिस्तान लिबरेशन फोर्स के आतंकी बिक्रमजीत सिंह और अवतार सिंह खालसा जिन्होंने गिरफ्तार होने पर जाकिर मूसा से अपने संबंध कबूल किए

की पहचान की. शव जाकिर मूसा का ही था. शव के पास से यूबीजीएल जैसे भारी हथियार भी बरामद किए गए.

खूंखार आतंकी जाकिर मूसा के खात्मे के बाद दक्षिण कश्मीर के शोपियां और पुलवामा जिले में हिंसा भड़क उठी. स्थानीय नागरिक मूसा के मारे जाने पर गुस्से से उबल रहे थे. उपद्रवियों और पत्थरबाजों ने सरकारी बलों और सरकारी संस्थाओं को आग के हवाले झोंक दिया.

जिस से वहां के हालात बेकाबू हो गए. इस पर काबू पाने के लिए जम्मू कश्मीर पुलिस ने शोपियां और पुलवामा में कर्फ्यू लगा दिया और वहां की इंटरनेट सेवा भी बंद करा दी ताकि हालात पर जल्द से जल्द काबू पाया जा सके. तकरीबन 10 दिनों तक घाटी में चले तनाव के बाद जीवन धीरेधीरे सामान्य हुआ.

जाकिर मूसा इंजीनियरिंग का छात्र था. आखिर वह खूंखार आतंकी कैसे बना ? आतंकवाद की सीढ़ियां चढ़ कर कैसे वैश्विक आतंकवादी संगठन अलकायदा का कमांडर बना और घाटी में आतंक फैलाया. इन तमाम सवालों के जवाब पाने के लिए हमें उस के अतीत के काले पन्नों को खंगालना होगा.

25 जुलाई, 1992 को जन्मा जाकिर मूसा उर्फ जाकिर राशिद इलियास भट मूसा मूलरूप से पुलवामा जिले के त्राल इलाके के नूरपुरा गांव का रहने वाला था. मूसा के पिता अब्दुल राशिद भट सिंचाई विभाग में नौकरी करते थे. अब्दुल राशिद भट के पास किसी चीज की कमी नहीं थी.

उन के 2 बेटे शाकिर मूसा भट और जाकिर मूसा के अलावा एक बेटी थी. अब्दुल का बड़ा बेटा शाकिर, श्रीनगर में डाक्टर है, जबकि बेटी जम्मूकश्मीर बैंक में कार्यरत है.

जाकिर मूसा की शुरुआती पढ़ाई गांव के नूर पब्लिक स्कूल में हुई. उस ने 66 प्रतिशत अंक प्राप्त कर के 10वीं की परीक्षा पास थी. उस के बाद उस का एडमिशन नूरपुर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में हुआ. 12वीं पास करने के बाद उस ने इंजीनियरिंग क्षेत्र में जाने का फैसला किया.

सन 2003 में जाकिर मूसा ने चंडीगढ़ में रामदेव जिंदल इंजीनियरिंग

कालेज से सिविल इंजीनियरिंग करने के लिए दाखिला लिया, पर वह पहले सेमेस्टर में ही फेल हो गया. उस का मन पढ़ाई में नहीं लगा तो वह अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ कर वापस अपने गांव नूरपुरा लौट आया. कश्मीर घाटी में सक्रिय आतंकी संगठन हिज्बुल मुजाहिदीन के आका यूसुफ शाह सलाहुद्दीन ने नवयुवकों को बरगलाने और जन्नत का रास्ता दिखाने के लिए तमाम शगूफे छोड़ रखे थे.

Vikas Bhadu

यूसुफ शाह सैयद सलाहुद्दीन की खुराफाती बातों से जाकिर मूसा इतना प्रभावित हुआ कि वह भविष्य की चिंता छोड़ कर आतंकी संगठन हिज्बुल मुजाहिदीन में शामिल हो गया और आजादी के नाम पर कलम छोड़ हाथों में खतरनाक हथियार थाम लिए.

उस ने यह भी नहीं सोचा कि उस के पीछे परिवार के 4 और भी सदस्य हैं, उन का क्या होगा? संगठन में शामिल होने के बाद मूसा ने कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा. जिन दिनों मूसा ने हिज्बुल मुजाहिदीन की सदस्यता ग्रहण की थी, उन दिनों घाटी में बुरहान वानी संगठन का एरिया कमांडर था.

बुरहान वानी हिज्बुल मुजाहिदीन का सब से ताकतवर कमांडर था, जिस पर कश्मीर के युवाओं को आतंकवादी बनाने की जिम्मेदारी थी. एरिया कमांडर बुरहान वानी ने ही जाकिर मूसा को हिज्बुल की सदस्यता दिलाई थी. उसे आतंकी संगठन में आरिफ और आदिल नामक 2 आतंकी कमांडरों ने भरती किया था.

हिज्बुल मुजाहिदीन में जाते ही जाकिर मूसा ने भविष्य के सुनहरे सपनों को ताख पर रखते हुए आग उगलने वाले खतरनाक खिलौनों से दोस्ती कर ली. जाकिर मूसा जितना स्मार्ट था उस से कहीं बदसूरत उस की सोच थी. बुरहान वानी के साथ रहतेरहते वह भी सुरक्षाबलों और पुलिसकर्मियों से नफरत करने लगा था. बुरहान वानी का सुरक्षाबलों और पुलिसकर्मियों से नफरत करने के पीछे एक तर्क था.

तर्क यह था कि कुछ सालों पहले उस के भाई को पुलिस वालों ने हिरासत में ले कर बड़ी बेरहमी से पीटा था. पुलिस से बदला लेने के लिए ही बुरहान ने कलम छोड़ कर हथियार उठा लिए थे और आतंक की राह पर चल निकला था. जबकि जाकिर मूसा की सोच बुरहान वानी की सोच से कहीं ज्यादा आगे थी, कश्मीर को ले कर उस के दिमाग में कुछ और ही चल रहा था.

> पुलिस कमिश्नर गुरप्रीत सिंह भुल्लर ने प्रेस कौन्फ्रैंस करते हुए पत्रकारों को बताया कि 15 सितंबर को मकसूदां पुलिस थाने में हुए सीरियल बम धमाके कश्मीर के खूंखार आतंकी जाकिर मूसा ने करवाए थे.

खैर, बुरहान वानी कश्मीर घाटी में आतंक का पर्याय बन चुका था. सरकार ने उसे पकड़ने के लिए 10 लाख रुपए का ईनाम भी घोषित कर दिया था. 8 जुलाई, 2016 को आतंक का पर्याय बन चुका बुरहान वानी अपने 2 साथियों सरताज और मासूम अहमद के साथ मुठभेड़ में मार गिराया गया.

उस के मरते ही जाकिर मूसा को

Vikas Bhadu

मकसूदां थाने में हुए सीरियल बम ब्लास्ट मामले की जांच करने वाली पुलिस टीम

रातोंरात घाटी में बुरहान वानी का उत्तराधिकारी घोषित कर के उसे एरिया कमांडर बना दिया गया. उस के पोस्टर जम्मूकश्मीर के शहरी इलाकों से ले कर गांव की गलियों तक चिपका दिए गए.

इस से पहले मई, 2017 में जाकिर मूसा का एक वीडियो सामने आया था. जिस में उस ने कश्मीर की स्वतंत्रता ही नहीं वरन इसलामिक शरियत के मुताबिक खलीफा राज्य स्थापित करने की बात कही थी. अपने वीडियो संदेश में मूसा ने कहा था कि कश्मीर उस के लिए कोई फ्रीडम स्ट्रगल नहीं, बल्कि इसलामिक स्ट्रगल है. उस ने उन अलगावादियों, नेताओं को मारने की धमकी दी थी, जो कश्मीर को एक राजनीतिक मुद्दा मानते हैं.

इस वीडियो के जारी होने के बाद हिज्बुल मुखिया सैयद सलाहुद्दीन ने जाकिर मूसा से अपने संबंध खत्म कर लिए. हिजबुल से नाता टूटने के बाद मूसा ने अलकायदा का दामन थाम लिया. इस के बाद जाकिर मूसा को अंसार-उल-गजवा-ए-हिंद का कमांडर बना दिया गया. फिर तो उस ने कई आतंकी घटनाओं को अंजाम दे कर सुरक्षाबलों और जम्मू कश्मीर पुलिस की नाक में दम कर दिया था.

बात 2018 की है. सुरक्षा बलों ने जम्मू कश्मीर के नूरपुरा के अलावा दक्षिण कश्मीर में पहली पोरा, शोपियां और उत्तरी कश्मीर के बांदीपोर में आतंकियों को जिंदा अथवा मुर्दा पकड़ने के लिए औपरेशन चलाया था. सुरक्षाबलों को सूचना मिली थी कि खूंखार आतंकी जाकिर मूसा 2 अन्य आतंकियों के साथ इस क्षेत्र में छिपा है. इन में एक स्थानीय कमांडर साहेल मोहम्मद अखून भी था, जो स्थानीय स्तर पर मूसा की मदद करता था.

मूसा और उस के साथियों को पकड़ने के लिए सेना और अर्द्धसैनिक बलों ने मोर्चा संभाल कर इलाके को खाली करा लिया. सुरक्षाबलों ने औपरेशन शुरू करते हुए जैसे ही मूसा के गांव नूरपुरा का घेराव किया, वैसे ही सुरक्षाबलों पर प्रदर्शनकारियों ने पथराव शुरू कर दिया. पत्थरबाजों द्वारा 2 जगहों पर सेना पर पत्थर फेंक कर उसे रोक लिया गया था.

हालात को काबू में करने के लिए सुरक्षाकर्मियों को आंसू गैस के गोले दागने पड़े. काफी देर तक टकराव की

स्थिति बनी रही. इसी दौरान मौका पा कर मूसा वहां से फरार हो गया. मूसा के मौके से फरार होने के कुछ ही देर बाद पत्थरबाज शांत हो गए.

स्थानीय प्रदर्शनकारियों ने मूसा को भगाने में मदद के लिए पथराव का सहारा लिया था. वह सुरक्षाबलों के हाथों आतेआते फिसल गया. इस के बाद तो वह और खूंखार हो गया. जिस की धमक पंजाब तक पहुंची थी.

कश्मीर के अलावा पंजाब तक आतंक का पर्याय बन चुका आतंकी मूसा इन दोनों राज्यों की पुलिस के अलावा राष्ट्रीय जांच एजेंसी एनआईए की लिस्ट में भी वांटेड हो गया.

कुछ समय पहले ही पंजाब के अमृतसर में इस के सक्रिय होने की खबर आई थी. जिस के बाद इस की तलाश में खुफिया एजेंसियों की नींद हराम हो गई थी. यह भी खबर सामने आई थी कि पंजाब में आतंक फैलाने के लिए खालिस्तानी आतंकियों के साथ जाकिर मूसा ने हाथ मिला लिया है.

15 सितंबर, 2018 को जालंधर के मकसूदां थाने की घटना ने पंजाब को हिला कर रख दिया था. हुआ यह था कि पंजाब के डीजीपी सुरेश अरोरा शहर में मौजूद थे. रात 8 बजे के करीब जिले के मकसूदां थाने में मीटिंग चल रही थी. इंसपेक्टर रमन कुमार सहित तमाम पुलिसकर्मी थाने में मौजूद थे.

इसी बीच वहां अचानक एकएक कर के 4 धमाके हुए. पहला धमाका थानाप्रभारी रमन कुमार के कमरे के बाहर, दूसरा धमाका हवालात के बाहर और तीसरा तथा चौथा गेट के बाहर हुआ था. इन धमाकों में थाने का एक पुलिसकर्मी बुरी तरह जख्मी हो गया था और थाने में मौजूद इंसपेक्टर रमन कुमार की आंख पर ब्लास्ट से शीशा लग गया था.

जांचपड़ताल में पंजाब पुलिस ने मकसूदां थाने में हुए सीरियल ब्लास्ट की गुत्थी सुलझा ली थी. पुलिस ने 2 महीने बाद 4 नवंबर, 2018 को 2 कश्मीरी आतंकियों शाहिद कयूम (22 साल) को कश्मीर के अवंतीपुरा और फाजिल बशीर (23 साल) को पंजाब के जालंधर से गिरफ्तार कर लिया.

इन से की गई पूछताछ में 2 और आतंकियों मीर रऊफ अहमद उर्फ सैफ और उमर रमजान उर्फ गाजी के नाम सामने आए. चारों आतंकी कश्मीर के पुलवामा के रहने वाले थे. चारों में से 2 शाहिद कयूम और फाजिल बशीर, सेंट सोल्जर कालेज, जालंधर से सिविल इंजीनियरिंग कर रहे थे. वे 7वें सेमेस्टर के विद्यार्थी थे.

जांचपड़ताल में कई चौंकाने वाली बातें सामने आईं. पुलिस कमिश्नर गुरप्रीत सिंह भुल्लर ने प्रैस कौन्फ्रैंस करते हुए पत्रकारों को बताया कि 15 सितंबर को मकसूदां थाने में हुए सीरियल बम धमाकों में आतंकवादियों का हाथ था.

इस ब्लास्ट को कश्मीर के खूंखार आतंकी जाकिर मूसा ने करवाया था. जाकिर मूसा ने ही चारों को अंसार-उल-गजवा-ए-हिंद संगठन से जोड़ा था. नूरपुरा में उन्हें खुद आतंकी प्रशिक्षण दे कर हमले के लिए तैयार किया था.

सीरियल ब्लास्ट में आतंकी जाकिर मूसा का नाम सामने आते ही खुफिया जांच एजेंसियों के माथे पर पसीना आ गया था. जांच एजेंसियों ने जाकिर की धरपकड़ तेज कर दी थी लेकिन

Vikas Bhadauria

सुरक्षाबल उसे पकड़ना तो दूर की बात उस की परछाई तक भी नहीं छू पा रहे थे. राष्ट्रीय जांच एजेंसी हाथ धो कर उस के पीछे पड़ गई थी.

जालंधर के मकसूदां थाना सीरियल ब्लास्ट को हुए अभी 2 महीने भी नहीं हुए थे कि 18 नवंबर, 2018 को अमृतसर के निरंकारी सत्संग भवन पर आतंकी हमला हो गया. इस हमले में 3 लोगों की मौत हो गई थी और 23 लोग घायल हो गए थे. उस के बाद तो पंजाब पुलिस ने रातदिन एक कर दिया.

घाटी में पत्थरबाजों का सामना करते सुरक्षाबल

पुलिस ने सत्संग भवन में हुए हमले में धारीवाल निवासी बिक्रमजीत सिंह और चक्क मिशरी खां निवासी अवतार सिंह खालसा को गिरफ्तार कर लिया. दोनों खालिस्तान लिबरेशन फोर्स के आतंकी थे, जिन के तार विदेशों से जुड़े हुए थे. अब तक की जांच में सामने आया कि उन्हें आतंकी गतिविधियों के लिए 15 लाख की फंडिंग की जा चुकी थी.

पुलिस द्वारा गिरफ्तार किए गए दोनों आतंकियों विक्रमजीत और अवतार को पंजाब की खुफिया एजेंसी स्टेट स्पैशल औपरेशन सैल को सौंप दिया गया था. खुफिया एजेंसी के पास पुलिस रिमांड पर आए दोनों आतंकियों से गहन पूछताछ चलती रही.

पता चला कि आतंकी बिक्रमजीत सिंह और अवतार सिंह खालसा के तार जम्मूकश्मीर के आतंकियों से जुड़े हैं. जांचपड़ताल में पुलिस के हाथों कुछ ऐसे सबूत लगे थे जिस से पता चला कि पंजाब में मौजूद जम्मूकश्मीर का कुख्यात आतंकी जाकिर मूसा बिक्रमजीत सिंह और अवतार सिंह खालसा के संपर्क में था.

खुफिया एजेंसियों की पड़ताल के दौरान यह बात भी खुल कर सामने आई थी कि अवतार को हथियार और ग्रेनेड जाकिर मूसा ने ही उपलब्ध करवाए थे. यह हैंड ग्रेनेड पाकिस्तान की असलहा फैक्ट्री में बने हुए थे. ये वही हैंडग्रेनेड थे जो जालंधर के थाना मकसूदां में हमले के लिए प्रयोग किए थे.

निरंकारी सत्संग भवन कांड के बाद जांच के दौरान पता चला कि कश्मीर का खूंखार आतंकी जाकिर मूसा एनआईए और सुरक्षाबलों के टारगेट पर चढ़ गया था. वह ए$^{++}$ कैटेगरी का आतंकी बन गया था. जिस के ऊपर 15 लाख रुपए का ईनाम रखा गया था.

आतंकी हमलों के बाद से उस का जहरीला फन बारबार डंसने के लिए उठ रहा था. बेहद खूंखार हो चुका जाकिर मूसा आखिर 23 मई, 2019 को सुरक्षाबलों की टीम के हाथों पुलवामा जिले के त्राल इलाके के दादसरा गांव में मारा गया. इसी के साथ उस के आतंक का किस्सा खत्म हो गया. ●

—कथा समाचारपत्रों एवं सोशल मीडिया पर आधारित

Vikas Bhadauria

नशे की लत बरबादी की जड़ है. नशा इंसान के शरीर को अंदर ही अंदर खोखला करता है तो उस का व्यवहार उस के रिश्तों को तो तोड़ता ही है, सामाजिक जीवन को भी बरबाद कर देता है. रामकिशुन के साथ भी...

Vikas Bhadauria

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ से 25 किलोमीटर दूर है तहसील मोहनलालगंज, इसी तहसील के कोराना गांव में 70 साल के बाबूलाल रावत अपने इकलौते बेटे रामकिशुन उर्फ कालिया, उस की पत्नी रेखा और बच्चों के साथ रहते थे. बाबूलाल खेतीकिसानी कर के परिवार का गुजारा करते थे. इस

⇩ बाबूलाल

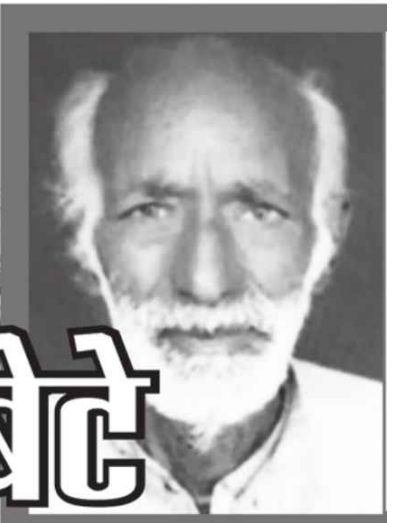

नशेड़ी बेटे की करतूत

— शैलेंद्र सिंह

रात में जब वह ठेके से शराब पी कर चलता तो गांव में घुसते ही गाली देनी शुरू कर देता था. चीखचीख कर गाली देने से गांव वालों को उस के घर लौटने का पता चल जाता था. घर पहुंचते ही वह घर में मारपीट करने लगता था, कभी पिता से कभी पत्नी से तो कभी बेटे के साथ.

घटनास्थल की जरूरी कारवाई कर के पुलिस ने लाश पोस्टमार्टम के लिए भिजवा दी. पुलिस ने रामकरन की सूचना पर उस के पिता रामकिशुन के खिलाफ गैरइरादतन हत्या का मुकदमा दर्ज कर लिया.

VikasBhadauria

जून, 2019 के पहले सप्ताह की बात है. रामकिशुन नशे में धुत हो कर घर आया. पत्नी रेखा ने उसे समझाना शुरू किया, ''इतनी रात गए शराब पी कर घर आते हो, ऊपर से लड़ाईझगड़ा करते हो, यह कोई अच्छी बात है क्या. जानते हो, तुम्हारी वजह से गांव वाले कितना परेशान होते हैं.''

रामकिशुन भी लड़खड़ाई आवाज में बोला, ''मैं शराब अपने पैसे से पीता हूं. इस से गांव वालों का क्या लेनादेना. किसी के कहने का मेरे ऊपर कोई फर्क नहीं पड़ने वाला. तुम भी कान खोल कर सुन लो, मुझे ज्यादा समझाने की कोशिश मत करो. बस अपना काम करो.''

रेखा भी मानने वाली नहीं थी. उसे पता था कि वह अभी नशे में है. ऐसी हालत में समझाने का उस पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा क्योंकि सुबह नशा उतरने पर वह सब भूल जाएगा. इस से बेहतर तो यह है कि इस से कल दिन में बात की जाए.

अगले दिन रेखा ने घर वालों के सामने पति रामकिशुन को समझाना शुरू किया. शुरुआत में तो वह इधरउधर की बातें कर के खुद को बचने की कोशिश करता रहा, इस के बाद भी जब रेखा ने रात के नशे की बात को ले कर बवाल जारी रखा तो रामकिशुन झगड़ा करने लगा. रेखा भी चुप रहने वालों में नहीं थी. उस ने झगड़े के बीच ही अपना फैसला सुना दिया, ''अगर तुम नहीं सुधर सकते तो अपना घर संभालो, मैं अपने मायके चली जाऊंगी.''

रेखा की धमकी ने 1-2 दिन तो असर दिखाया, इस के बाद रामकिशुन फिर से नशा कर के आने लगा. अब पानी सिर से ऊपर जा रह था, रेखा ने सोचा कि समझौता करने से कोई लाभ नहीं. उसे घर छोड़ कर चले जाना चाहिए. इस के बाद रेखा पति और बेटे को छोड़ कर अपने मायके चली गई.

रामकिशुन नशे का आदी था. पत्नी के घर छोड़ कर जाने का उस के ऊपर कोई असर नहीं पड़ा बल्कि पत्नी के जाने के बाद तो वह और भी अधिक आजाद हो गया. वह देर रात तो वापस आता ही, अब वह दिन में भी नशा करने लगा था.

नशे में वह घर में सभी से मारपिटाई करता था. उस की पत्नी रेखा 15 दिन बीत जाने के बाद भी घर वापस नहीं आई थी. ऐसे में घर की जिम्मेदारी भी रामकिशुन के ऊपर आ गई थी. जिस से वह और भी अधिक चिड़चिड़ा हो गया था. 18 जून, 2019 की शाम 5 बजे रामकिशुन नशे में धुत हो कर घर आया.

गांव के तमाम लोग नशा करने के आदी हो गए थे.

गांव के लोगों की संगत का असर रामकिशुन पर भी हुआ. वह भी शराब के अलावा दूसरी तरह के नशीले पदार्थों का सेवन करने लगा. लंबे समय तक नशे में रहने का प्रभाव रामकिशुन के शरीर और सोच पर भी पड़ रहा था. वह पहले से अधिक गुस्से में रहने लगा था.

चिड़चिड़े स्वभाव की वजह से वह बातबात पर मारपीट करने लगता. केवल बाहर के लोगों के साथ ही नहीं बल्कि घर में भी वह पत्नी और बच्चों से झगड़ कर मारपीट करता था. उस की नशे की लत से घर के ही नहीं, मोहल्ले के लोग भी परेशान रहते थे.

Vikas Bhadauria

रामकिशुन ⇩

रामकिशुन द्वारा अपने पिता बाबूलाल की हत्या करने के बाद उस के घर पर जांच करती पुलिस

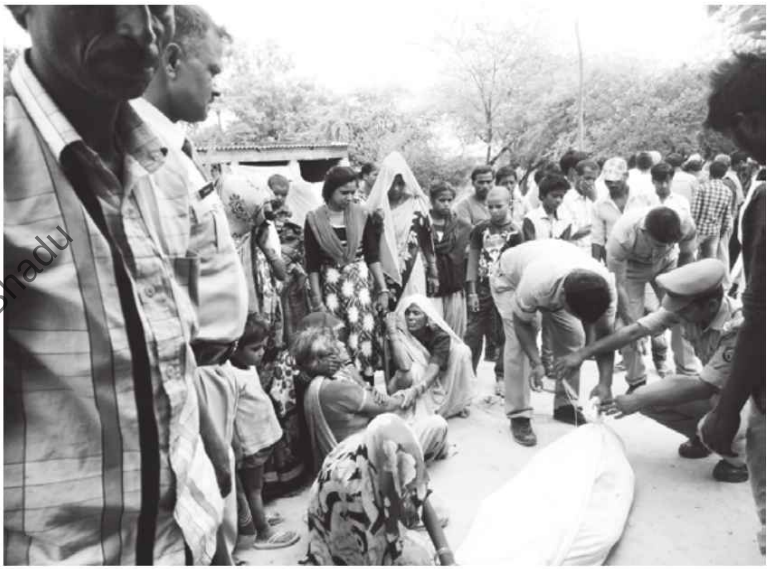

बाबूलाल की लाश का पंचनामा करती पुलिस

सुबह वह अपने बेटे रामकरन को घर के कुछ काम करने के लिए कह कर गया था, वह काम पूरे नहीं हुए तो गुस्से में आ कर रामकिशुन ने बेटे रामकरन की पिटाई शुरू कर दी.

अपने पोते की पिटाई होते देख रामकिशुन के पिता बाबूलाल गुस्से में आ गए. उन्हें नशा करने की वजह से बेटे पर गुस्सा तो पहले से था. अब यह गुस्सा और भी अधिक बढ़ गया था.

वह बोले, ''पत्नी घर छोड़ कर चली गई, इस के बाद भी तुम्हें समझ नहीं आया कि शराब छोड़ दो. ध्यान रखो, यदि नशा करना बंद नहीं किया तो एकएक कर के सारा परिवार तुम्हें छोड़ देगा. बेटे को पीटते हुए तुम्हें शर्म नहीं आ रही.''

रामकिशुन ने पिता की बात को दरकिनार कर के बेटे की पिटाई जारी रखी. वह बोला, ''जब मैं इसे समझा कर गया था तो इस ने काम क्यों नहीं किया? इस की मां घर छोड़ कर चली गई है तो बदले में इसे ही काम करना होगा.''

बाबूलाल अपने पोते को बचाने के लिए आए तो वह बोला, ''देखो, यह मामला हमारे बापबेटे के बीच का है. तुम बीच में मत बोलो.'' यह कह कर उस ने पिता को झगड़े से दूर रहने को कहा.

बाबूलाल के हाथ में कुल्हाड़ी थी. वह जंगल से लकड़ी काट कर वापस आ रहे थे. पोते की पिटाई का विरोध करते और उसे बचाने के प्रयास में कुल्हाड़ी रामकिशुन को लग गई. इस से उस की आंखों के पास से खून निकलने लगा. रामकिशुन को इस बात की गलतफहमी हो गई कि पिता ने उस पर कुल्हाड़ी से हमला किया है. आंख के पास से खून बहता देख कर वह पिता पर आगबबूला हो गया.

Vikas Bhadu

रामकिशुन बेटे को पीटना छोड़ कर पिता बाबूलाल की तरफ बढ़ गया. उस ने पिता के हाथ से कुल्हाड़ी ले कर फेंक दी और डंडे से पिता की पिटाई शुरू कर दी. पिटाई में बाबूलाल का सिर फूट गया पर इस बात का खयाल रामकिशुन को नहीं आया. बेतहाशा पिटाई से बाबूलाल की हालत खराब हो गई. रामकिशुन उन्हें मरणासन्न अवस्था में छोड़ कर भाग निकला.

इंसपेक्टर
जी.डी. शुक्ला

बाबूलाल की खराब हालत देख कर पोता रामकरन बाबा को इलाज के लिए सिसेंडी कस्बे के एक निजी अस्पताल ले गया, जहां डाक्टरों ने बाबूलाल की खराब हालत और पुलिस केस देख कर जवाब दे दिया. वहां से निराश हो कर रामकरन बाबा को ले कर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, मोहनलालगंज ले गया.

वहां डाक्टरों ने बाबूलाल की गंभीर हालत देखते हुए उन्हें लखनऊ के ट्रामा सेंटर रेफर कर दिया. ट्रामा सेंटर के डाक्टरों ने बाबूलाल को एडमिट कर इलाज शुरू कर दिया. बाबा के इलाज में पैसा खर्च होने लगा. रामकरन के पास जो पैसे थे वह जल्दी ही खत्म हो गए.

रामकरन ने पैसों के इंतजाम के लिए प्रयास किए, पर कोई मदद करने वाला नहीं था. लोगों ने समझाया कि पैसे नहीं हैं तो अब बाबूलाल को यहां रखना ठीक नहीं है. अच्छा होगा कि घर पर ही रखा जाए. वहीं इन की सेवा की जाए.

इलाज का कोई रास्ता न देख कर रामकरन ने डाक्टरों से कहा कि उस के पास पैसे खत्म हो चुके हैं ऐसे में हम बाबा को अपने गांव वापस ले जाना चाहते हैं. डाक्टरों से मिन्नतें कर के रामकरन अपने बाबा को अस्पताल से डिस्चार्ज करा कर घर ले आया. उसी दिन देर रात बाबूलाल ने अपने घर पर दम तोड़ दिया.

बाबूलाल की मौत के बाद सुबह को रामकरन ने पूरे मामले की सूचना मोहनलालगंज पुलिस को दे दी तो इंसपेक्टर जी.डी. शुक्ला बाबूलाल के घर पहुंच गए.

जरूरी काररवाई कर के पुलिस ने लाश पोस्टमार्टम के लिए भिजवा दी. पुलिस ने रामकरन की सूचना पर उस के पिता रामकिशुन के खिलाफ गैरइरादतन हत्या का मुकदमा दर्ज कर के उस की पड़ताल शुरू कर दी. इंसपेक्टर जी.डी. शुक्ला ने एक पुलिस टीम का गठन कर के रामकिशुन की तलाश शुरू कर दी.

इसी बीच पुलिस को पता चला कि रामकिशुन गांव के बाहर छिपा हुआ है, पुलिस ने पिता बाबूलाल की हत्या के आरोप में रामकिशुन को गांव के बाहर से गिरफ्तार कर लिया. उस से पूछताछ करने के बाद पुलिस ने उसे जेल भेज दिया. अगर रामकिशुन नशे का आदी नहीं होता तो वह पिता की हत्या नहीं करता और न ही उसे जेल जाना पड़ता. नशे की आदत ने पूरे परिवार को तबाह कर दिया. ●

VikasBharati

Da' ZEAGRA
POWER
FOR MEN
केवल पुरुषों के लिए
Da' ZEAGRA
ZEE LABORATORIES LTD
Vikas Bhadu

सौंदर्य व आत्मविश्वास
Brexelant
Breast Cream, Powder & Capsules
विकास एवं सुडौल